दीपावली साधना विशेषांक
अक्टूबर-2022
मूल्य-40/-
वर्ष 13
अंक 1
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
सर्वोन्नति प्रयोग
धन्वन्तरी साधना
अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग
मृगाक्षी अप्सरा प्रयोग
दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग

**कृपया ध्यान दें**

- 1. यदि आप साधना सामग्री मंगवाना चाहते हैं।
- 2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
- 3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप जोधपुर कार्यालय के फोन नम्बरों पर सम्पर्क करें

साधकों को सभी सामग्री स्पीड पोस्ट से भेजी जाती है। अतः साधना सामग्री मंगाने के लिए सामग्री की न्यौछावर राशि के साथ डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें तथा जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण, अपना पूरा पता पिनकोड एवं फोन नम्बर के साथ हमें उपरोक्त नम्बर पर वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे, जिससे आपको साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त हो सकेगी।

8890543002

**बैंक खाते का विवरण**

खाते का नाम : नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड : SBIN0000659
खाता नम्बर : 31469672061

## मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

**1 वर्ष सदस्यता 405/-** — शिव यंत्र एवं माला — 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

**1 वर्ष सदस्यता 405/-** — लक्ष्मी यंत्र एवं माला — 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

# आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग हटाने में सहायक : फेत्कारिणी प्रयोग

जीवन की समस्त बाधाओं पर विजय प्राप्ति हेतु : महालक्ष्मी गणपति पू.वि.

सर्वमनोकामना पूर्ति में सहायक : सर्वोन्नति प्रयोग

### सद्गुरुदेव



### स्तम्भ



### साधनाएँ



### ENGLISH



### विशेष



### दीपावली



### योग



### आयुर्वेद



प्रेरक संस्थापक
**डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली**
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
**पूजनीया माताजी**
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
**श्री अरविन्द श्रीमाली**

सह-सम्पादक
**राजेश कुमार गुप्ता**
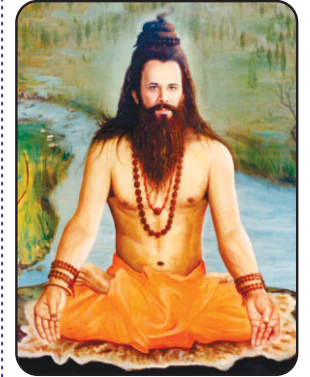
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
**श्री अरविन्द श्रीमाली**
द्वारा
नारायण प्रिण्टर्स
नोएडा
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : **http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org** E-mail : **nmsv@siddhashram.me**

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

## प्रार्थना

*श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यां बहोरात्रे पार्श्वे*
*नक्षत्राणि रूप मश्विनौ व्याप्त्तम्।*

हे भगवती लक्ष्मी! आप 'श्री' देने वाली, समृद्धि, सुख और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हैं, आप मेरे घर में आकर स्थायी रूप से निवास करें। मैं आपसे ऐसी ही प्रार्थना करता हूँ।

# ज्ञान चक्षु

एक अन्धा भिखारी भीख माँगा करता था, जो पैसे उसे मिल जाते उसी से अपनी गुजर-बसर करता। एक दिन एक धनी सज्जन व्यक्ति उधर से निकला। उसे उस अन्धे भीख माँगने वाले पर बहुत दया आई और वह दस रुपये का नोट उसके हाथ पर रखकर आगे चला गया।

उस भिखारी ने कागज के नोट को टटोल कर देखा और समझा कि किसी ने ठिठोली की है और नोट को खिन्नमन से जमीन पर फेंक दिया क्योंकि उसने उसे कागज का टुकड़ा समझा, उसे उसकी पहचान तो थी नहीं। उसी समय एक सज्जन पुरुष ने वह नोट उठाकर उस अन्धे व्यक्ति को दिया और बताया कि यह तो दस रुपये का नोट है तब वह प्रसन्न हुआ और उससे अपनी आवश्यकताएँ पूरी कीं।

ज्ञान चक्षुओं के अभाव में हम भी परमात्मा द्वारा प्रदत्त अपार सम्पत्ति को देख और समझ नहीं पाते हैं पर यदि हमें जो नहीं मिला है, उसकी शिकायत करना छोड़ कर, जो मिला है उसी की महत्ता को समझें तो हमें मालुम पड़ेगा कि जो कुछ परमात्मा ने हमें दिया है, वह भी कम नहीं, अद्भुत है। जिसका मूल्य आंका नहीं जा सकता।

उसी प्रकार ज्ञान चक्षुओं के जाग्रत न होने के कारण और पूर्ण भौतिकता में लिप्त होने के कारण हम सद्गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान का अंदाजा नहीं लगा पाते परन्तु समय आने पर हम अहसास करते हैं कि सद्गुरु बिना कुछ कहे कैसे शनै:-शनै: कितना कुछ हमें प्रदान करते रहते हैं। जो अकथनीय है।

# ब्रह्मत्व की ओर

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली अपनी बात को डंके की चोट पर कहते थे,
इसीलिए उनके द्वारा उच्चरित प्रत्येक वचन सीधा शिष्य के हृदय में उतरता था,
क्रिया योग जैसे गूढ़ विषय को सरल रूप में समझाना केवल उनके ही बस की बात है,
क्रिया योग के रहस्यों को स्पष्ट करता उनके महान प्रवचन का यह दूसरा खण्ड उनकी ही चिरपरिचित शैली में

**कर्म ग्रंथियाँ और ज्ञान ग्रंथियाँ जो हम जानते हैं, वे दस हैं... और जिनका हमें पता नहीं वे अट्ठानवे ज्ञान ग्रंथियाँ हैं।**

## 'नव द्वार का पिंजरा जामे पंछी पौन'

नौ द्वार तो हमें मालूम हैं और दसवां? इन्हीं इंद्रियों के माध्यम से शरीर चलता है, ये इंद्रियाँ केवल भोग के रास्ते पर बढ़ा सकती हैं। ज्ञान के रास्ते पर बढ़ाने के लिये उन अट्ठानवे ग्रंथियों को जगाना पड़ेगा, इसलिए अभी हम ज्ञान में बिल्कुल कोरे हैं। अनुभव हमें अवश्य हो सकता है, यदि आग के पास जाकर हाथ जल जाए, तो इस जलने का अनुभव हो सकता है, परन्तु ज्ञान के लिए तो उन ग्रंथियों को जाग्रत करना पड़ेगा, और इन ग्रंथियों को जाग्रत करने के लिए इस क्रिया योग के मूल तीन आधार हैं। इन तीन आधारों के माध्यम से क्रिया योग द्वारा उन ग्रंथियों को जाग्रत किया जा सकता है।

हम क्रिया योग को कैसे प्राप्त करें?
एक गुरु यदि क्रिया योग को समझायें, तो कैसे?
इसके तीन चरण हैं–धारणा, ध्यान और समाधि।
सबसे पहले–धारणा।
दूसरी स्टेज है–ध्यान।
और तीसरी स्टेज है–समाधि।
तीनों क्षेत्रों को पार करने पर स्वत: ही क्रिया योग पूर्ण हो जाता है।
यहाँ प्रश्न उठता है, कि धारणा क्या चीज है?

'धारयति सा धारणा'

अर्थात् 'जिसको हम धारण करते हैं, वही धारणा है।'
किसको धारण करें? धारण करने योग्य चीज क्या है?

सापेक्षता में धारणा होती है, हम तेल में तेल मिला सकते हैं, पानी में पानी मिला सकते हैं, दूध में दूध मिला सकते हैं, पर पानी में तेल नहीं मिला सकते, वे तो अलग-अलग ही रहेंगे। कबीर ने कहा है––

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जल ही समाना यह तथ कहा गयानी।।

घड़े को नदी के अन्दर डुबोया गया है, उस घड़े में भी पानी है, घड़े के बाहर नदी में भी पानी है। नदी का पानी अलग है, जो बह रहा है, और घड़े का पानी अलग है। जब घड़े को फोड़ेंगे, तो उस घड़े का पानी नदी में मिलेगा... और मिलना ही ज्ञान की चेतना है।

शिष्य भी घड़ा है, और गुरु नदी है, जो प्रवाहशील है, पर दोनों के बीच में एक मिट्टी की दीवार है। घड़े को पहले फोड़ना पड़ेगा, उसमें जो रुका हुआ जल है, बासी पानी है, उसे उस प्रवाह में लीन करना पड़ेगा। अब घड़ा नदी के अन्दर तो है, और उस पानी की भी इच्छा हो रही है, कि मैं नदी में मिल जाऊं, मगर बीच में एक रेखा है, बीच में एक पूरा परदा है, जिसको माया कहते हैं।

– और जब हम माया को समाप्त कर देंगे, तब अपने आप ही पूर्ण क्रिया की ओर अग्रसर हो जायेंगे। उस माया के आवरण को तोड़ने के लिये जिस क्रिया को धारण किया जाता है, उसको 'धारणा' कहते हैं... और जब तक माया का परदा टूटेगा नहीं, तब तक हम उस जल में, जो प्रवाहमान है, मिलेंगे नहीं। गुरु कहते हैं––मैं नदी हूँ, जो बह रही है पिछले दस हजार वर्षों से, बीस हजार वर्षों से, और इस नदी का प्रवाह पूर्णता की ओर है, मेरा ही जल तुम में भरा हुआ है, परन्तु वह बासी हो गया है, उस जल में अपने-आप में पूर्णता नहीं है, और इस घड़े का जल मुझ में मिलना जरूरी है।

इसलिए शंकराचार्य जी ने उल्लेख किया, कि किस सापेक्षता में वह जल और नदी का जल मिल सकता है, इसीलिए धारण करने की क्रिया को इतना महत्त्व दिया गया है। देवता को शरीर में धारण नहीं कर सकते, वह इसलिए कि जब बगलामुखी का दर्शन ही नहीं किया, तो प्रामाणिकता के साथ बगलामुखी का चित्र नहीं बन सकता, जो चित्र उपलब्ध हैं, वे प्रामाणिक हैं कि नहीं, कह नहीं सकते, क्योंकि जिसने देखा ही नहीं, वह चित्र नहीं बना सकता, और यदि बनाता भी है, तो मात्र कल्पना से।

इसलिए राम का चित्र है, कृष्ण का चित्र है, वो प्रामाणिक हैं कि नहीं, नहीं कह सकते। हमने देखा नहीं, हमने सुना है, और जो सुना है, वह सत्य हो, यह आवश्यक नहीं है। एक धारणा के आधार पर हम इन देवताओं के प्रति नमन होते हैं, लेकिन जिसको हमने देखा नहीं, उसको शरीर में हम धारण नहीं कर सकते। धारण तो उसको कर सकते हैं, जिसको देखा हो। इंग्लैण्ड में एक लड़की एलिस रहती है, आप उसको प्यार करते हैं, अगर जानते हैं तो, और जब उसको देखा ही नहीं, तो आप उसको प्यार कैसे करेंगे।

इसलिए जो कुछ देखा है, वह धारण किया जा सकता है। गुरु को देखा है इसलिए गुरु को धारण किया जा सकता है। हमें मालूम है, वह बिल्कुल हमारे जैसा ही है, एक जैसा ही पानी है, समानधर्मी, उसका भी हमारे जैसा ही शरीर है, अत: उसको धारण किया जा सकता है। इस प्रकार गुरु को धारण करने की क्रिया को धारणा कहते हैं।

उस ध्यान तक पहुँचने के लिए, समाधि तक पहुँचने के लिए, उस सहस्रार तक पहुँचने के लिए गुरु को धारण करना आवश्यक है, और धारण संसार में केवल गुरु को ही किया जा सकता है...अन्य सभी को प्यार किया जा सकता है, उसके सुख-दुःख में भाग लिया जा सकता है, पर धारण नहीं किया जा सकता... और जब शिष्य, गुरु को धारण कर लेता है, तो उनके बीच की माया की दीवार टूट जाती है, क्योंकि गुरु बता देते हैं, कि यह माया है, तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। माया अपना काम करेगी, तुम अपना काम करो, मैं तुम्हारे पास हूँ। नदी प्रवाहशील है और नदी का उद्गम कहाँ है, यह मुझे मालूम है। अब तुम इस नदी की एक धारा बन गये हो, तुम्हें कहाँ पहुँचना है, गुरु जानते हैं। अब गुरु तुम्हारे साथ हैं, तुम चिन्ता मत करो।

गुरु को धारण कर लिया, तो धारण करते ही गुरु के, दिव्य प्रवाह के साथ हो गये। वे आपको पूरी बात समझा सकते हैं, एक माया को रखते हुए भी, एक माया के बीच में रहते हुए भी। गुरु ही बताएंगे—नदी की दो धाराएँ हैं, और तुम्हें उनके बीच में बहना है। यदि नहीं आता, तो मैं बता दूँगा, कि कैसे बहा जाता है, क्योंकि मैं पिछले पच्चीस हजार वर्षों से बहता हुआ आया हूँ।

मगर वह क्षमता, वह ज्ञान, वह चिन्तन तब आ सकता है, जब गुरु को

धारण किया जाए।

– और गुरु को इस शरीर में कहाँ धारण करें?

– आँखों में तो कर नहीं सकते और हाथ-पैरों में भी नहीं कर सकते। एकमात्र स्थान है 'तीसरा नेत्र', 'थर्ड आई' जिसको हमारे ऋषियों ने आज्ञा चक्र कहा है, दोनों भौहों के मध्य में... भगवान शिव का चित्र देखेंगे, तो पूरे नेत्र का चित्र बना हुआ है... इसी के ऊपर सिर में चोटी के पास छठी इंद्रिय है। दोनों भौतिक आँखों के बीच में जो स्थान है, उस स्थान पर गुरु को धारण करते हैं। यह क्रिया योग का पहला चिन्तन है, पहला चरण है।

और गुरु को धारण किया जाता है, गुरु के प्रति अटैचमेन्ट पैदा करके। जो घड़े का जल है, वह प्रयत्न करे, नदी तो प्रयत्न कर रही है, घड़े का जल भी उसमें प्रयत्न करे, बीच की दीवार को तोड़ दें, और यदि नहीं टूटता तो पाँच सौ वर्ष भी घड़ा, घड़ा ही रहेगा, और तुम एक ही कला में रहोगे।

इस पहली कला से सीधा सोलहवीं कला में छलांग लगाने के लिए यह जरूरी है, कि सबसे पहले पूरा शरीर, क्रियायोगमय बने, और उसकी पहली शर्त धारण करना है... और धारण उनको करना है, जो तुम्हारे गुरु हैं। वे जो तुम्हें डांट भी सकते हैं, पुचकार भी सकते हैं, तुम्हें गाली भी दे सकते हैं... और क्रोध से लात भी मार सकते हैं, पर किसी दूसरे को लात मारने नहीं देंगे–वे ही गुरु कहलाते हैं... तुम अगर मेरे शिष्य हो, तो मैं तुम्हें डांट सकता हूँ, भला-बुरा कह सकता हूँ, पर कोई दूसरा तुम्हें भला बुरा कहेगा, तो मैं उसकी आँखें नोच लूँगा।

धारण हम उसको कर सकते हैं, जिससे हम परिचित हैं, जो हमारे सामने आदर्श हैं, जो हमसे महान हैं, हमारे मन में जिनके प्रति आदर है, और जिनसे हम एकीकृत हो गये हैं, और यह स्थिति बनती है दो तत्त्वों से... एक तथ्य स्पष्ट कर रहा हूँ, कि गुरु कोई 'नारायण दत्त श्रीमाली' ही नहीं है, गुरु अपने आप में उस परम्परा के एक सूत्र है, जो आज से चालीस पीढ़ियों पहले थी–आज मैं हूँ कल कोई और होगा... गुरु तो एक प्रतीक हैं, पर गुरु और शिष्य अपने आप में समाप्त नहीं हो सकते। काल कभी समाप्त नहीं होता, और व्यक्ति भी कभी समाप्त नहीं होता, केवल शरीर और देह समाप्त होते हैं, और फिर यदि आप में ताकत है, तो इस देह को भी आप अक्षुण्ण रख सकते हैं। इस देह को भी अत्यधिक सामर्थ्यवान बना दें, तो यह देह समाप्त नहीं होगी।

यह देह भी एक नवीन रूप धारण कर सकती है, यह कोई कठिन कार्य नहीं है। आवश्यकता इस बात की है, कि उस अमृत तत्व को प्राप्त करने के लिए हम गुरु को धारण करें... और गुरु को धारण किया जा सकता है दो तरीकों से, उन तरीकों को कहते हैं––'सेवा' और 'समर्पण'। केवल होठों से बोलने से या गुरु को मिठाई खिलाने से उन्हें धारण नहीं कर सकते, और गुरु को पांच करोड़ रुपये देने से भी यह सम्भव नहीं, इसके माध्यम से गुरु धारण नहीं हो सकते।

गुरु स्वयं धारण होते ही नहीं हैं, गुरु को तो शिष्य धारण करता है–सेवा के द्वारा। जिस चीज की गुरु को आवश्यकता है, उसकी पूर्ति की जाए, वह सेवा कहलाती है। गुरु को प्यास लगी है और गुलाब जामुन की प्लेट रख दें–गुरु जी! लीजिए खाइए। बेशक ये कीमती चीज है, पर इसकी उनको जरूरत नहीं है, यदि उनको पानी की जरूरत है, तो आप उनको पानी ही दें। गुरु को किस बात की आवश्यकता है, एक शिष्य का यही मूल चिंतन होना चाहिए।

यदि गुरु में स्वार्थी तत्व हैं, तो वे गुरु हो ही नहीं सकते। अगर गुरु हैं, तो आप इस बात को ध्यान रखें, कि उनकी आँख के नर्तन को आप समझें और सीखें, कि गुरु को किस चीज की जरूरत है। गुरु नहीं भी बोलें... हो सकता है संकोच-वश नहीं बोलें।

एक गूढ़ तथ्य है—–पैर दबाना, और यह अपने-आप में सामान्य प्रक्रिया नहीं है। ऐसे सैकड़ों साधु-संन्यासी हैं, जो अपने पैरों को स्पर्श नहीं करने देते।

क्योंकि गुरु के पैरों को स्पर्श करने का तात्पर्य है, कि गुरु के पास जो भी शक्ति है, जो भी तपस्या का अंश है, उसे प्राप्त करना। इसलिए वे अपनी तपस्या को अपने-आप में पुञ्जीभूत रखने की वजह से अपने पैरों को छूने नहीं देते... और अगर शक्ति है, पर विस्तृत न करें, तो वे गुरु हो ही नहीं सकते।

गुरु का अर्थ है–देना, सेवा ले और अपनी सामर्थ्य और शक्ति को दे। यदि गुरु आप से पानी का गिलास मंगाकर पीते हैं, तो निश्चय ही कुछ तपस्या का अंश आपको प्राप्त होता ही है, और इसलिए गुरु संकोचवश काम नहीं सौंपते शिष्य को। परन्तु शिष्य उनकी आँख का नर्तन देख यदि समझ लें, कि गुरु को किस बात की आवश्यकता है–उसकी पूर्ति करने को सेवा कहते हैं।

मैं बिलकुल सरल और सामान्य सी भाषा में उस क्रिया योग को समझा रहा हूँ। ब्रह्म, माया, चिन्तन जैसे जटिल प्रश्नों में मैं नहीं उलझा रहा हूँ, क्योंकि क्रिया योग को समझाना अपने आप में अत्यन्त जटिल है, बिना क्रिया में उतरे उसे कोई समझ भी नहीं सकता, और उस प्रक्रिया में उतार सकते हैं केवल गुरु।

इसलिए पहले आवश्यक है–गुरु सेवा... और सेवा ही आगे चलकर समर्पण बन जाती है। जब सेवा करते-करते व्यक्ति की स्टेज ऐसी आ जाती है, कि उसको अपना भान नहीं रहता, तो वही अपने-आप में, गुरु में समर्पित हो जाता है, उसका शरीर, उसका चिंतन, उसका विचार, उसका धन, उसका मकान सभी कुछ अपने-आप में गुरुमय हो जाता है।

मैं भी उसी रास्ते से बढ़ा हूँ, जिसका मैं उल्लेख कर रहा हूँ। यदि मैं यह सलाह दे रहा हूँ, तो मैंने भी उस सेवा और समर्पण के मार्ग पर पांव रखा होगा। उस सेवा में

मैंने भी पच्चीस कदम भरे होंगे, और फिर समर्पण में पचास कदम भर के ही धारणा तक पहुँचा होऊंगा। रास्ता तो एक ही है और उस रास्ते पर चलकर यदि मैंने धारणा किया है, तो वह बिलकुल प्रामाणिक रास्ता है, क्योंकि वह बिलकुल अनुभवगम्य है, और केवल इसी के माध्यम से, जिसको हम सिद्धाश्रम कहते हैं, वहाँ पहुँचा जा सकता है।

सेवा और समर्पण के माध्यम से ही गुरु को धारण किया जा सकता है। हाँ! समय अवश्य लग सकता है–केवल पांच घंटे या फिर पांच सौ वर्ष। यह तो निर्भर है इस बात पर, कि आपकी सेवा किस स्तर की है–स्वार्थमय सेवा है या पूर्ण निःस्वार्थ सेवा है, और जब गुरु धारण हो जाता है, तब व्यक्ति अपने-आप में गुरुमय हो जाता है। जिस प्रकार से शादी का तरीका अलग है, संतान पैदा करने का तरीका अलग है, तो धारण करने का भी तरीका एकदम अलग है, इस रास्ते को अपनाना ही पड़ेगा, और वह इतना आसान है, कि इसके लिए यह भी कोई जरूरी नहीं है, कि गुरु आपके निकट हों, यदि आप अपनी जगह पर हैं और गुरु के प्रति चिंतन है, तो यह भी सेवा है। गुरु के पांव दबाने से ही सेवा होती है, यह कोई जरूरी नहीं है। आप गुरु का चिंतन करें, आपको जो गुरु ने काम सौंपा है उसको करें, आप गुरु का स्मरण करें, आप गुरु की पूजा करें, यह सब कुछ गुरु सेवा ही है। आप यदि किसी कार्य को गुरु कार्य समझ कर करते हैं, तो यह अपने-आपमें गुरु की ही सेवा है, और यही सेवा अपने-आप में समर्पण में बदल जाती है।

यदि तुम पूर्ण निष्ठा, समर्पण से मेरे पास दो दिन भी रहते हो, तो दो दिन दो सौ वर्षों के बराबर हो सकते हैं। यदि देने वाला सही हो और लेने वाला सही हो, तो दो दिन भी बहुत बड़ी बात है।

वैज्ञानिकों ने बहुत मेहनत और मंथन करने के बाद में यह निष्कर्ष निकाला, कि एक व्यक्ति सही ढंग से आठ घंटे काम कर सकता है। आठ घंटे से ज्यादा काम नहीं कर सकता, शरीर की एक लिमिट है, इसलिए सरकार ने आठ घंटे की नौकरी रखी.... और यदि वह आठ घंटे काम करेगा, तो साठ साल तक बूढ़ा नहीं होगा।

मेरा उद्देश्य सदा यही रहा है, कि अधिक से अधिक शिष्यों को चेतना प्रदान कर सकूँ। इसलिए समय की कभी परवाह नहीं की और लगातार वर्षों से बीस-बीस घंटे काम किया है, तो इस समय मैं हिसाब लगाऊं, कि बीस घंटे काम करके, घंटों के हिसाब से सौ वर्ष का हो चुका हूँ मैं। अब सौ साल का व्यक्ति कैसा होगा, आप कल्पना कर सकते हैं। उसमें तकलीफ भी होगी, बेचैनी भी होगी, समस्याएँ भी होंगी। साधारणतः जब एक शरीर को बीस घंटे काम करवाएंगे, तो ऐसी स्थिति में एक क्षण ऐसा आता है, जब शरीर खुद खड़ा हो जाता है, सामने विद्रोह करने के लिए–यह क्या है?–ये कोई तरीका है क्या?–मैं आज तक तुम्हारी हर बात मानता आया हूँ।

– मगर मेरे साथ ऐसी कोई बात नहीं। इसमें तो कोई दो राय नहीं, कि जीवन के अन्तिम क्षण तक यह शरीर मेरे सामने विद्रोह तो कर ही नहीं सकता, यह तो गारण्टी है। मैं खुद निष्क्रिय नहीं हूँ, तो उसको भी निष्क्रिय नहीं रख सकता। मैं पूर्ण चेतना में हूँ, तो मेरे शरीर को भी चेतनावस्था में रहना ही पड़ेगा... और चाहे इसके लिए मुझे रातों-रात जागना पड़े, पर मैं अपने शिष्यों में इस चेतना को प्रवाहित करता ही रहूँगा।

– और अगर आप मेरे साथ रह सकें, कुछ पा सकें, तो इस पंक्ति को आप याद रखें—

"आने वाली पीढ़ियां इस बात पर विश्वास नहीं करेगी, कि आप कभी निखिलेश्वरानंद के साथ रहे हैं।"

– मैं आप लोगों को बहुत आशीर्वाद दे रहा हूं, बता रहा हूं, कि शरीर की दृष्टि से बेशक निखिलेश्वरानन्द का व्यक्तित्व छोटा सा हो, मगर एक गुरुत्व की दृष्टि से वे महान पुण्यदायक हैं। इसलिए कि वे उस कला से सोलहवीं कला तक धक्का देने में समर्थ व्यक्तित्व हैं। बस केवल उस व्यक्तित्व से स्पर्श प्राप्त करने की जरूरत है। यह जरूरत नहीं है, कि हम उनके साथ दो मिनट रहें या दो घंटे। केवल यह बड़ी बात है, कि हम उनके साथ रहें.. यह बहुत बड़ा चिंतन है, यह मामूली चिंतन नहीं है। भवलाल गांधी के साथ मैं पांच मिनट रहा, यह मेरी पूंजी है, यह मेरी धरोहर है। मैंने उन्हें क्रिया योग की शिक्षा दी, मैंने उन्हें ध्यान, धारणा और समाधि सिखाई, यह मेरी पूंजी है... और शिष्य है, तो आप भी एहसास करेंगे और कहेंगे—यह मेरी पूंजी है, कि मैं निखिलेश्वरानंदजी के साथ रहा, दो साल रहा, दो महीने रहा, उनसे कुछ सीखा।

– और घड़ा तो आपका है, उस घड़े को फोड़ने की आवश्यकता है। मैं भी प्रवाह दे रहा हूँ, प्रवाह तुम्हें भी देना पड़ेगा। एक गुरु की दृष्टि से वास्तव में ही मैं सौभाग्यशाली हूँ। इसलिए कि मैं अपने आप में ही सैकड़ों हजारों रूपों में बिखरा हुआ हूँ। इस शरीर का इतना मोह नहीं है, जो शरीर मेरे सामने हैं, वे सब मेरे हाथ हैं, पांव हैं, कान हैं, आँख हैं, नाक हैं, शरीर की धड़कन हैं, चिन्तन हैं। तुम सभी शिष्य समूह को मिलाकर जो पिण्ड बनाया जाता है, उसी को निखिलेश्वरानंद कहते हैं।

– और जब तक यह पिण्ड स्वस्थ हैं, तब तक मेरा शरीर तो अस्वस्थ हो ही नहीं सकता, और जब तक यह पिण्ड सक्रिय है, निखिलेश्वरानंद निष्क्रिय हो ही नहीं सकता।

मैं क्रिया योग जैसी गूढ़, दुष्कर और अपने आप में अत्यधिक कठिन साधना को समझा रहा हूँ, क्योंकि तभी मेरी मेहनत सार्थक होगी... और मैं आपको समझा सकूंगा, साधना के माध्यम से, मंत्रों के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से और योग के माध्यम से भी। यह अपने आप में अत्यन्त विशाल और जटिल विषय है, पर मैंने आपको संक्षेप में इस बात को समझाया,

कि क्रिया योग चीज क्या है? और क्रिया योग को प्राप्त करने के लिए करना क्या है?

– कोई कठिन कार्य नहीं है, आवश्यकता इस बात की है, कि हम उस व्यक्तित्व के साथ जुड़ सकें, एक हो सकें, मिक्स हो सकें, जो इसका पूर्ण ज्ञान रखता हो। अगर मिक्स हो जाएंगे तो आप फिर घड़े का जल नहीं रहेंगे, नदी का जल हो जाएंगे, और जब नदी का जल हो जाएंगे, तो नदी का एक सिरा ठेठ वहाँ तक है, जहाँ पच्चीस हजार वर्ष पहले हमारी पीढ़ियाँ अवस्थित थीं–ज्ञान के क्षेत्र में... और अगला सिरा ठेठ सोलहवीं कला तक है। फिर कहीं आपको कोई व्यवधान, कोई परेशानी, कोई चिन्तन व्याप्त नहीं होगा, लेकिन आवश्यकता है––उसमें मिलने की, और उसके लिए माया के आवरण को तोड़ना ही पड़ेगा। निश्चित रूप से एकाकार होकर अपने आपमें उन्हें धारण करना पड़ेगा, क्योंकि क्रियाशील आपको होना है, यह क्रिया पक्ष आपको करना ही है।

क्रिया योग आपको सीखना है, क्रियात्मक पक्ष आपका है, तो आपको धारण करना पड़ेगा। गुरु जबरदस्ती आपके तीसरे नेत्र में धारण नहीं हो सकते। आपको खुद ही इस बात के लिए बढ़ना पड़ेगा। समुद्र अपनी जगह पर ही है, नदी खुद गंगोत्री से तरंगित होती हुई, दौड़ती हुई समुद्र से जाकर मिलती है। समुद्र जाकर नहीं मिलता है, उस नदी को जाकर मिलना है, समुद्र में एकाकार होना है। उसे अपने चिन्तन में, अपने विचार में धारण करना है... और गुरु शिष्य का यह जो सम्बन्ध है, वह एक पिता और पुत्र का सम्बन्ध है, एक हृदय और एक शरीर का सम्बन्ध है।

शंकराचार्य को बहुत परिश्रम करना पड़ा था, अत्यधिक दुःख, अत्यधिक तनाव उनको भोगना पड़ा था। उसके सामने सिद्धाश्रम का एक मार्ग, एक रास्ता, एक मार्गदर्शन था। काम सौंपा गया था शंकराचार्य को, शिष्यों को तैयार करने का... और मुझे भी उसी प्रकार शिष्यों को तैयार करना पड़ रहा है और एक पिता के नाते मुझे अधिकार है–अपने पुत्रों को आज्ञा देने का, क्योंकि मुझे आपकी पूंजी मांगने की आवश्यकता है नहीं, इसकी जरूरत नहीं है, कि आप मुझे कुछ दें। मेरा अधिकार है... मैंने कहा, कि मैं आपको डांट सकता हूँ, भला बुरा कह सकता हूँ, मगर यह सब दूसरों को नहीं करने दे सकता। इतनी हिम्मत तो मुझमें है, मैं वज्र की तरह आपके आगे खड़ा हूँ, और मेरे होते हुए कोई आपको नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

– और यदि गुरु हर क्षण आपके साथ है, तो आपको पूर्ण क्रियात्मक बनने से कोई प्रकृति, कोई माया रोक नहीं सकती है।

भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को कहा–मैं महानिर्वाण ले रहा हूँ, तुम्हें पूरे भारत में फैल जाना है, तो यह एक आदेश था।

और मैं भी कह रहा हूँ–यह एक संक्रमण काल है, वर्तमान सभ्यता बहुत

ही हल्की है, और हम पर हावी है, हमारे परिवार पर हावी है, हमारे दिल-दिमाग पर हावी है, उसको धोना पड़ेगा और उसे धोने के लिए तुम्हें पूरे भारतवर्ष में फैलना पड़ेगा, चुनौती के साथ खड़ा होना पड़ेगा, उस सभ्यता के सामने।

जो तुम्हें यह कहते हैं–मंत्र क्या होता है? तंत्र क्या होता है? योग क्या होता है? उनके बीच में दम ठोक के खड़ा होना पड़ेगा, कि मैं बताता हूँ... और मेरे शिष्य जवाब देने में सक्षम हैं। इतनी क्षमता आप में होनी चाहिए, और यह क्षमता आप में है, क्योंकि यदि उनको आप जवाब नहीं दे सकेंगे, तो वे आप पर हावी होंगे, और कायरता के साथ जिन्दा रहना गीदड़ की जिन्दगी से ज्यादा घटिया है। कायरता के साथ जिन्दा नहीं रहना है, जिन्दा रहना है दमखम के साथ, आँखों में चुनौती के साथ, आँख में अंगारे भरकर जिन्दा रहना है... और आँखों में वे अंगारे, आँखों में वह चेतना, आँखों में सक्रियता केवल गुरु ही प्रदान कर सकते हैं।

पूर्ण शरीर की एक सौ आठ इंद्रियों को जाग्रत कर सकें, यही जीवन की श्रेष्ठता है... और वे जाग्रत हो सकती हैं–ज्ञान के माध्यम से, वे जाग्रत हो सकती हैं––विचारों के माध्यम से, वे जाग्रत हो सकती हैं––विशिष्ट प्रक्रिया के माध्यम से, यह इस विशिष्ट प्रक्रिया... क्रिया योग का पहला चरण है––धारण।

मैंने तो आपको केवल एक ग्रंथि के बारे में ही बताया है, जो बहुत हल्की सी है, और ग्रंथियाँ तो एक सौ आठ हैं और एक सौ आठ ग्रंथियों से क्या-क्या प्राप्त हो सकता है, उसको तो एहसास किया जा सकता है, चिन्तन किया जा सकता है। मरुस्थल में भयंकर गर्मी होती है, परन्तु उससे भी ज्यादा गर्मी सोने को दी जाती है, अत्यधिक आंच के अन्दर उसे डाल दिया जाता है, जिससे कि वह खरा बन सके। गुरु उस विशिष्ट आंच तक पहुँचाने के लिए अभ्यास करवाते हैं... इससे भी ज्यादा तेज आंच, गर्मी, दु:ख को मैंने एहसास किया है।

## संगुम्फन क्रिया रहस्य

प्रयोग प्रथमं प्रथमं प्रमेयं, प्रीतिः परेर्व परितं पुरुषोत्थमायं।
प्रेमं प्रतां परियोत परमेव प्रीयतं, प्रतीत्यर्थ रूप सवितं क्रियमेव तुल्यं।।

–– ''मेरा सारा जीवन जड़ता से भरा हुआ है। एक ऐसा जीवन जिसमें–उमंग, जोश, उल्लास और आनन्द नहीं है। यह तो एक ऐसा जीवन है–जिसको केवल मैं ढो रहा हूँ, खींच रहा हूँ... और किसी न किसी प्रकार से इस शरीर को अपने पांवों पर ढोता हुआ मृत्यु की तरफ निरन्तर अग्रसर हो रहा हूँ और इस तथ्य का मुझे ज्ञान है, इसलिए मैं इससे विचलित हूँ, परन्तु मुझे कोई रास्ता नहीं मिल रहा है।

–''मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है, कि मैं इस जड़ शरीर

को जीवन्त कैसे बनाऊं?——मुझे इस बात का भी ज्ञान नहीं है, कि मैं निरन्तर मृत्यु की ओर जाता हुआ ठिठक कर कैसे रुकूँ ?—अमृत्यु की ओर कैसे बढ़ूं? मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है—कि अपने जीवन की पूर्णता की ओर कैसे पहुँचूं, मुझे इस बात का भी ज्ञान नहीं है?'

—''इसलिए हे जगदम्बा! हे भगवती!! अब मैं तुम्हारी शरण में हूं। आप मुझे उस गुरुत्व से मिलाकर क्रियमाण करिये, जिससे कि मैं अपने जीवन के सारे उद्देश्यों को प्राप्त कर सकूँ।''

भगवतपाद शंकराचार्य का यह श्लोक, एक अनूठा श्लोक है, जिसमें सारे अक्षर 'प' से ही शुरु होते हैं। उन्होंने बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य इस श्लोक द्वारा सामने रखे हैं। यह संसार केवल एकत्र होने के लिए कोई स्थान नहीं है, यह जीवन केवल इस बात के लिए भी नहीं है, कि तनावों में ही फंसे रहें, और यह जीवन इस बात के लिए भी नहीं है, कि हम न्यून बने रहें। यह जीवन तो अपने-आप में निरन्तर चैतन्य होने का, निरन्तर नर्तन करने का, ऐसा नृत्य, जिससे सारा शरीर थिरकने लग जाए, हमारे शरीर के बाह्य अंग तो थिरकें, हमारा अन्तर भी नृत्यमय हो जाए, साथ ही हमारी आँखें मुस्कराने लग जाए, होंठ गुनगुनाने लग जाए, हमारी आवाज मुखरित हो जाए, हमारा चेहरा सौन्दर्यतम लगने लग जाए, हमारा सारा अंग-प्रत्यंग नाचने लग जाए।

– और ऐसा तब हो सकता है, जब गुरु धारण हों।

शंकराचार्य ने कहा है—''मेरे पास अपने जीवन को परखने की कोई कसौटी ही नहीं है, कोई ज्ञान ही नहीं है, बस गुरु को सही ढंग से ढूंढ सकूँ, उस गुरु को पहिचान सकूं।'' ऐसी आकांक्षा है।

यदि शिष्य गुरु को पहिचानने की क्षमता उत्पन्न कर सकेगा, तो ही वह पूर्ण बन सकेगा.... किन्तु शिष्य में यह सामर्थ्य होता ही नहीं है, क्योंकि केवल ज्ञान के स्तर से ही उस दिव्यता को पहिचाना जा सकता है।

—उस शिष्य ने.... शंकराचार्य ने अपनी व्यथा व्यक्त की है।

जब ''स्वामी गोविन्दपादाचार्य जी के सामने शंकराचार्य पहुँचे, तब वे ठीक उसी प्रकार से थे, जिस प्रकार से आप हैं, ऐसा ही उनका व्यक्तित्व था। कोई प्रारम्भ से ही तो महान व्यक्तित्व नहीं बन जाता।

यह अलग बात है, कि उनके पिछले जीवन की कुछ कलाएँ अपने-आप में जीवन्त रही होंगी और उन कलाओं की पूंजी उस दिन स्वत: प्रस्फुट हो सकी।

– क्योंकि जब कलाएं जाग्रत होने की अवस्था आती हैं, तो सही गुरु मिल जाते हैं।

– पिछले जीवन की कलाएं जब अपने-आप में चैतन्य होने लग जाती हैं, तो गुरु का सान्निध्य मिल जाता है, गुरु का ज्ञान मिल जाता है, गुरु के ज्ञान को

क्रियमाण करने का अवसर मिल जाता है... ये सब कुछ पुरानी पूंजी का ब्याज प्राप्त करने की क्रिया है। आप एकदम से नये सिरे से सब कुछ प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि आप नये सिरे से गुरु के पास नहीं जा सकते। आज अगर आप गुरु के पास बैठे हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है, कि आज आपने पहली बार कोई प्रयत्न किया है, जरूर पिछली पूंजी आपके पास है, और उसके ब्याज से ही आज आप गुरु के पास तक पहुँच सके हैं।

– और गुरु का द्वार कोई नृत्यशाला या रंगशाला नहीं है, आमोद-प्रमोद का स्थान नहीं है। वहाँ पर आपको कोई ज्यादा स्वागत-सत्कार या सुख-सुविधाएँ दी जाए, केवड़ा और गुलाब जल छिड़का जाय–ऐसा कुछ नहीं है। ऐसा करने के लिए तो जीवन में सैकड़ों स्थान हैं, जहाँ हम अपने ऊपर गुलाबजल और केवड़े का इत्र छिड़कवा सकते हैं।

– ऐसे बहुत से स्थान हैं... मगर वे इस जीवन की ऐसी पूंजी हैं, जो अगले जीवन में आपको तकलीफ देंगी। आप जो कमा रहे हैं, उसका ब्याज तो लेना ही पड़ेगा आपको अगले जीवन में। वह ब्याज 'भोगे रोग भयं' भोग अपने-आप में रोग में ही परिवर्तित होता है... यदि मैं बहुत ज्यादा खाऊंगा, तो अजीर्ण होगा ही... बहुत ज्यादा चलूँगा, तो पैरों में गांठें पड़ेंगी ही... उसमें कोई बहुत कहने की जरूरत नहीं है। इसलिए अगर आप भोग में लिप्त हैं, तो भोग के माध्यम से आप जो कुछ भी प्राप्त करेंगे, उसका फल आप जीवन में भोगेंगे ही, और इस जीवन में नहीं, तो अगले जीवन में, वह फल तो भोगना ही पड़ेगा।

जैसा कि मैंने बताया काल के टुकड़े नहीं हो सकते, जिस समय के स्थान पर आपने दस्तक दी, जो कार्य किया उसका प्रभाव प्लस या माइनस तो होगा ही, आपकी छोटी सी छोटी घटना भी रिऐक्शन करेगी ही।

एक छोटी सी गोली इतने बड़े शरीर में जाकर अपना प्रभाव दिखाती है–'यदि मैं एक गोली लूँ, तो सिर का दर्द समाप्त हो जाएगा, तो यदि चार-छः गोली एक साथ ले लूँ तो सिर का दर्द और बढ़ जाएगा, वह रिऐक्शन एक घंटा तकलीफ दे सकता है, और चार घंटा भी तकलीफ दे सकता है, और नींद की गोलियाँ चालीस एक साथ ले लूँ, तो मैं मर भी सकता हूँ। वे गोलियाँ एक बटन जितनी बड़ी होती हैं, कोई बहुत बड़ी नहीं होती, परन्तु प्रभाव अचूक होता है।'

इसलिए यह शास्त्र सम्मत तथ्य है, यह व्यावहारिक तथ्य है कि हम जीवन में जो कुछ भी कर रहे हैं, हमारी वैसी ही संतान पैदा हो जाएगी। संतान हमने पैदा की, हमारे ही पुत्र और पुत्रियाँ हैं, और वे हमारा ही कहना नहीं मानते। हमसे विपरीत रास्ते पर चलने लग जाते हैं। हमारा ही आदर सम्मान नहीं करते। हमारा स्वयं का शरीर जिसको हमने खूब साबुन लगा लगा करके, खिला-पिला करके तैयार किया है, और वह ही हमारा कहना नहीं मानता, थक जाता है, कमजोर हो जाता है, चल नहीं सकता, खा नहीं सकता, पी नहीं सकता।

– इसलिए कि हमने जो कुछ किया है, उसका परिणाम हम सब भोग रहे हैं। पिछले जीवन में आपने जो कुछ भी किया होगा, उसका फल आपके सामने बिलकुल प्रत्यक्ष होगा ही परन्तु पिछला जीवन तो आपको ज्ञात नहीं है, इसलिए सोचेंगे–आखिर मेरे जीवन में इतनी विडम्बनाएँ, इतनी बेचैनी, इतनी परेशानियाँ, इतनी बाधाएँ क्यों हैं? चेहरे पर आनन्द नहीं है, चेहरे पर उमंग नहीं है, आँखों में जो एकदम से नृत्य होना चाहिए, मुस्कराती हुई आँखें होनी चाहिए... आखिर वह क्यों नहीं है? चेहरे पर जो ओज होना चाहिए, जो चमक होनी चाहिए... वह क्यों नहीं है?

आप घी खाते हैं, उसके बावजूद भी आपका चेहरा मुर्दे की तरह क्यों है? इसमें किसी प्रकार की कोई हलचल क्यों नहीं है? प्रभु ने तो चेहरा ऐसा नहीं दिया। आप जब पैदा हुए, तो खिलखिला रहे थे, मुस्करा रहे थे, बहुत नृत्य कर रहे थे, और आपकी आँखों का नृत्य देखकर आपके मां-बाप बहुत खुश हो रहे थे–रोते हुए चेहरे को देखकर नहीं, रोते हुए चेहरे को देखकर वे उदास हो जाते हैं। उस समय आपके चेहरे में जरूर कुछ विशेषता रही होगी, जिससे आपके मां-बाप, आस-पड़ोसी खुश थे–वह खिला हुआ चेहरा आप ही का था, पर अब आपको क्या हो गया? प्रभु ने तो आपको बड़ा सुन्दर जीवन दिया था, बड़ा सुन्दर चेहरा दिया था, तो फिर आज यह क्या हो गया?

– आपने जो कुछ कमाया, उसी का फल आपके सामने है, और ये सब आपके पिछले जीवन की कमाई है... यदि पिछले जन्म के कुछ पुण्य शेष होंगे, तो व्यक्ति को गुरु अवश्य मिलेंगे ही।

शंकराचार्य ने कहा–''हे अम्बे! मैं जीवन में यही चाहता हूँ, कि मुझे कोई ऐसे गुरु मिल जाए, जो यह समझा सकें, कि जीवन क्या है?''

और यह वही समझा सकते हैं, जो खुद समझे हुए हों, जो खुद पूरे उपनिषदों को समझ सकते हों, वे ही गुरु हैं। पढ़ना-लिखना नहीं, पढ़ने-लिखने से ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। उपनिषद को पढ़कर स्वयं मंथन करें, तो आप भ्रमित हो जाएंगे, क्योंकि यदि तैत्तरियोपनिषद में एक बात कही गयी है, तो आरण्यक उपनिषद में विरोधी बात क्यों कही?

इन उपनिषदों में एक ही बात को विरोधी भाव से क्यों कहा गया है?

आखिर इन दोनों में सत्य कहाँ है?

जिस उपनिषदकार ने यह बात कही, इसके पीछे उनका मन्तव्य क्या था?

इन सभी प्रश्नों का उचित निष्कर्ष निकाल कर, उसके अनुसार ज्ञान के पुष्ठज को लेकर, जो खड़े होते हैं, उनको गुरु कहते हैं। भगवे कपड़े पहिनने से तो गुरु नहीं बना जा सकता। गुरु

का अपने आप में कपड़ों से कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारे पिछले जीवन के तो कोई गुरु ऐसे थे ही नहीं, जो भड़कीले कपड़े पहिनते हो। कुर्ता था, वह भी खोल दिया, धोती भी खोल दी, बस लोक-लाज के भय से एक लंगोट अवश्य लगा कर रखा, ऐसे थे वे त्यागवृत्तिमय।

शंकराचार्य ने कहा–मैं जीवन के उद्देश्य चाहता हूँ, मैं जीवन में आध्यात्मिकता के साथ ही साथ सभी भौतिक दृष्टियों से भी पूर्णता चाहता हूँ।

संन्यासी जीवन में यदि कोई भौतिक दृष्टि से पूर्णता चाहे, तो कोई दोष नहीं है। कोई गुरु यदि मिठाई खाए, तो कोई पाप नहीं है। यदि गुरु सिनेमा देख लें, तो कोई अधर्म नहीं है। मैं तो सिनेमा रोज देखता हूँ–एक व्यक्ति खड़ा होता है, अपनी पत्नी को गालियाँ देता है, लातें मारता है, थप्पड़ मारता है। देखता हूँ विलेन और हीरो के लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं, और फिर हीरो उसको बहकाता है और उसकी लड़की के साथ भाग जाता है।

– ऐसे केस तो रोज मेरे पास आते हैं। मैं उनके चेहरे को देखता हूँ, तो सोचता हूँ, यह तो फिल्म का ही एक पार्ट है, उनका जीवन एक फिल्म की भांति मेरे मन:चक्षुओं के समक्ष स्पष्ट हो जाता है–दिन रात ऐसी फिल्म देखता हूँ, तो फिर यदि तीन घंटे की एक फिल्म देख भी लूँगा, तो उसमें क्या दोष आ जाएगा।

मगर हमारी आँखें इतनी स्थूल हो गई हैं, कि हम कहते हैं––अरे! गुरु जी बेकार हैं, गुरुजी को सिनेमाघर में देखा था आज।– अरे! कमाल हो गया आज, मैंने उन्हें टिकट लेकर फिल्म देखते हुए देखा... अब गुरुजी में ज्ञान खत्म हो गया, अब जो उपनिषद का ज्ञान गुरुजी में था, वह समाप्त हो गया। गुरु जी ने जो वेद पढ़े थे, वे खत्म हो गए, क्योंकि गुरु जी ने सिनेमा देख लिया।

यह हमारी न्यूनता है, कि हम नहीं समझ पा रहे हैं। गुरु अपने आप में सिनेमा देखने से, भगवे कपड़े पहिनने या नहीं पहिनने से, करोड़पति होने से, या भिखारी बनने से गुरु नहीं बन सकते–ये गुरु की परिभाषाएँ हमने गलत बना दी हैं। वास्तव में ही हम गुरु को पहिचान नहीं पा रहे, इसीलिए ढोंगी और पाखण्डी गुरु अट्ठानवे प्रतिशत बढ़ गए, तो दो परसेन्ट जो गुरु थे––वे भी दब गए बेचारे, और वे छदम् गुरु घंटाल पूरी तरह से छा गए, मन में यह संदेह पैदा हो गया, कि मंत्र बेकार होते हैं।

शंकराचार्य ने कहा––मैं अपने शरीर को अत्यन्त भार स्वरूप लिये ढोते हुए जी रहा हूँ। ऐसा लगता है, जैसे मुर्दे को उठाकर श्मशान की ओर ले जा रहा हूँ। मेरे जीवन में कुछ भी नवीनता नहीं। मैंने गृहस्थ जीवन भी जी करके देख लिया, कुछ अलग से नहीं है।

उससे पहले तो व्यक्ति सोच रहा था, कि यों होगा, और ऐसा होगा, वैसा होगा, परन्तु देखने के बाद मैंने एहसास कर लिया। उसके बाद भी जीवन में जो चेहरे पर उमंग, चैतन्यता और ओज होना चाहिए, वह नहीं है। पैसा कमा कर भी देख लिया, मकान बनाकर भी देख लिया, शहर में रहकर भी देख लिया, और प्रकृति में घूम कर भी देख लिया, परन्तु जीवन का जो वास्तविक आनन्द है–वह मुझे भोग में मिला ही नहीं। संन्यासी बनकर भी देख लिया, भगवे कपड़े पहिन करके और गंगा में खड़े होकर भी देख लिया, आनन्द उसमें भी प्राप्त नहीं हो सका–दोनों ही अवस्थाओं में मैं अपने शरीर को, अपने कंधों पर लेकर निरन्तर मृत्यु की ओर जा रहा हूँ।

– और मैं चाहता हूं, कि मेरा जीवन नर्तनयुक्त बने, थिरकता हुआ बने, हंसता खिलखिलाता हुआ और अपने आप में पूर्ण आनन्द व उमंग लिए हुए हो, रोग रहित हो।

और तीसरी बात उन्होंने यह कहा है, कि मैंने जीवन में जो अधूरापन भोगा है, उसको पूर्णता की ओर ले जाना चाहता हूँ।

जैसा कि मैंने बताया, कि प्रत्येक व्यक्ति अणु है, और वह अणु अपने आप में महान हो सकता है, और महान होता ही है, यदि अणु पूर्णता तक पहुँचने की क्षमता रखता हो––

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर आगाज से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे कि बता तेरी रजा क्या है।।

ऐसा व्यक्तित्व ही सफल हो सकता है, जो जमीन पर खड़ा तो हो, मगर उसमें आसमान को छूने की ताकत हो, आगे बढ़ने का संकल्प हो, क्षमता हो।

– और शंकराचार्य के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनके गुरु जो अपने-आप में ज्ञान के विराट पुंज थे, उन्होंने कहा––

पूर्णं मदे पूर्ण मदैव सिन्धुं ज्ञानेव रूपं परिमं प्रदेवं।
स: शंकरं सहित रूप मदैव तुल्यं, क्रियायोग रूपं क्रियायोग रूपं।।

– और कोई दूसरा तरीका नहीं है तुम्हारे पास, और किसी दूसरे तरीके से तुम जीवन की पूर्णता प्राप्त भी नहीं कर सकते––तुम भौतिक जीवन का भी आनन्द चाहते हो––तुम संन्यास जीवन का भी आनन्द चाहते हो।

– तुम अपने जीवन को अणु रूप में भी देखना चाहते हो—तुम अपने जीवन को उस महान पूर्णता के रूप में भी देखना चाहते हो–तुम इस जड़ शरीर को चैतन्य भी करना चाहते हो—और तुम नर्तनयुक्त और थिरकनयुक्त भी बनना चाहते हो तो केवल क्रिया योग के माध्यम से ही जीवन की ये सभी स्थितियाँ प्राप्त हो सकती हैं, परन्तु साथ ही साथ उन्होंने कहा—यह दुर्लभ है, यह बहुत कठिन है, यह बहुत पेचीदा है।

पेचीदा इसलिए, क्योंकि इसको समझाना पेचीदा है.... समझना पेचीदा नहीं है, परन्तु यदि समझाने वाला सही चिन्तनयुक्त नहीं है, तो नहीं समझा सकता, क्योंकि वह केवल यह कहे, कि ''काल पुरुष स्वरूपी अणु को महान से जोड़ने की क्रिया और अणु को महान में जोड़कर के ब्रह्मत्व में लीन कर देने की क्रिया, जिस प्रक्रिया से अपने-आप में अणु महान, विराटयुक्त बन जाता है, उसको क्रिया योग कहते हैं।''

क्रमशः..

**पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी**
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

**'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**
पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

# सूर्य यंत्र

## स्थापन विधि

रविवार के दिन साधक प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर लें। उसके पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुख कर एक तांबे के पात्र में शुद्ध जल भर उसमें आदित्य सूर्य यंत्र रख दें। इसके पश्चात् निम्न मंत्र की 1 माला जप करें।

**मंत्र :**

**।। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।।**

मंत्र जप के पश्चात् पात्र में से सूर्य यंत्र निकाल कर सूर्य को अर्घ्य दें। ऐसा चार रविवार करने के पश्चात् सूर्य यंत्र को जल में समर्पित कर दें।

मनुष्य का शरीर अपने आप में सृष्टि के सारे क्रम को समेटे हुए है और जब यह क्रम बिगड़ जाता है, तो शरीर में दोष उत्पन्न होते हैं, जिसके कारण व्याधि, पीड़ा, बीमारी का आगमन होता है एवं मानसिक शक्ति में भी हानि पहुंचाते हैं, व्यक्ति की सोचने-समझने की शक्ति, बुद्धि क्षीण होती है, इन सब दोषों का नाश सूर्य तत्व को जाग्रत कर किया जा सकता है। क्या कारण है कि एक मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है और एक व्यक्ति पूरे जीवन सामान्य ही बना रहता है, दोनों में भेद शरीर के भीतर जाग्रत सूर्य तत्व का है। साधारण मनुष्यों में यह तत्व सुप्त होता है, न तो इनकी शक्ति का सामान्य व्यक्ति को ज्ञान होता है और न ही वह इसका लाभ उठा पाता है। इस तत्व को अर्थात् भीतर के मणिपुर सूर्य चक्र को जाग्रत करने के लिए बाहर के सूर्य तत्व की साधना आवश्यक है, बाहर का सूर्य अनन्त शक्ति का स्रोत है और इसको जब भीतर के सूर्य के चक्र से जोड़ दिया जाता है, तो साधारण मनुष्य भी अनन्त मानसिक शक्ति का अधिकारी बन जाता है और जब यह तत्व जाग्रत हो जाता है, तो बीमारी, पीड़ा, बाधाएं उस मनुष्य के पास आ ही नहीं सकती हैं।

**नारायण मंत्र साधना विज्ञान**

**मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर**

**यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।**

**वार्षिक सदस्यता शुल्क** - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

**कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी**
**18.10.22**

## गुरु मत्स्येन्द्रनाथ का

# लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग

**गुरु मत्स्येंद्रनाथ तो गोरखनाथ से भी ज्यादा सिद्ध और योगी हुए हैं,**
**तन्त्र के वे साक्षात् अवतार थे।**

**उन्होंने अपनी पुस्तक में लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग को देकर संसार पर महान उपकार किया है। यह प्रयोग कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को ही सम्पन्न किया जाता है। इस वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी 18.10.22 को आ रही है। कितना सुंदर है, कि इस दिन पुष्य नक्षत्र भी है, अतः साधकों को चाहिए कि वे इस दिन का अवश्य ही उपयोग करें।**

इस दिन साधक प्रातःकाल उठकर स्नान कर, पूजा स्थान में बैठ जायें। सामने जल पात्र, कुंकुम, अक्षत आदि हो। इस दिन लक्ष्मी को आबद्ध करने के लिए **'वरदायक लक्ष्मी मंत्रों से युक्त गणेश विग्रह'** पूजा का विधान है। यह मत्स्येंद्रनाथ द्वारा सम्पादित वरदायक लक्ष्मी गणेश मंत्र से सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए। पाठकों की अनुकूलता के लिए पत्रिका कार्यालय से इतना भव्य और महत्वपूर्ण वरदायक **लक्ष्मी गणेश विग्रह** उपलब्ध कराया जा रहा है।

इसके बाद साधक गणपति को जल से स्नान करा कर फिर पोछ कर उसके पूरे शरीर पर केसर लगायें और **'ॐ वरदायक महालक्ष्म्यै नमः'** मन्त्र से 108 बार थोड़े-थोड़ पीले रंग में रंगे हुए अक्षत चढ़ायें।

इसके बाद मूल प्रयोग प्रारम्भ होता है। साधक को चाहिए कि वे पहले से ही 108 पुष्प ला कर रख दें। इस बात का ध्यान रखें कि न तो एक भी पुष्प ज्यादा हो और न कम, फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर, पुष्प चढावे, इस प्रकार क्रम से एक मन्त्र पढ़ता हुआ, एक-एक पुष्प चढ़ाता रहे।

### मंत्र

**।। ॐ नमो वेताल कुबेर धरण गगन बांधू, आठों दिशा नव नाथ बांधूं,**
**लिछमी को घर में बांधूं, वैपार चढ़े, गज तुरग बढ़े, कनक सरै,**
**सब सिद्ध होय, जो न होय, रुद्र को त्रिशूल खण्डित होय ठं ठं ठं।।**

जब पूरे 108 पुष्प गणपति पर चढ़ा दिये जाये तो हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना करें कि लक्ष्मी गणेश मेरे घर में चिरस्थायी रुप से निवास करें और फिर उसी दिन उन गणपति को अपने पूजा स्थान में रख दें या तिजोरी में रख दें अथवा यदि व्यापार हो या दुकान हो तो अवश्य ले जा कर दुकान में जहां रुपये-पैसे रखते हैं, वहां स्थापित कर दें। ऐसा करने पर अद्वितीय सफलता और आर्थिक अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री-660/-

# रोगों से मुक्ति के लिए धन्वन्तरी साधना करें

सर्वरोग विनाशाय धन्वन्तरी च स्थापयेत्

**रोग मुक्त जीवन**

**बल युक्त जीवन**

**योग युक्त जीवन**

# धन्य धन्य धन्वन्तरी साधना

**जीवन में हम कई कारणों से व्यथित रहते हैं और धीरे-धीरे यह व्यथा रोग का रूप ले लेती है।**

**यह व्यथा सामाजिक हो या किसी अन्य प्रकार की, हमारे दैनिक जीवन में इसका प्रभाव हमारे शरीर पर भी पड़ता है। आज के प्रदूषित वातावरण में पूर्ण स्वस्थ रहना तो एक आश्चर्यजनक घटना है, प्रदूषण के कारण विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होने लग गये हैं, न केवल शारीरिक अपितु मानसिक भी।**

इनमें से विभिन्न प्रकार के रोगों का कोई स्थाई इलाज नहीं है, वरन ये रोग दवाओं के माध्यम से दबा दिये जाते हैं या फिर रोग को उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को दवाओं के माध्यम से निष्क्रिय कर देते हैं, लेकिन पुन: कुछ समय के बाद दूषित वातावरण पाकर वह रोग पुन: उभर आता है या फिर दवाओं के नियमित प्रयोग से अनेक व्याधियां निर्मित हो जाती हैं, जिससे एक प्रकार से रोगों की श्रृंखला निर्मित हो जाती है, एक रोग समाप्त होता है, कि दूसरे रोग के लक्षण दिखने लग जाते हैं। वर्तमान चिकित्सा कुछ इस प्रकार की ही है।

लेकिन हम पूर्वकाल की ओर लौटें, तो हम पायेंगे, कि उस समय लोग वर्तमान समय से ज्यादा स्वस्थ थे, वे न केवल स्वस्थ थे अपितु प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूर्ण आयु पूरे हिम्मत, जोश और उमंग के साथ जीता था, लेकिन वर्तमान युग में 40 या 45 वर्ष पूरा करते ही व्यक्ति में धीरे-धीरे जीवन की आशा क्षीण हो जाती है। 55 या 60 वर्ष की आयु तक, तो वह स्वयं वृद्ध तथा जर्जर अवस्था में पहुँच जाता है, उसके अन्दर का जोश, उमंग, उल्लास समाप्त हो जाता है, वह सिर्फ देह की समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगता है। मानसिक रूप से भी वह स्वयं को अशक्त तथा असहाय अनुभव करने लगता है।

जीवन में रोग आने पर उसका समाधान तो प्रत्येक व्यक्ति करता ही है लेकिन धन्वन्तरी साधना से जीवन में वह स्थिति आ जाती है कि रोग देह में प्रवेश कर ही नहीं सकते हैं। और जीवन रोग मुक्त, बल युक्त और योग युक्त बन सकता है।

**इस साधना में अपने परिवार के अन्य सदस्यों बालक आदि के नाम से संकल्प लेकर उनके लिए भी यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं। इस वर्ष धन्वन्तरी जयन्ती 23.10.22 के दिन है। यदि इस दिन साधना न कर सकें तो इस दिन संकल्प अवश्य ले लें और साधना अगली त्रयोदशी को भी सम्पन्न कर सकते हैं।**

आज मानव इस प्रकार का जीवन जी रहा है, कि उसे ज्ञात ही नहीं होता है, कब उस पर यौवनकाल आता है, कब उसकी शैशवास्था समाप्त हो जाती है, कब वह प्रौढ़ बन जाता है। यदि सर्वेक्षण किया जाए तो मानव के अन्दर का उल्लास, जोश मात्र 25 या 35 वर्ष की अवस्था तक ही रहता है।

लेकिन हम यदि अपने पूर्वजों को देखें, तो वे 100 वर्ष आयु पूर्ण करके भी थके नहीं, जीवन से निरुत्साहित नहीं हुए।

आखिर क्या कारण है, कि हमारे पूर्वज दीर्घायु होते थे, उनकी कार्य क्षमता आज के व्यक्ति से कही अधिक थी, क्योंकि उनके पास ऐसी चिकित्सा पद्धति थी, जिसका वे प्रयोग कर अपनी बीमारियाँ ठीक कर लेते थे। ऐसा तो नहीं है, कि वे रोगग्रस्त नहीं होते थे, रोग तो पहले भी थे। भगवान कृष्ण के दो पुत्रों को कुष्ठ रोग हुआ था, जिसे उन्होंने मंत्रों के माध्यम से समाप्त किया।

आज भी आदिवासी क्षेत्रों में जहाँ आधुनिक सुविधायें नहीं पहुँच सकी हैं, वहां पर रोगों का इलाज मंत्रों के माध्यम से तथा उनके अपने प्रयोगों के माध्यम से होता है तथा वे प्रयोग पूर्ण रूप से प्रभावी होते हैं। लेकिन चिकित्सा विज्ञान इसको स्वीकार कर पाने में असमर्थ है। वह मंत्र शक्ति के उपयोग को भली प्रकार से नहीं जान पाया है। मंत्र साधना बल से जर्जर देह को भी अपने आपको पूर्ण स्वस्थ किया जा सकता है।

अभी भी कुछ ऐसी साधनाएँ हैं, जिनको सम्पन्न कर आज भी संन्यासी शून्य कन्दराओं में रहने के बाद भी स्वस्थ रहते हैं। उनके पास ऐसी ही साधनाओं में एक अद्वितीय रोग मुक्ति हेतु साधना है–धन्वन्तरी सिद्धि प्रयोग।

जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति समस्त प्रकार के रोगों से दूर रह सकता है। यह प्रयोग हमारे ऋषियों की ओर से हमें वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ है। यह प्रयोग एक अत्यन्त उच्चकोटि के योगी के द्वारा प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया, कि यह प्रयोग अत्यन्त विलक्षण प्रयोग है। धन्वन्तरी अपने काल के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक व आयुर्वेदज्ञ रहे हैं। धन्वन्तरी ने अपने काल में भयानक से भयानक रोगों को समाप्त किया है। उन्होंने यह भी बताया है, कि अनेक ऋषियों, संन्यासियों ने इस साधना को सम्पन्न कर अपने आपको निरोगी रखा।

इस साधना को सम्पन्न करने वाला व्यक्ति सदैव ही प्रसन्न और जोशीला तथा उत्साहित रहता है, उसकी कार्य क्षमता बढ़ जाती है तथा रोग उसके पास नहीं फटकते हैं।

## साधना विधान

इस साधना में आवश्यक सामग्री धन्वन्तरी यंत्र, अश्मिनी तथा धन्वन्तरी माला है।

इस साधना को आप धनवन्तरी जयंती 23.10.22 के दिन या फिर किसी भी माह की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को सम्पन्न कर सकते हैं।

यह एक दिन की साधना है। यह साधना सम्पन्न करने वाला साधक उस दिन एक समय अन्न ग्रहण करे या फलाहार लें। नित्य साधना प्रारम्भ करने से पूर्व 5 आवृति प्राणायाम करें। साधक यदि साधना सम्पन्न करने के लिये एक बार आसन पर बैठे, तो फिर मंत्र जप पूर्ण करके ही आसन से उठे। यदि बीच में उठे, तो पुन: हाथ-पैर मुंह धोकर ही आसन पर बैठे। साधना करते समय मन एकाग्रचित ही रखें। साधक यथासम्भव कम बोले।

साधक जिस स्थान पर साधना करे, उस स्थान को साफ, स्वच्छ करे तथा स्वयं भी स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें। साधक स्वयं के लिये, पीले रंग का ऊनी आसन ले।

सामने पीले रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर 'धन्वन्तरी यंत्र' को स्थापित करे, यंत्र का पूजन पंचोपचार विधि से करे। यंत्र की बायीं ओर कुंकुम से रंग कर चावल की ढेरी बनाकर उस पर 'अश्मिना' स्थापित करे। अश्मिना का पूजन कर, घी का दीपक लगावे।

धन्वन्तरी का ध्यान करते हुए यंत्र पर पुष्प अर्पित करे–

सत्यं च येन निरतं रोगं विधूतं, अन्वेषितं च सविधिं
आरोग्यमस्यागूढं निगूढं औषध्यरूपम,
धन्वन्तरी च सततं प्रणमामि नित्यं।।

धन्वन्तरी माला से निम्न मंत्र की नित्य 21 माला मंत्र जप करें–

**मंत्र**

**।। ॐ रं रुद्र रोगनाशाय धन्वन्तर्यै फट्।।**

मंत्र जप अनुष्ठान के पश्चात साधना सामग्री को एक मिट्टी के पात्र में रख दें, फिर प्रतिदिन एक माला मंत्र जप करें, और अगली त्रयोदशी को जिस दिन साधना समाप्त हो रही हो, उस दिन ही मिट्टी के पात्र में यंत्र, अश्मिना तथा माला रख कर उमसें दो मुट्ठी चावल रखें और उसे नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट-550/-
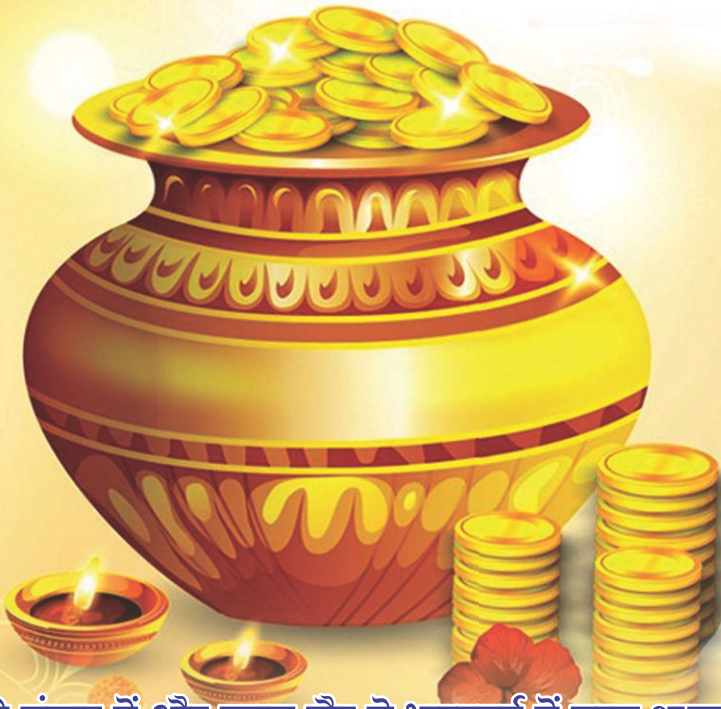
# दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग

**यों तो संसार में और खास तौर से भारतवर्ष में मन्त्र शास्त्र और तांत्रिक ग्रन्थों में लक्ष्मीप्राप्ति से संबंधित सैकड़ों प्रयोग हैं, जिनमें श्रीयन्त्र, कनकधारा प्रयोग और अन्य छोटे-मोटे प्रयोग हैं परन्तु विश्व का अद्वितीय धन-प्रदायक प्रयोग दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग ही है, जिसकी तुलना हो ही नहीं सकती।**

## दक्षिणावर्ती शंख

जब समुद्र मंथन हुआ तो उसमें से चौदह रत्न निकले उसमें भगवती लक्ष्मी का जन्म हुआ, साथ ही दक्षिणावर्ती शंख का जन्म भी समुद्र से हुआ, इसलिए इसे लक्ष्मी का सहोदर माना जाता है। मूलतः समुद्र में जितने भी शंख पाये जाते हैं, वे वामवर्त शंख होते हैं परन्तु यह प्रकृति का चमत्कार ही है– ऐसे दक्षिणामुखी शंख। जो कि बहुत कम पाये जाते हैं।
दक्षिणावर्ती शंख को लक्ष्मी का रूप माना गया है,
जिस घर में ऐसा मंत्र सिद्ध शंख स्थापित हो तो वहाँ आर्थिक दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता।

## दक्षिणावर्ती शंख कल्प : कुछ विचार

**भारतवर्ष के तन्त्र और मन्त्र ग्रन्थों में दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग भरे पड़े हैं परन्तु दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग लगभग गोपनीय ही रहा है, यद्यपि इसके बारे में प्रसिद्ध महत्वपूर्ण ग्रन्थों में उल्लेख आया है, कुछ विचार मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूँ।**

1. लक्ष्मी को प्राप्त करना और उसे स्थायी रूप से घर में निवास देने का एक मात्र प्रयोग दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग ही है जो कि अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से धन देने में समर्थ है, इसके माध्यम से ऋण, दरिद्रता और अभाव मिट जाता है तथा सभी दृष्टियों से पूर्णता और सम्पन्नता आ जाती है।–महर्षि पुलस्त्य–'पुलस्त्य संहिता से'
2. यों तो मैंने अपने जीवन में लक्ष्मी से संबंधित सभी प्रयोग सम्पन्न किये हैं, पर दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है, अपने आप में अद्वितीय है, धन वर्षा करने और सुख समृद्धि प्रदान करने में उसकी कोई तुलना नहीं है।–महर्षि विश्वामित्र–'विश्वामित्र संहिता' से
3. दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग सभी प्रकार से दरिद्रता, सुख, दैन्य और अभाव को मिटाने में समर्थ है, यह जीवन में आश्चर्यजनक रूप से धन प्रदान करने और पूर्ण सफलता देने में समर्थ है, यह एकमात्र प्रयोग है, जो आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्रदान करता है।–'लक्ष्मी संहिता' से
4. भगवती लक्ष्मी के सभी प्रयोगों में दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग उज्वल रत्नों का सागर है।–महर्षि मार्कण्डेय
5. यदि दक्षिणावर्ती शंख कल्प मिल जाय और फिर भी व्यक्ति इस प्रयोग को सम्पन्न नहीं करे तो वह वास्तव में अभागा ही कहा जायेगा, यह तो जीवन का सौभाग्य है, सत्कर्मों का उदय है, लक्ष्मी प्राप्ति का सर्वोत्तम उपाय है।–भगवत्पाद शंकराचार्य
6. दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग श्रेष्ठ तांत्रिक प्रयोग है, जिसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, मैंने इस प्रयोग को किया है और अपने शिष्यों को सम्पन्न करवाया है, हर बार मुझे इसके द्वारा पूर्ण सफलता मिली है।–गुरु गोरखनाथ 'गौरक्ष संहिता' से

ऊपर मैंने कुछ श्रेष्ठ महर्षियों के उद्गार प्रस्तुत किये हैं और इनके माध्यम से यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तव में ही दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग कितना अद्भुत है, आश्चर्यजनक है, सिद्धिदायक है।

## आयुर्वेद की दृष्टि से

**आयुर्वेद की दृष्टि से दक्षिणावर्ती शंख का विशेष महत्व है, इस शंख की संरचना ही कुछ इस प्रकार से है कि इसमें जल रखने पर उस जल में शंख के सहयोग से कुछ विशेष प्रतिक्रिया हो जाने से वह जल विशेष प्रभाव युक्त होजाता है।**

1. यदि बड़े दक्षिणावर्ती शंख (ऐसा शंख जिसमें आधा किलो पानी समा सके) में रात्रि को सोते समय जल भर कर रख दें तथा प्रातःकाल इस जल को निकाल कर पानी से भरी बाल्टी में उस जल को मिलाकर स्नान किया जाय तो कुछ ही दिनों में उस व्यक्ति के चर्म रोग स्वतः समाप्त हो जाते हैं और वह निर्मल-रोग रहित हो जाता है।
2. इसी प्रकार इस शंख में बारह घण्टे जल भर कर वह जल यदि दिखाई देने वाले सफेद दागों पर लगायें और ऐसा कुछ समय तक करें तो धीरे-धीरे ये सफेद दाग समाप्त हो जाते हैं और नैसर्गिक रूप से शरीर से मेल खाती हुई चमड़ी वहाँ प्राप्त हो जाती है।
3. रात्रि को इस शंख में जल भर कर रख दें, प्रातःकाल इस जल में कुछ गुलाब जल मिला दें और उसे अपने बालों में लगावें तो धीरे-धीरे सफेद बाल काले हो जाते हैं और स्थायी रूप से काले रहते हैं।
4. यदि पेट में तकलीफ या आंतों में सूजन हो, अथवा आंतों में किसी प्रकार का जख्म हो तो इस प्रकार बारह घण्टे तक शंख में रखे हुए जल का एक चम्मच नित्य पान करे तो धीरे-धीरे आंतों का जख्म मिट जाता है, और पेट से सम्बन्धित रोग समाप्त हो जाता है।
5. लगभग बारह घण्टे तक रखा हुआ जल दूसरे सामान्य जल में मिलकार यदि प्रातःकाल आंखों पर वह जल छिड़का जाय तो आंखें निरोग, स्वस्थ और तन्दुरुस्त हो जाती हैं, यदि कुछ समय तक इसका नियमित अभ्यास करें तो आँखों पर लगा हुआ नजर का चश्मा उतर जाता है और आँखें सामान्य, स्वस्थ हो जाती हैं।

## धार्मिक दृष्टि से

**धार्मिक दृष्टि से इस शंख को लक्ष्मी का प्रिय आभूषण बताया है, और एक प्रकार से लक्ष्मी का ही प्रिय रूप माना जाता है, अतः जिसके घर के पूजा स्थान में यह शंख रहता है, उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी का वास बना रहता है।**

1. यदि इस प्रकार के शंख को कारखाने में या फैक्ट्री में स्थापित किया जाय, तो स्वतः ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है, और आर्थिक उन्नति होने लगती है, इस शंख को विशेष रूप से दारिद्रय निवारक कहा जाता है, और इसके रहने से उसके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

दक्षिणावर्ती शंख के महत्व को यदि लिखा जाय, तो बहुत बड़ा ग्रन्थ तैयार हो सकता है, अपने लम्बे समय के अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूँ, कि यह शंख लक्ष्मी का ही दूसरा स्वरूप है, और प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में इस प्रकार का शंख रखना चाहिए।

***

यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त होता है, ऐसे बिरले ही सौभाग्यशाली होंगे, जिनके घर में इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता होगा, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि दक्षिणावर्ती शंख तभी ही सफलता देने वाला हो सकता है, जब वह प्राण संजीवनी क्रिया से सिक्त मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

## दैहिक

1. मेरा ऐसा अनुभव है, कि यदि प्रात:काल स्नान कर शरीर को पोंछकर इस शंख को अपने चेहरे पर हलके-हलके रगड़ें तो धीरे-धीरे चेहरे की झुर्रियाँ मिट जाती हैं, और चेहरा कांतिमय बन जाता है।
2. जिनको अपने चेहरे की सुन्दरता को यथावत बनाये रखने की इच्छा हो या जो अपने चेहरे को कांतियुक्त बनाये रखना चाहता हो, उसे इस प्रकार का प्रयोग अवश्य ही करते रहना चाहिए।
3. यदि इस शंख को पूरे शरीर पर हल्के-हल्के फेरा जाय और कुछ दिनों तक ऐसा प्रयोग किया जाय, तो अवश्य ही पूरा शरीर स्वस्थ, सुन्दर एवं लावण्यमान बन जाता है।
4. कभी-कभी आँखों के नीचे काले-काले से दाग बन जाते हैं, जिससे चेहरे की सुन्दरता समाप्त हो जाती है, यदि इस शंख को नित्य प्रात:काल उठकर आँखों के नीचे धीरे-धीरे फेरा जाय, और इस प्रकार कुछ दिनों तक करे तो अवश्य ही ये दाग समाप्त हो जाते हैं, ऐसा मेरा अनुभव है।

इस शंख के तीन भेद हैं--

1. उत्तम-जिस शंख में आधा किलो या उससे अधिक पानी समा सके, उसे उत्तम कोटि का दक्षिणावर्ती शंख कहा जाता है।
2. मध्यम-जिसमें आधा किलो के लगभग पानी आ सके उसे मध्यम स्तर का दक्षिणावर्ती शंख कहा जाता है।
3. सामान्य-इससे छोटे शंख सामान्य दक्षिणावर्ती शंख कहलाते हैं।

विशेषकर आर्थिक, व्यापारिक उन्नति के प्रयोग में मध्यम या उत्तम स्तर का दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग में लिया जाना चाहिए।

## अनुष्ठान

**इस शंख पर कई प्रकार के अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं, मेरा मूलत: यह अनुभव है, कि लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित अनुष्ठान इस पर पूर्ण सफल और प्रभावकारी होते हैं, मैं अपने दो अनुभूत प्रयोग नीचे स्पष्ट कर रहा हूँ।**

# दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग

**यह शंख लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में विशेष रूप से सहायक है, कर्जा उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावयुक्त है। जो व्यक्ति इस प्रकार का प्रयोग चाहता है, या अपने जीवन में पूर्ण आर्थिक उन्नति एवं व्यापार वृद्धि चाहता है, उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।**

## प्रयोग

**धन त्रयोदशी के दिन या किसी भी बुधवार को प्रात:काल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दें, और उस पर केसर से स्वस्तिक चिह्न बना दें, इसके बाद निम्न मन्त्र जाप करें।**

**मंत्र**

**।। ॐ श्रीं ह्रीं दारिद्र्य विनाशनी धनधान्य समृद्धिं देहि देहि कुबेर शंख विध्ये नमः।।**

इस मन्त्र को पढ़ता जाय और चावल के कुछ दाने इसके मुंह में डालता रहे, लगभग दो घण्टे तक इस मंत्र का जाप करना है, इसमें संख्या निर्धारित नहीं है, और यह भी आवश्यक नहीं है, कि कितने मन्त्र जप हों, इतना ही पर्याप्त है, कि लगभग दो घण्टे तक कोई भी व्यक्ति या महिला उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए सामने रखे मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य दक्षिणावर्ती शंख के मुंह में कुछ दाने डालता रहे, जब मुंह चावलों से भर जाय, तब मंत्र प्रयोग बंद कर दे, और चावलों के दानों के साथ इस शंख को लाल वस्त्र में बांध कर अपने घर के पूजा स्थान में रख दे या कारखाने, फैक्ट्री अथवा व्यापारिक स्थल पर स्थापित कर दे। यह सौभाग्यशाली शंख वहाँ जब तक रहेगा, तब तक उसके जीवन में निरन्तर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी, यह भी स्पष्ट है, कि ऐसा प्रयोग करने पर शीघ्र ही व्यक्ति कर्जे से मुक्ति पा लेता है, और सभी दृष्टियों से उन्नति करता हुआ पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है। दीपावली के दिन भी इस शंख का पूजन किया जा सकता है और जिस प्रकार लक्ष्मी पूजा होती है, उसी प्रकार इसका पूजन किया जाना चाहिए। वस्तुत: यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त है तथा ऐसे बिरले ही सौभाग्यशाली होंगे, जिनके घर में इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता है, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि इस प्रकार का शंख तभी सफलता देने वाला हो सकता है, जब वह प्राण संजीवनी प्रक्रिया से सिक्त मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो। वस्तुत: यह शंख प्रत्येक साधु-संन्यासी और गृहस्थ के लिए उपयोगी है, मैंने इस पर कई प्रयोग सम्पन्न किये हैं, जिनमें से एक प्रयोग आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

# गृहस्थ सुख प्रयोग

**यदि घर में पति-पत्नी में मतभेद हो या गृहस्थ में कोई समस्या हो, घर में बड़ी लड़की का विवाह नहीं हो रहा हो, तो इस महत्वपूर्ण प्रयोग को किसी भी पूर्णिमा के दिन सम्पन्न किया जा सकता है।**

इस दिन प्रात:काल सूर्योदय के समय सामने पीला वस्त्र बिछाकर उस पर मध्यम या उत्तम स्तर का **दक्षिणावर्ती शंख** रख दें और उसकी पीठ पर केसर से निम्नलिखित यन्त्र अंकित कर दें--

| | | |
|---|---|---|
| १११ | ३३३ | ५५५ |
| २२२ | ९९९ | ७७७ |
| ६६६ | ४४४ | ८८८ |

इसके बाद उसके सामने हाथ जोड़कर अपनी समस्या रखें जिस समस्या की वजह से उसका गृहस्थ जीवन डांवाडोल हो या जिस परेशानी से मुक्ति नहीं मिल रही हो।

इसके बाद उस यन्त्र-अंकित दक्षिणावर्ती शंख को उसी बिछे हुए कपड़े में बांध कर पूजा स्थान में रख दें, और उसे वहाँ तब तक रहने दें, जब तक कि उस समस्या का निदान न हो जाए एवं नित्य 5 मिनट निम्न मंत्र का जप करते रहें-

**मंत्र**

**।। ॐ ह्रीं मम बाधा निवारणाय ह्रीं ॐ।।**

ऐसा करने से ही घर में सुख-शांति हो जाती है, और कार्य सिद्धि प्राप्त होती है, मैंने इस यन्त्र के द्वारा घर के और गृहस्थ के कई कार्य भली प्रकार सम्पन्न किये हैं, और सफलता पाई है।

इसके अलावा भी अन्य परीक्षित प्रयोग हैं, जो मैंने अपने जीवन में विभिन्न समस्याओं को दूर करने में प्रयोग किये हैं, और सफलता पाई है।

**एक शंख पर एक से अधिक प्रयोग सम्पन्न किये जा सकते हैं, और इस प्रकार का शंख तो कई पीढ़ियों तक घर में सुरक्षित रहता है, दीपावली के दिन यदि दक्षिणावर्ती शंख की पूजा की जाय, तो उसे अतुलनीय सफलता प्राप्त होती है।**

प्रयोगों में सफलता असफलता प्रयोग कर्त्ता के श्रद्धा और विश्वास पर आधारित होती है, अत: इस प्रकार के प्रयोग यदि पूर्ण श्रद्धा के साथ किये जाय तो अवश्य ही सफलता मिलती है।

**सामान्य शंख- 1100/-, मध्यम शंख- 2100/-**

25.10.22

# कार्तिक अमावस्या

# ग्रस्तास्त खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

यह ग्रहण लगभग सम्पूर्ण भारत में (पूर्वोत्तर के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर) ग्रस्तास्त खण्डग्रास ग्रहण के रूप में दिखाई देगा अर्थात् ग्रहण का मोक्ष होने के पूर्व ही सूर्यास्त हो जाएगा।

भारतवर्ष में इस ग्रहण की व्याप्ति 4.15 शाम से 6.15 शाम तक रहेगी। इसी समय के मध्य में अन्य सभी शहरों का स्पर्श एवं मोक्ष का समय अलग-अलग रहेगा। क्योंकि भारत में यह ग्रहण ग्रस्तास्त है अतः सूर्यास्त ही इस ग्रहण का समाप्ति काल होगा आगे दिये गये चित्र में च से छ रेखा के बीच आने वाले भाग में ही यह ग्रहण दिखाई देगा। जैसा कि ऊपर लिखा है कि पूर्वोत्तर के कुछ क्षेत्रों में दृश्य नहीं होगा। भौमवती अमावस्या को यह ग्रहण घटित होने से इस दिन तीर्थ स्नान, दान, तर्पण, मंत्र जप आदि का विशेष महात्म्य होगा। ग्रहणकाल में दान, जप, साधना, स्तोत्र पाठ आदि कार्य करना लाभकारी होता है। सूर्य मंत्र एवं सूर्य स्तोत्र का विशेष महत्व है।

| दिल्ली में | |
|---|---|
| ग्रहण प्रारम्भ | - 04.29 शाम |
| मध्य (परम ग्रास) | - 05.30 शाम |
| ग्रहण समाप्त | - 05.39 शाम |
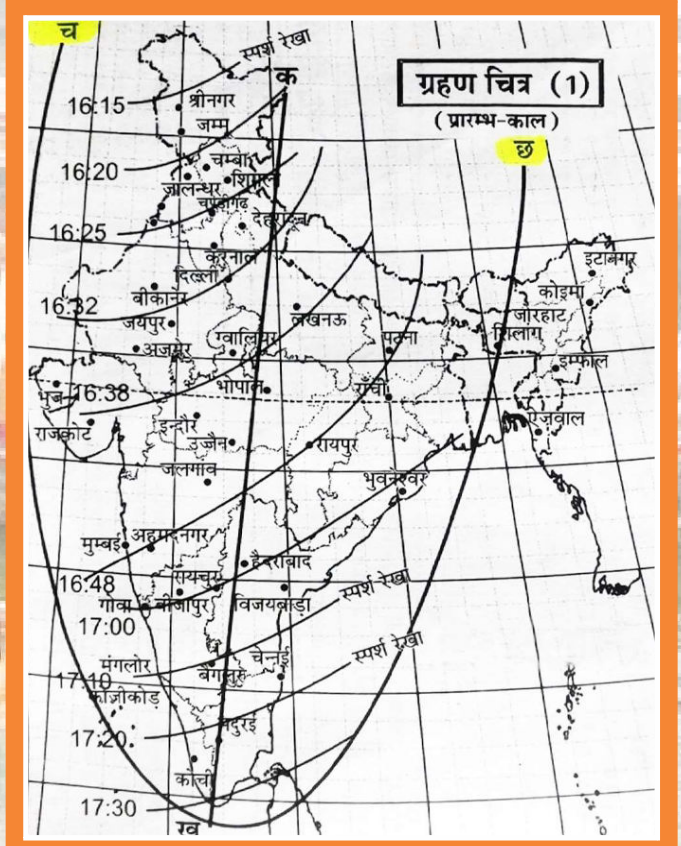
8 नवम्बर 2022 को भी ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण है, जिसका विवरण अगले माह की पत्रिका में दिया जायेगा।

# फेत्कारिणी प्रयोग

(किसी भी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग आदि को दूर करने की सफल साधना)

**शत्रु और ईर्ष्यालू दूसरों की उन्नति नहीं देख सकते। जब वे स्वयं परिश्रम कर उस प्रकार से सफलता प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाते तब वे किसी अन्य उपाय से दूसरों को नुकसान पहुंचाने की चेष्टा करते हैं।**

**इसमें वे तंत्र-मंत्र का सहारा लेते हैं और**
**इसके माध्यम से व्यक्ति को बीमार बना लेना, घर में निरन्तर कलह रहना,**
**पति-पत्नी में मतभेद, परिवार के सदस्यों की अकाल मृत्यु,**
**व्यापार में हानि होना, समय पर कार्य सम्पन्न न होना,**
**भाग्योदय में बाधाएं आदि प्रयोगों से व्यक्ति का जीवन छिन्न-भिन्न करने की कोशिश करते हैं।**

ऐसी स्थिति में यह प्रयोग रामबाण की तरह कार्य करता है। इस प्रयोग को करने से यदि उस पर या उसके सदस्यों पर अथवा व्यापार पर किसी प्रकार का कोई प्रयोग किया हुआ होता है तो वह दूर हो जाता है और उसकी वापिस उन्नति होने लग जाती है।

मेरी राय में तो यह प्रयोग प्रति वर्ष साधकों को कर लेना चाहिए, जिससे कि किसी प्रकार की कोई विपत्ति या बाधा न रहे। यह प्रयोग मात्र तीन दिन का है। किसी भी शनिवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए। प्रातःकाल उठकर स्नान, सन्ध्यादि से निवृत्त होकर सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त तांत्रोक्त नारियल रख दें और उस पर कुंकुम से तिलक करें और फिर हाथ में जल लेकर कहें कि मैं यह साधना सम्पन्न कर रहा हूँ, मुझ पर मेरे घर या मेरे परिवार अथवा व्यापार पर किसी प्रकार का दोष, तांत्रिक प्रयोग या पितृ दोष आदि हो तो वह समाप्त हो जाए और मेरी पुनः उन्नति प्रारम्भ हो।

तत्पश्चात् मूंगे की माला से निम्न मंत्र की 11 मालाएं फेरें-

**मंत्र**

**।। ॐ क्लीं मम समस्त शत्रूणां दोषान् निवारय क्लीं फट् स्वाहा।।**

इस प्रकार तीन दिन तक मंत्र प्रयोग करें और उसके बाद वह माला और तांत्रोक्त नारियल घर के बाहर किसी स्थान पर या किसी निर्जन स्थान पर गड्ढ़ा खोदकर जमीन में गाड़ दें।

ऐसा करने पर वह दोष दूर हो जाता है और उसके जीवन में पुनः उन्नति होने लग जाती है। यह प्रयोग अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इससे साधक को और उसके परिवार को सफलता मिलने लगती है।

साधना सामग्री--450/-

# सर्वोन्नति प्रयोग

**यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है कर्जा उतारने, कहीं रकम रुक गई हो, उसे प्राप्त करने, व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति, रोग मुक्ति आदि सभी कार्यों और सर्वोन्नति हेतु यह प्रयोग लाभदायक रहा है।**

## सामग्री

**सर्वमनोकामना पूर्ति यंत्र, रुद्राक्ष माला**

यह प्रयोग दीपावली वाले दिन, आने वाले ग्रहण काल में या बुधवार या किसी सिद्ध योग में कर सकते हैं। साधक पीले आसन पर उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जाएं फिर एक ताम्र प्लेट में गुलाब की पंखुड़ियां बिछाकर उस पर मनोकामना यंत्र स्थापित कर दें। साथ ही दीपक एवं धूपबत्ती जलायें। फिर यंत्र का अष्टगंध एवं अक्षत से पूजन करें। तत्पश्चात् 1 माला गुरु मंत्र का जप करें। फिर रुद्राक्ष की माला से पांच माला निम्न मंत्र का जप करें।

## मंत्र

**॥ ॐ महायक्षाय मम सर्वोन्नति सिद्धिं देहि दापय स्वाहा ॥**

मंत्र जप पूरा होने पर यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें और नित्य उसके सामने दीपक एवं धूपबत्ती लगायें।

इस साधना से साधक के जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति होती है। उसके रुके कार्य धीरे-धीरे पूरे होने लगते हैं। साधक चाहे तो बाद में भी यंत्र के समक्ष एक माला जप कर सकता है। किसी भी प्रकार की कार्य सिद्धि के लिए यह प्रयोग सर्वथा उपयुक्त है। साधक को चाहिए कि विशेष तिथियों का उपयोग इस साधना हेतु अवश्य करें।

साधना सामग्री- 600/-

कार्तिक मास में सम्पन्न करें

# अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग

(जीवन में समस्त प्रकार की उन्नति के लिए श्रेष्ठ साधना)

**जीवन में स्वस्थ शरीर, धन, साहस, शक्ति, भवन, संतान, पत्नी सुख, दीर्घायु, भाग्योदय, व्यापार वृद्धि, नौकरी में उन्नति, विदेश यात्रा और अन्य कई प्रकार की पूर्ति को 'अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग' कहा जाता है।**

**प्रत्येक साधक को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। क्योंकि इस प्रयोग को सम्पन्न करने से जीवन में साधक सभी प्रकार से उन्नति करने में सक्षम हो पाता है तथा पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है।**

कार्तिक मास में यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। यह प्रयोग मात्र 3 दिन का है और अपने आप में आश्चर्यजनक सफलता देने में सहायक है।

किसी भी बुधवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रातःकाल उठकर साधक स्नान आदि कर सामने किसी पात्र में **अखण्ड लक्ष्मी यन्त्र** रख दें, जो मन्त्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, फिर जल से स्नान करा कर यन्त्र को पोंछें और उस पर केसर से तिलक करें। इसके बाद **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र का जप करें।

**मंत्र**

**।। ॐ ह्रीं अष्ट लक्ष्म्यै नमः ।।**

**नित्य 11 मालाएं फेरनी आवश्यक है। इस प्रकार तीन दिन तक इस मंत्र का जप करें। जब साधना सम्पन्न हो जाय तो इस यंत्र को घर में किसी स्वच्छ स्थान पर या अपनी तिजोरी में रख दें, ऐसा करने पर साधना सम्पन्न होती है और उसे जीवन में पूर्ण भौतिक तथा सभी प्रकार के सुख प्राप्त होने लगते हैं।**

**वास्तव में ही यह साधना उच्चकोटि की साधना है और प्रत्येक साधक को इस समय का उपयोग करना चाहिए और इससे लाभ उठाना चाहिए।**

साधना सामग्री-550/-

# योग का महत्व

योग जीवन को सार्थक बनाने वाले साधनों में उत्तम साधन है। इसका महत्त्व तो इसी से जाना जा सकता है कि यह मनुष्य को सभी प्रकार के आवरणों और विक्षेपों से सदा के लिये मुक्त करता हुआ ऐसा विशुद्ध अन्तःकरण वाला बना देता है कि परमात्मा से उसका अभिन्न सम्बन्ध अपने-आप स्थापित हो जाता है। श्रीमद्भगवद् गीता (5/7) में भगवान् श्रीकृष्ण का कथन है-

**योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।**
**सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।।**

अर्थात् 'योग से युक्त, विशुद्ध अन्तःकरण वाला विजितात्मा - शरीरजयी, जितेन्द्रिय और सब भूतों में अपने आत्मा को देखने वाला यथार्थ ज्ञानी हो जाता है। इस प्रकार स्थित हुआ पुरुष लोकसंग्रह के लिये कर्म करता हुआ भी उनसे लिप्त नहीं होता अर्थात् कर्मों से नहीं बँधता।

वस्तुतः योग तन को सुगठित, मन को नियन्त्रित और आत्मा को उद्भासित करता है। यह सभी अभ्युत्थानों का सबसे मुख्य आधार एवं सारस्वत उपलब्धि का अक्षुण्ण स्रोत है। इसके नियमित अभ्यास से मनुष्य के सारे संशय दूर हो जाते हैं। फिर तो वह जीवन के चरम लक्ष्य को ही प्राप्त कर लेता है-अपनी ऊँचाई के चरम बिन्दु पर पहुँच कर योग आत्मा और परमात्मा के मिलन का अप्रतिम माध्यम बन जाता है-

**यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः।**
**अथ मर्त्योऽमृतो भवत्येतावद्ध्यनुशासनम्।।**

(कठोपनिषद् 2/3/15)

योगाभ्यास से जब साधक के हृदय की अहंता-ममता रूप समस्त ग्रंथियाँ भलीभांति कट जाती हैं, उसके सब प्रकार के संशय सर्वथा नष्ट हो जाते हैं और उसे यह दृढ़निश्चय हो जाता है कि 'परमेश्वर अवश्य हैं और वे निश्चय ही मिलते हैं', तब वह इस शरीर में रहते हुए ही परमात्मा का साक्षात्कार करके अमर हो जाता है। वह स्वरूपावस्था को प्राप्त कर लेता है।

तत्त्वदर्शी महर्षियों ने परमात्मा की प्राप्ति का सर्वोत्तम उपाय 'ध्यान' अर्थात् 'योग' ही बताया है-

**ध्याननिर्मथनाभ्यासाद् देवं पश्येन्निगूढवत्।।**

(श्वेता.उप. 1/14)

योग के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने उद्धवजी को यही समझाया कि - प्रिय उद्धव! मैंने ही वेदों में एवं अन्यत्र भी मनुष्यों का कल्याण करने के लिये अधिकारिभेद से तीन प्रकार के योगों - ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग का उपदेश किया है। मनुष्य के परम कल्याण के लिये इनके अतिरिक्त और कोई उपाय कहीं नहीं हैं-

**योगास्त्रयो मया प्रोक्ता नृणां श्रेयोविधित्सया।**
**ज्ञानं कर्म च भक्तिश्च नोपायोऽन्योऽस्ति कुत्रचित्।।**

(श्रीमद्भा. 11/20/6)

यह तो सर्वमान्य सिद्धान्त है कि मन ही बन्धन और मोक्ष का मूल कारण है - 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।' ऐसी स्थिति में आवश्यकता है मन को अनुरूपता प्रदान करने की, जिससे भटकाव की स्थिति

**इस जीवात्मा का वास्तविक स्वरूप अनेक जन्मों में किए हुए कर्मों के संस्कारों से मलिन हो जाने के कारण प्रत्यक्ष प्रकट नहीं होता, परंतु जब मनुष्य ध्यान योग के साधन द्वारा समस्त मलों को धोकर आत्मा के यथार्थ स्वरूप को भलीभांति प्रत्यक्ष कर लेता है, तब वह असंग हो जाता है।**

उत्पन्न ही न हो। तात्पर्य यह है कि योग - साधना द्वारा मन को निरन्तर ईश्वरोन्मुख करने का ही प्रयत्न वांछनीय है।

**युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे।**
**स्वर्ग्याय शक्त्या।।**

(शुक्लयजुर्वेदसंहिता 11/2)

योग का वैशिष्ट्य है कि उसकी साधना की ज्योति में आत्मतत्त्व द्वारा परब्रह्म परमात्म-तत्त्व की प्राप्ति हो जाती है, फिर तो उसके सामने किसी प्रकार के बन्धन के रहने का कोई प्रश्न ही नहीं रह जाता। जिस प्रकार कोई तेजोमय रत्न मिट्टी से लिप्त रहने के कारण छिपा रहता है, अपने असली रूप में प्रकट नहीं होता, परंतु वही जब मिट्टी आदि को हटाकर धो-पोंछकर साफ कर लिया जाता है, तब अपने असली रूप में चमकने लगता है, उसी प्रकार इस जीवात्मा का वास्तविक स्वरूप अनेक जन्मों में किए हुए कर्मों के संस्कारों से मलिन हो जाने के कारण प्रत्यक्ष प्रकट नहीं होता, परंतु जब मनुष्य ध्यान योग के साधन द्वारा समस्त मलों को धोकर आत्मा के यथार्थ स्वरूप को भलीभांति प्रत्यक्ष कर लेता है, तब वह असंग हो जाता है। अर्थात् उसका जो जड़ पदार्थों के साथ संयोग हो रहा था, उसका नाश होकर वह कैवल्य -अवस्था को प्राप्त हो जाता है तथा उसके सब प्रकार के दुःखों का अन्त होकर वह सर्वथा कृतकृत्य हो जाता है। उसका मनुष्य-जन्म सार्थक हो जाता है। उस स्थिति में वह योगी दीपक के सदृश निर्मल प्रकाशमय आत्मतत्त्व के द्वारा ब्रह्मतत्त्व को भलीभांति देख लेता है। तब उन जन्मादि समस्त विकारों से रहित, अचल और निश्चित तथा समस्त तत्त्वों से असंग-सर्वथा विशुद्ध परमदेव परमात्मा को तत्त्व से जानकर, सब प्रकार के बन्धनों से सदा के लिये छूट जाता है -

**यदाऽऽत्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं**
**दीपोपमेनेह युक्तः प्रपश्येत्।।**
**अजं ध्रुवं सर्वतत्त्वैर्विशुद्धं**
**ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः।।**

(श्वेताश्वतरोपनिषद 2/15)

निस्संदेह योगयुक्त होते ही इन्द्रियां सही रूप में विकसित होने लगती हैं - इन्द्रियों को जड़ता से ऊपर उठाने वाला अनुपम तत्त्व-योग ही है। भारतीय चिकित्साशास्त्र में भी यही सिद्धान्त निरूपित है-

**सेन्द्रियचेतनद्रव्यं निरिन्द्रियमचेतनम्।**

(आचार्य चरक)

तत्त्वतः योगाभ्यास से एक साथ अनेक लाभ होते हैं। यथा - आलस्य-त्याग आत्मबल-विस्तार, भय-संशय-निवारण, उत्साहवृद्धि, स्वास्थ्यलाभ, बौद्धिक विकास, आध्यात्मिक उन्नयन आदि। योग एक व्यवहार-परक विद्या है। इसलिये साधारण-से-साधारण व्यक्ति भी इसके अभ्यास से असाधारण लाभ उठा सकता है।

अनेक योगासन ऐसे हैं, जिन्हें अति सरलता से अपनाकर शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों का विकास किया जा सकता है। केवल प्राणायाम करने से शरीर में अतीव स्फूर्ति आ जाती है और मन भी हल्का तथा प्रसन्न रहता है। इतना होने से ही बहुमुखी विकास का द्वार खुलने लगता है, क्योंकि शरीर और मन के स्वस्थ रहने पर मनुष्य असम्भव-से-असम्भव कार्यों को भी सम्पन्न कर लेता है।

इसी प्रकार अनेक बन्ध, मुद्राएं नेति-वस्ति आदि षट्कर्मों की प्रक्रियाएं भी योग-साधना में पर्याप्त सहायक होती हैं। इनके सम्यक् अभ्यास के लिए किसी सुयोग्य अनुभवी गुरु का आश्रय लेना चाहिये।

संसार को भयंकर रोगों से मुक्त करना अथवा उनसे बचे रहने का मार्ग-दर्शन करना योगविद्या की महान् देन है। आज भी अनेक चिकित्सा-केन्द्रों में विभिन्न प्राणायामादि योगाभ्यासों द्वारा विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक रोगों की चिकित्सा की जाती है।

योग के सम्यक् अभ्यास से रोग और जरा-जन्य क्लेश का परिहार होता ही है, साधक को इच्छामृत्यु की शक्ति भी प्राप्त हो जाती है-

**न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः**
**प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्।।**

(श्वेता. 2/12)

अर्थात् योगाग्निमय शरीर को प्राप्त कर लेने वाले उस योगी शरीर में न तो रोग होता है, न बुढ़ापा आता है और न उसकी मृत्यु ही होती है।'

यह योग का ही प्रभाव है कि मनुष्य का शरीर काल के निकष पर खरा उतरकर तप्त कंचन की भांति दमकता रहता है प्राणवायु पर अधिकार कर लेने से उसका मन भी सदा के लिये परिशुद्ध हो जाता है-

**मनोऽचिरात् स्याद्विरजं**
**जितश्वासस्य योगिनः।**
**वाय्वग्निभ्यां यथा लोहं ध्मातं**
**यजति वै मलम्।।**

(श्रीमद्भा. 3/28/10)

इस प्रकार मनुष्य के सर्वांगिण विकास में योग की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। यह योग-तत्त्व चरित्र-निर्माण, चिकित्सा -विधान, सामाजिक उत्थान, राष्ट्रोन्नयन एवं विश्व-कल्याण की भावना को विकसित करने से लेकर परमात्म-साक्षात्कार तक का अप्रतिम साधन है।

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

# शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- जब तक आत्महीनता की स्थिति से बाहर नहीं आओगे तब तक अपने आपको पहचान भी नहीं पाओगे। प्रभु ने वरदान स्वरूप वे सभी गुण तुम्हें प्रदान किये हैं, जो अन्य सभी व्यक्तियों में हैं, आवश्यकता इस बात की है कि अपने गुणों को पहचानो और उसके विकास की ओर अग्रसर हो।

- शिष्य के लिए सद्गुरु भगवान स्वरूप और समदृष्टा होते हैं। वे अपनी दोनों आँखों से नहीं, अपितु अपने दिव्य चक्षु से शिष्य को देखते हैं।

- सद्गुरु के लिए प्रिय और अप्रिय शब्द नहीं होता है, उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण शिष्य ही होता है और जो शिष्य बन गया, वह कभी भी अपने गुरु से दूर नहीं हो सकता है। क्या परछाई को आकृति से अलग किया जा सकता है? शिष्य तो सद्गुरु की परछाई की भांति ही होते हैं।

- अपने आपको बलिदान कर देने में सार्थकता नहीं है, अपने को समाज के सामने छाती ठोककर खड़ा कर देना और अपनी पहचान के साथ-साथ गुरु की मर्यादा तथा सम्मान समाज में स्थापित कर देना ही तो शिष्यत्व है।

- संयम, श्रद्धा, आत्मविश्वास, प्रेम, निष्ठा और समर्पण - ये छः गुण जब स्थापित हो जाएं, तब ही जानिए कि आप सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं। कोई आपके लिए सफलता के द्वार खोल कर नहीं खड़ा है। आपको ही ये छः गुण अपने भीतर विकसित करने हैं।

- जो आप बनना चाहते हैं, वो आप बन सकते हैं लेकिन आपके विचार सकारात्मक हों और उन सकारात्मक विचारों से ही अपने भीतर की निराशा को तोड़ सकते हैं।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।
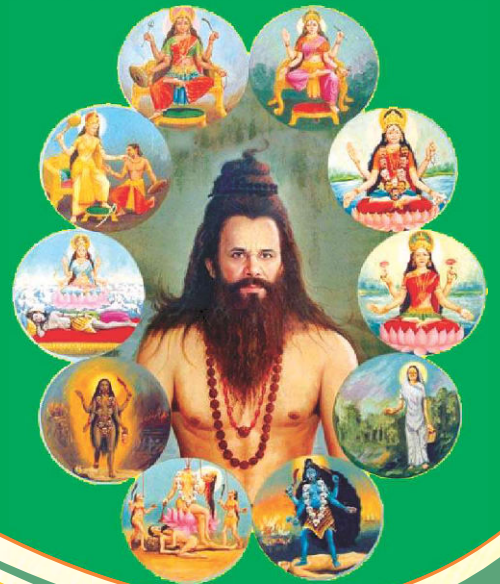
# गुरु वाणी

- इस ढंग से कोई हीरे नहीं लुटाता जिस ढंग से मैं ज्ञान लुटा रहा हूँ। यह आपका सौभाग्य है, कि मैं आपको उस जगह तक ले जाना चाहता हूँ, कि पूरे विश्व में आप विजयी हों, आप सफलता युक्त बन सकें। और मैं अपने शब्दों में दृढ़ हूँ और मैं आपको अद्वितीय बना रहा हूँ। एक सूर्य अस्त हो, तो कई और सूर्य यहां उगे हुए हैं वो रोशनी कर देंगे।

- अणु से विराट बनाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मनुष्य से देवता बनाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मूलाधार से सहस्रार तक पहुंचाने की क्रिया केवल गुरु जानता है और इसीलिए जीवन का आधार केवल और केवल गुरु ही होता है।

- गुरु से प्राणगत सम्बन्ध होने चाहिए, देहगत नहीं। यदि यहां गुरु की तबियत ठीक नहीं है और आपका मन बड़ा बेचैन होता हों, बड़ी छटपटाहट महसूस होती हो, ऐसा लगे कि कुछ खाली-खाली सा है परन्तु मालूम नहीं होता हो कि यह वेदना क्यों है, यह छटपटाहट क्यों है, किस कारण से है . . .यही तो प्राणगत और आत्मा के संबंध होते हैं।

- गुरु को पहिचानने की अत्यंत सरल प्रक्रिया है, गुरु वह है -
  - जिनके पास बैठने से मन में अपूर्व शांति का एवं आनन्द का अनुभव हो।
  - ऐसा प्रतीत हो, कि इनका और मेरा अत्यंत अंतरंग संबंध है।
  - ऐसा लगे कि इनके और मेरे बीच कोई भेद या दूरी है ही नहीं।
  - जिनके बिना जीवन व्यर्थ और बेमानी लगे।
  - वही गुरु है वही पथप्रदर्शक है।

- गुरु की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि गुरु बहुत कुछ देना चाहता है। कोई गुरु यह नहीं चाहता, कि मेरा नाम या मैं ही दुनिया में पूजा जाऊं, गुरु तो यह चाहता है, कि मैं शिष्य को समर्थ, योग्य और अद्वितीय बनाऊं, ऐसा बनाऊं जिससे वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करे। इसलिए शिष्य को आज्ञा पालन में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

दीपावली 24.10.22
महालक्ष्मी पूजन
महालक्ष्मी गणपति
पूजन विधान
दीपावली के अवसर पर जो महालक्ष्मी से
सम्बन्धित माना गया है,
उस कालरात्रि के अवसर पर
हम गणपति और
लक्ष्मी दोनों के समन्वित
पूजन विधान को प्रस्तुत कर रहे हैं।
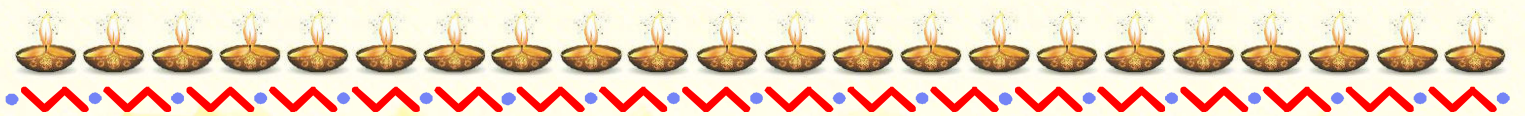
## कालरात्रि ही एक ऐसा अवसर होता है,
## जिसे व्यक्ति अपने समस्त भौतिक कार्यों के लिए शुभ तथा आरम्भ का काल मानता है।

और वह क्षण उसके लिए दीपावली पर उपस्थित हो रहे हैं। इस कालरात्रि के अवसर पर उपस्थित यह अद्वितीय एवं दुर्लभ क्षण जो कि चित्रा नक्षत्र, विष्कम्भ योग, कन्या राशिस्थ तथा अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या युक्त होने से विशेषतः प्रशस्त एवं शुभ है अतः आप महागणपति एवं महालक्ष्मी के संयुक्त रूप का पूजन करें जिससे आगे आने वाला समय आपके लिए सफलता एवं धन-धान्य से युक्त हों और महागणपति आपको समस्त बाधाओं पर विजय दिलाएं। आपके समक्ष आने वाली कठिनाइयों को समाप्त कर समस्त सुखों को प्रदान करें।

### पूजन सामग्री

रोली (कुंकुम), मौली, अगरबत्ती, केशर, कपूर, सिन्दूर, पान, सुपारी, फल, पुष्प तथा पुष्पमाला, गंगाजल, लौंग, इलायची, पंचामृत, यज्ञोपवीत, वस्त्र, नैवेद्य (मिठाई), दीपक, रूई, माचिस, नारियल, आसन, पंचपात्र आदि आवश्यक वस्तुएं पहले से ही एकत्र कर लें।

### साधना सामग्री

महालक्ष्मी यंत्र, लक्ष्मी चित्र, गणपति मंत्रों से आपूरित लक्ष्मी माला, गणपति गुटिका (सुपारी), ऋद्धि-सिद्धि गुटिका, आकस्मिक धन प्रदायक गोमती चक्र, बाधा निवारण भैरव गुटिका

### विधान

इस पूजन से पूर्व दीपावली के शुभ दिन के महत्व को समझते हुए संभव हो तो आप व्रत रखें। यदि ऐसा न हो सके तो अल्पहार करें, जिससे आपका समस्त शरीर व मन स्वस्थ और चैतन्य बना रहे। इस दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए और नित्य पूजन को सम्पन्न कर गुरु मंत्र की 8 या 16 माला गुरु मंत्र की अवश्य करें फिर शाम को स्थिर लगन में श्री गणेश एवं महालक्ष्मी का दिये गये विधि-विधान से पूजन करना चाहिए।

शाम को महालक्ष्मी पूजन से पूर्व स्नान के बाद शुद्ध वस्त्र पहनें, फिर पूजा कक्ष में सात्विक विचार लेकर प्रवेश करें। पूर्व या उत्तराभिमुख हो पीले आसन पर बैठें, सामने छोटी सी चौकी रखें, उस पर पीला वस्त्र बिछाकर कुंकुम से स्वास्तिक बनाकर गणेश जी की एक प्रतिमा या चित्र जो आपके पास उपलब्ध हो, स्थापित करें। सभी पूजा की सामग्री अपने समीप रखें। धूप, दीप जला लें। फिर पूजन प्रारम्भ करें-

# महालक्ष्मी साधना

**पवित्रीकरण-** बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर जल छिड़कें-

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।**

**संकल्प-**दाहिने हाथ में जल लें, उसमें अक्षत और पुष्प मिला लें, फिर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें-

**ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्री मद भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे अस्मिन् पवित्र क्षेत्रे ( जगह का नाम ) अमुक वासरे ( दिन का नाम लें ) अमुक गोत्रोत्पन्नोहं ( अपना गोत्र बोलें ), अमुक शर्माहं ( अपना नाम बोलें ) यथा मिलितोपचारैः श्री महालक्ष्मी प्रीत्यर्थे तदंगत्वेन गणपति पूजनं च करिष्ये।**

फिर जल को निर्माल्य पात्र में छोड़ दें।

**कलश स्थापन-**इसके बाद एक कलश को जल से भर दें और अपनी बायीं ओर रखें। उसमें मौली बांधे। उसमें गन्ध, अक्षत, पुष्प डालकर मौली बांधकर नारियल रख दें। कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प चढ़ावें। धूप, दीप से पूजन कर प्रार्थना करें-

**गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।।**

कलश पर कुंकुम से बिन्दी लगायें-

**पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः। कलशमध्ये अपाक्पतये वरुणाय नमः। प्रसन्नो भवा वरदो भव। अन्या पूज्या वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयन्तां न मम।**

फिर अपने हाथ में सरसों लेकर अपने सिर के ऊपर और परिवार के सभी सदस्यों के ऊपर घुमा कर चारों तरफ बिखेर दें, जिससे कि सभी विघ्न-बाधाएं दूर हों।

**अपसर्पन्तु ते भूता ये भूमि संस्थिताः।**
**ये भूता विघ्न कर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।**

**दीपक-**साधक दीपक प्रज्वलित करके गंध, अक्षत, पुष्प से पूजन करे।

## गणपति पूजन

**ध्यान-**दोनों हाथ जोड़ कर भगवान गणपति का ध्यान करें-

**ॐ गणानां त्वा गणपति ( गूं ) हवामहे प्रियाणां त्वा प्रिय पति ( गूं ) हवा महे वसो मम। आहमजानि गर्भधर्मा त्वमजासि गर्भधम्।**

**ॐ गं गणपतये नमः, ध्यानं समर्पयामि नमः। तत्रादौ पुष्पासनं समर्पयामि नमः।**

-एक पुष्प थाली पर रखें और उस पर गणपति गुटिका ( सुपारी ) स्थापित करें-**पाद्यं अर्घ्यं समर्पयामि नमः।**

-तीन आचमनी जल गणपति पर चढ़ावें।

दूध, दही, घी, शहद और शक्कर मिलाकर स्नान करावें-

**पन्च नद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः।**
**सरस्वती तु पन्चधा सो देशे भवत् सरित्।।**

इसके बाद गणपति को शुद्ध जल से स्नान कराके पोंछ लें और किसी दूसरी थाली में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर, स्थापित करें। इसके साथ ही रिद्धि-सिद्धि गुटिका भी स्थापित करें। इसके बाद वस्त्र समर्पित करते हुए कुंकुम, केशर या चन्दन से तिलक लगावें, अक्षत, पुष्प चढ़ावें तथा धूप, दीप दिखाकर नैवेद्य, फल तथा ताम्बूल चढ़ाकर प्रार्थना करें-

**नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।**
**नमस्ते रूद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।**
**विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।**
**भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।**

**।। ॐ गं गणपतये नमः।।**

**निर्विघ्नमस्तु। निर्विघ्नमस्तु। निर्विघ्नमस्तु।**
**ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।**

**अनेन कृत पूजनेन सिद्धि बुद्धि सहितः।**
**श्री भगवान् गणाधिपतिः प्रीयन्ताम्।।**

एक आचमनी जल निर्माल्य पात्र में छोड़ दें। इसके पश्चात् गुरु

पूजन करें एवं गुरु चित्र पर पुष्प माला अर्पित करें।

**गुरु ध्यान-**

**गुरूर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।**
**गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।**
**गुरुं आवाहयामि स्थापयामि नमः।।**

**भैरव पूजन-**फिर चौकी के बायें कोने पर पुष्पासन पर भैरव गुटिका स्थापित करें और अक्षत पुष्प आदि से पूजन करें। गुड़ का भोग लगावें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

**ॐ तीष्णा दंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम्।**
**भैरवाय नमस्तुभ्युंमनुज्ञं दातुमर्हसि**
**ॐ भं भैरवाय नमः।।**

**महालक्ष्मी पूजन-**सामने चौकी पर थाली में कुंकुम से या केशर से '**श्रीं**' बीज लिखें, उस पर थोड़े अक्षत बिखेर दें। उसके ऊपर महालक्ष्मी यंत्र स्थापित करें और आकस्मिक धनप्राप्ति गोमती चक्र चावल की ढेरी पर स्थापित कर दें। फिर शान्त और दत्त-चित्त होकर पूजन प्रारम्भ करें-

**ध्यान-**दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

**पद्मासनां पद्मकरां पद्ममाला विभूषितां। क्षीर सागरसंभूतां, हेमवर्ण समप्रभां। क्षीरवर्ण समं वस्त्रं दधानां हरिवल्लभां। भावये भक्तियोगेन भार्गवीं कमलां शुभाम्। श्रीमहालक्ष्म्यै नमः ध्यानं समर्पयामि।**

**आवाहन-**दोनों हाथों में थोड़ा पुष्प लें-

**सर्वमंगल मांगल्ये विष्णु वक्षः स्थलालये। आवाहयामि देवि। त्वां क्षीरसागर संभवे। श्री महालक्ष्म्यै नमः आवाहनं समर्पयामि।**

**पाद्य-**दो आचमनी जल महालक्ष्मी यंत्र पर चढ़ावें-

**पाद्यमाद्यन्तं शून्यायै वेद्यायै वेदवादिभिः।**
**तुभ्यं दास्यामि पद्माक्षि सुगन्धिं निर्मलं जलं।**
**श्री महालक्ष्म्यै नमः पाद्यं समर्पयामि।।**

**स्नान-**स्नान के लिए लक्ष्मी यंत्र पर जल चढ़ावें-

**साध्वीनामग्रतो गण्ये साधु संघ समागते।**
**सर्व तीर्थमयं तोयं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।**
**श्री महालक्ष्म्यै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।।**

**पंचामृत स्नान-**दूध, दही, घी, शहद और चीनी मिलाकर स्नान करावें-

**मध्वाज्य शर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितं पंचामृतं गृहाणेदं स्नानार्थं जगदम्बिके श्री महालक्ष्म्यै नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।।**

**शुद्ध जल स्नान-**तत्पश्चात् शुद्ध जल से स्नान करावें-

**परमानन्द बोधाब्धि निमग्न निजर्मूतये। शुद्धोदकैस्तव स्नानं कल्पयामि महेश्वरि। श्री महालक्ष्म्यै नमः, शुद्ध जल स्नानं समर्पयामि।।**

इसके बाद महालक्ष्मी यंत्र को किसी स्वच्छ तौलिये से पोंछ कर किसी दूसरी थाली में स्वस्तिक बनाकर स्थापित कर दें।

**वस्त्र-**वस्त्र चढ़ावें, यदि वस्त्र न हो तो मौली चढ़ावें-

**दुकूलं द्वितीयं दिव्यं कंचुकं च मनोहरं। देवि! त्वं च गृहाणेदं सर्व सौभाग्यदायकम्। श्री महालक्ष्म्यै नमः, वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।**

**गन्ध-**कुंकुम, केशर या चन्दन का तिलक लगावें-

**कर्पूरागरू कस्तूरी कुंकुमादि समन्वितं गन्धं ददाम्यहं देवि! सर्वमंगलदायिनी। श्री महालक्ष्म्यै नमः, गन्धं समर्पयामि।**

**अक्षत-**बिना टूटे हुए चावल चढ़ावें-

**अक्षतान धक्लान् देवि! शालीयां स्तण्डुलान् शुभान्। हरिद्राकुंकुमोपेतान् ग्रहाण करूणार्णवे।। श्री महालक्ष्म्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।।**

**पुष्प-**विविध पुष्प एवं पुष्प हार पहनावें-

**पद्म शंख जपा कुसुमैः पारिजातैश्च चंपकैः पूजयामि प्रसीद् त्वं पद्माक्षि! भुवनेश्वरि। श्री महालक्ष्म्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।**

**धूप-**सुगन्धित धूप, अगरबत्ती लगावें-

**धूपं ददामि ते रम्यं गुग्गुलागरूमिश्रितं गृहाणेदं महादेवि भक्तानाभिष्ट दायिनी। श्री महालक्ष्म्यै नमः, धूपम् आघ्रापयामि।**

**दीप-**धूप-दीप प्रदर्शित करें-

**आज्यवर्ति समायुक्तं ज्योतिर्मय शुभंकरं मंगलायतनं दीपं गृहाण परमेश्वरि। श्री महालक्ष्म्यै नमः, दीपं दर्शयामि।।**

**नैवेद्य-**कोई मिठाई जो शुद्ध हो भोग लगावें-

**नानाविधानि भक्ष्याणि व्यन्जनानि हरिप्रिये यथेष्टं भुङ्क्ष्व नैवेद्यं षड्रसं च चतुर्विधम्। श्री महालक्ष्म्यै नमः, नैवेद्यं**

निवेदयामि।।

तत्पश्चात् निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए, तीन आचमनी जल निर्माल्य पात्र में डालें-

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

**फल**-कोई भी फल जो मौसम के अनुकूल हो, चढ़ावें-

इदं फलं मया देवि! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिः, गृहाण जगदम्बिके।
श्री महालक्ष्म्यै नमः, फलानि समर्पयामि।।

**ताम्बूल**-लौंग, इलायची आदि मिलाकर पान समर्पित करें-

पूगी फलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतं एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयताम।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

**दक्षिणा**-यथायोग्य दक्षिणा समर्पित करें-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्यफलदं अतः शान्तिं कुरुष्व मे।
श्री महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।।

फिर निम्न मंत्र की पांच माला लक्ष्मी माला से जप करें-

**मंत्र**
।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलवासिन्यै महालक्ष्म्यै नमः।।

इसके बाद साधक पांच बत्तियों का दीपक जलाकर परिवार के साथ आरती करें।

**जल आरती** - तीन बार आचमनी से जल लेकर दीप के चारों ओर घुमाकर निर्माल्य पात्र में छोड़ दें-

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ( गूं ) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्ति रोषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शान्ति विंश्वे देवाः शान्तिः
ब्रह्म शान्तिः सर्व ( गूं ) शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि

**पुष्पांजलि**-दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा भगवती लक्ष्मी पर चढ़ा दें-

नाना सुगंध पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि
च पुष्पांजलिर्मया दत्ता गृहाण जगदम्बिके।
श्री महलक्ष्म्यै नमः, पुष्पांजलि समर्पयामि।

**प्रणामांजलि**-दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना एवं प्रणाम करें-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताः।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः।

**समर्पण**-पूजन फल की प्राप्ति हेतु निम्न मंत्रोच्चारण करें-

ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु, अनेन कृतेन पूजाराधना कर्मणा। श्री महालक्ष्मी देवता परासंवित् स्वरूपिणी प्रीयन्ताम।।

एक आचमनी जल पूजा की पूर्णता हेतु छोड़ दें इसके बाद सभी को प्रसाद वितरण करें।

**साधना सामग्री- 650/-**

## आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसि दिन सेवत, हर विष्णु धाता।।
ॐ जय लक्ष्मी....

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।
ॐ जय लक्ष्मी...

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, रिधि सिधि धन पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी...

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भव निधि की त्राता।।
ॐ जय लक्ष्मी...

जिस घर तुम रहती तह, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता।।
ॐ जय लक्ष्मी...

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान पान का वैभव सब तुमसे आता।।
ॐ जय लक्ष्मी...

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी...

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता ।।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।
ॐ जय लक्ष्मी...

दीपावली - 24.10.22

# महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त

धनं धान्यं धरा हर्म्यं कीर्तिर्मायुर्यशः श्रियम।
तुरगान दन्तनः पुत्रान् महालक्ष्मीं प्रयच्छमे।।

हे महालक्ष्मी! आप हमें धन, धान्य, पृथ्वी, भवन, कीर्ति, आयु, यश, सौभाग्य, वाहन एवं पुत्र-पौत्र से समृद्ध करें।

इस वर्ष कार्तिक अमावस्या 24 अक्टूबर 2022 को सायं 5.28 के बाद प्रदोष निशीथ तथा महानिशीथ व्यापिनी होगी। सायं दीपावली पर्व चित्रा नक्षत्र, विष्कम्भ योग, कन्या राशिस्थ तथा अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या युक्त होने से विशेषतः प्रशस्त रहेगी।

इस दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर दैनिक पूजन करें एवं गुरु मंत्र की 16 माला जप करें। फिर 1 माला निम्न मंत्र का जप करें-

।। ॐ श्रीं श्रीं कमलेकमलाये प्रसीद प्रसीद मम गृहे आगच्छ आगच्छ महालक्ष्म्यै नमः।।

यदि सम्भव हो तो उपवास रखें या हल्का भोजन ग्रहण करें। यदि जीवन में सफल रहना है तो लक्ष्मी को घर में स्थापित करना ही पड़ेगा। और भगवान गणपति का पूजन अत्यन्त आवश्यक है। इस बार महालक्ष्मी एवं गणपति का विशेष पूजन पत्रिका के अंक में दिया गया है, जिसे सभी साधकों को दीपावली के शुभ मुहूर्त में सम्पन्न करना ही है। दीपावली का महालक्ष्मी पूजन स्थिर लग्न में ही होता है। आगे के पेज में वृष लग्न एवं सिंह लग्न दोनों का समय दिया गया है। आप अपने शहर के अनुसार समय देख सकते हैं।

दीपावली पर्व वस्तुतः पांच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जो कि कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी ( धन तेरस ) से कार्तिक शुक्ल द्वितीया ( भाई दूज ) तक रहता है। इन विशेष दिनों में पत्रिका में प्रकाशित कई लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाएं करनी चाहिए। वैसे तो पूरा कार्तिक मास ही लक्ष्मी मास कहा गया है।

दीपावली पर्व पर जोधपुर गुरुधाम में विशेष लक्ष्मी पूजन सामग्री पैकेट आप साधकों के लिए तैयार किये गये हैं। साधक अपना नाम, पता नोट करवा कर शीघ्र वहां से सामग्री प्राप्त कर लें।

| | वृषभ लग्न मुहूर्त | सिंह लग्न मुहूर्त |
|---|---|---|
| जोधपुर | शाम 07.14 से 09.11 | रात्रि 01.43 से 03.58 |
| दिल्ली | शाम 06.53 से 08.48 | रात्रि 01.23 से 03.41 |
| मुम्बई | शाम 07.26 से 09.26 | रात्रि 01.52 से 04.00 |
| कोलकता | शाम 06.19 से 08.17 | रात्रि 12.46 से 02.57 |
| चेन्नई | शाम 07.05 से 09.08 | रात्रि 01.28 से 03.31 |
| चण्डीगढ़ | शाम 06.51 से 08.45 | रात्रि 01.22 से 03.42 |
| लखनऊ | शाम 06.41 से 08.38 | रात्रि 01.11 से 03.26 |
| देहरादून | शाम 06.47 से 08.41 | रात्रि 01.18 से 03.37 |
| पटना | शाम 06.27 से 08.24 | रात्रि 12.55 से 03.10 |
| जमशेदपुर | शाम 06.27 से 08.25 | रात्रि 12.54 से 03.06 |
| रांची | शाम 06.30 से 08.28 | रात्रि 12.57 से 03.09 |
| गंगटोक (सिक्किम) | शाम 06.10 से 08.06 | रात्रि 12.39 से 02.55 |
| गुवाहाटी | शाम 05.59 से 07.56 | रात्रि 12.28 से 02.43 |
| गोरखपुर | शाम 06.32 से 08.28 | रात्रि 01.01 से 03.16 |
| वाराणसी | शाम 06.36 से 08.33 | रात्रि 01.04 से 03.18 |
| भुवनेश्वर | शाम 06.32 से 08.32 | रात्रि 12.59 सं 03.08 |
| रायपुर | शाम 06.48 से 08.47 | रात्रि 01.14 से 03.24 |
| इन्दौर | शाम 07.09 से 09.07 | रात्रि 01.36 से 03.47 |
| नागपुर | शाम 06.58 से 08.57 | रात्रि 01.25 से 03.35 |
| अहमदाबाद | शाम 07.21 से 09.19 | रात्रि 01.49 से 04.00 |
| हैदराबाद | शाम 07.06 से 09.07 | रात्रि 01.31 से 03.38 |
| बैंगलोर | शाम 07.16 से 09.19 | रात्रि 01.39 से 03.42 |
| जम्मू | शाम 06.55 से 08.48 | रात्रि 01.27 से 03.49 |
| जयपुर | शाम 07.02 से 08.58 | रात्रि 01.31 से 03.47 |
| काठमाण्डू (नेपाल) | शाम 06.37 से 08.33 | रात्रि 01.07 से 03.23 |
| पोखरा | शाम 06.42 से 08.37 | रात्रि 01.12 से 03.29 |
| विराट नगर | शाम 06.32 से 08.28 | रात्रि 01.01 से 03.16 |
| नेपालगंज | शाम 6.51 से 08.47 | रात्रि 01.22 से 03.38 |

# श्रीलक्ष्मी-स्तवन

**हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।**
**चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।**

हे जातवेदा (सर्वज्ञ) अग्निदेव! आप सुवर्ण के से रंगवाली, किंचित् हरितवर्ण-विशिष्टा, सोने और चांदी के हार पहनने वाली, चन्द्रवत् प्रसन्नकान्ति, स्वर्णमयी लक्ष्मी देवी का मेरे आवाहन करें।

**कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**
**पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।**

जो साक्षात् ब्रह्मरूपा, मन्द-मन्द मुस्कराने वाली, सोने के परकोटे से आवृत, दयार्द्र, तेजोमयी, स्वयं पूर्णकामा, भक्तों को पूर्णकाम बना देने वाली, कमल के आसन पर विराजमान तथा पद्मवर्णा हैं, उन लक्ष्मीदेवी का मैं यहाँ आवाहन करता हूँ।

**चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।**
**तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।**

जो चन्द्र के समान शुभ्र कान्तिवाली, अमित-द्युतिशालिनी, यश से दीप्तिमती, स्वर्गलोक में देवगणों के द्वारा सेविता, उदारशीला और पद्महस्ता हैं, उन लक्ष्मी देवी की मैं शरण ग्रहण करता हूँ। मेरा (लौकिक-पारमार्थिक) दारिद्रय दूर हो जाय। मैं आपको शरण्य के रूप में वरण करता हूँ।

**आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।**
**तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।**

हे सूर्य के समान प्रकाशस्वरूपे! तुम्हारे ही तपसे वृक्षों में श्रेष्ठ मंगलमय बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ। उसके फल हमारे बाहरी और भीतरी दारिद्रय को दूर करें।

**गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।**
**ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।**

जिनका कोई पराभव नहीं कर सकता, जो नित्यपुष्टा हैं तथा गोबर से (पशुओं से) युक्त गन्धगुणवती पृथिवी ही जिनका स्वरूप है, सब भूतों की स्वामिनी उन लक्ष्मी देवी का मैं यहाँ अपने घर में आवाहन करता हूँ।

**आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।**
**चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।**

अग्ने! आर्द्रस्वभावा, कमलहस्ता, पुष्टिरूपा, पीतवर्णा, पद्मों की माला धारण करने वाली, चन्द्रमा के समान शुभ्र कान्ति से युक्त, स्वर्णमयी लक्ष्मी देवी को आप मेरे यहाँ ले आयें।

**आर्द्रां यःकरिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।**
**सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।**

अग्ने! जो दुष्टों का निग्रह करने वाली होने पर कोमल स्वभाव की हैं, जो मंगलदायिनी, अवलम्बन प्रदान करने वाली यष्टिरूपा, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्णमालाधारिणी, सूर्यस्वरूपा तथा हिरण्मयमयी हैं, उन लक्ष्मीदेवी को आप मेरे घर में लायें।

*(ऋक्परिशिष्टान्तर्गत श्रीसूक्त 1, 4, 5, 6, 9, 13-14)*

**(साधक दीपावली की रात्रि इस लक्ष्मी स्तवन का एक पाठ अवश्य करें)**

# सकारात्मक सोच

बहुत समय पहले की बात है। किसी गाँव में मोहन नाम का एक किसान रहता था। वह बड़ा मेहनती और ईमानदार था। अपने अच्छे व्यवहार के कारण दूर-दूर तक उसे लोग जानते थे और उसकी प्रशंसा करते थे। पर एक दिन जब देर शाम वह खेतों में काम कर लौट रहा था, तभी रास्ते में उसने कुछ लोगों को बातें करते सुना। वे उसी के बारे में बात कर रहे थे। मोहन उन्हें बिना बताये धीरे-धीरे उनके पीछे चलने लगा। उसने उनकी बातें सुनी तो पाया कि वे उसकी बुराई कर रहे थे। कोई कह रहा था कि, 'मोहन घमण्डी है...', तो कोई कह रहा था कि, 'सब जानते हैं वो अच्छा होने का दिखावा करता है....'

इस घटना का उसके दिमाग पर बहुत बुरा असर पड़ा और अब वह जब भी कुछ लोगों को बातें करते देखता तो उसे लगता वे उसकी बुराई कर रहे हैं। यहाँ तक कि अगर कोई उसकी तारीफ भी करता तो उसे लगता कि उसका मजाक उड़ाया जा रहा है।

धीरे-धीरे सभी ये महसूस करने लगे कि मोहन बदल गया है और उसकी पत्नी भी अपने पति के व्यवहार में आये बदलाव से दुखी रहने लगी और एक दिन उसने पूछा-'आजकल आप इतने परेशान क्यों रहते हैं। कृपया मुझे इसका कारण बताइये।' मोहन ने उदास होते हुए उस दिन की सारी बातें बता दी, पत्नी को भी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए पर तभी उसे ध्यान आया कि पास के ही एक गाँव में एक सिद्ध महात्मा आये हुए हैं और वह बोली, 'स्वामी, मुझे पता चला है कि पड़ोस के गाँव में एक सिद्ध संत आये हैं। चलिये हम उनसे कोई समाधान पूछते हैं।'

अगले दिन वे महात्मा जी के शिविर में पहुंचे। मोहन ने सारी घटना बतायी और बोला, महाराज उस दिन के बाद से सभी मेरी बुराई और झूठी प्रशंसा करते हैं, कृपया मुझे बताइये कि मैं वापस अपनी साख कैसे बना सकता हूँ!' महात्माजी मोहन की समस्या समझ चुके थे। 'पुत्र तुम अपनी पत्नी को घर छोड़ आओ और आज रात मेरे शिविर में ठहरो।' महात्मा कुछ सोचते हुए बोले।

मोहन ने ऐसा ही किया, पर जब रात में सोने का समय हुआ तो अचानक ही मेंढ़कों की टर्र-टर्र की आवाजें आने लगी। मोहन बोला, 'ये क्या महाराज यहाँ इतना कोलाहल क्यों है?' 'पुत्र! पीछे एक तालाब है, रात के वक्त उसमें मौजूद मेंढ़क अपना राग अलापने लगते हैं।'

'पर ऐसे में तो कोई यहाँ सो नहीं सकता?' मोहन ने चिंता जताई।

'हाँ बेटा, पर तुम ही बताओ हम क्या कर सकते हैं, हो सके तो तुम हमारी मदद करो।' महात्मा जी बोले।

कामयाब होने के लिए अच्छे मित्रों की जरूरत होती है और ज्यादा कामयाब होने के लिए अच्छे शत्रुओं एवं निन्दकों की आवश्यकता होती है। –चाणक्य

मोहन बोला, 'ठीक है महाराज, इतना शोर सुन के लगता है इन मेढ़कों की संख्या हजारों में होगी। मैं कल ही गांव से पचास-साठ मजदूरों को लेकर आता हूँ और इन्हें पकड़ कर दूर नदी में छोड़ आता हूँ।' और अगले दिन मोहन सुबह-सुबह मजदूरों के साथ वहाँ पहुँचा। महाराज भी वहाँ खड़े सब कुछ देख रहे थे।

तालाब ज्यादा बड़ा नहीं था। 8-10 मजदूरों ने चारों ओर से जाल डाला और मेंढ़कों को पकड़ने लगे.... थोड़ी देर की ही मेहनत से सारे मेंढ़क पकड़ लिए गए। जब मोहन ने देखा कि कुल मिलाकर 40-50 मेंढ़क ही पकड़े गए हैं तब उसने महात्मा जी से पूछा, 'महाराज, कल रात तो इसमें हजारों मेंढ़क थे, भला आज वे सब कहाँ चले गये। यहाँ तो बस मुट्ठी भर मेंढ़क ही बचे हैं।'

महात्माजी गम्भीर होते हुए बोले, 'कोई मेंढ़क कहीं नहीं गया। तुमने कल इन्हीं मेंढ़कों की आवाज सुनी थी। ये मुट्ठी भर मेंढ़क ही इतना शोर कर रहे थे परन्तु तुम्हें लगा कि हजारों मेंढ़क टर्र-टर्र कर रहे है।

पुत्र, इसी प्रकार जब तुमने कुछ लोगों को अपनी बुराई करते सुना तो तुम भी यही गलती कर बैठे। तुम्हें लगा कि हर कोई तुम्हारी बुराई करता है पर सच्चाई ये है कि बुराई करने वाले लोग मुट्ठी भर मेंढ़क के समान ही थे, इसलिए अगली बार किसी को अपनी बुराई करते सुनना तो इतना याद रखना कि हो सकता है ये कुछ ही लोग हों जो ऐसा कर रहे हों और इस बात को भी समझना कि भले तुम कितने ही अच्छे क्यों न हो ऐसे कुछ लोग होंगे ही होंगे जो तुम्हारी बुराई करेंगे।'

अब मोहन को अपनी गलती का अहसास हो चुका था। वह पुन: पुराना वाला मोहन बन चुका था।

मोहन की तरह हमें भी कुछ लोगों के व्यवहार को हर किसी का व्यवहार नहीं समझ लेना चाहिए और पोजेटिव विचारों के साथ अपनी जिन्दगी जीनी चाहिए। हम कुछ भी कर लें पर जिन्दगी में कभी न कभी ऐसी समस्या आ ही जाती है जो ऐसे लगती है मानो हजारो मेंढक टर्र-टर्र कर रहे हों। पर जब दिन के उजाले में हम उसका समाधान करने का प्रयास करते हैं तो वही समस्या छोटी लगने लगती है। इसलिए हमें ऐसी स्थिति से घबराने की बजाय कभी भी मुट्ठी भर मेंढ़कों से घबराना नहीं चाहिए

क्योंकि जब लोग आगे नहीं बढ़ पाते हैं तो इन्हीं मेंढ़कों की तरह टर्र-टर्र करना प्रारम्भ कर देते हैं। क्योंकि जब वे चिड़चिड़ाहट में आते हैं और कुछ नहीं कर पाते तो ऐसा तो कर ही सकते हैं और ऐसा करके वे अपने आप में कुछ क्षण की प्रसन्नता हासिल करके अपनी निराशा को दूर करने का प्रयास करते हैं।

सद्‌गुरुदेव ने कई बार कहा कि निन्दक तुम्हें हमेशा आगे बढ़ने में मदद करते हैं, वह तुम्हें जाग्रत बनाये रखते हैं अत: इनसे घबराना नहीं चाहिए।

राजेश गुप्ता 'निखिल'

**मेष** - माह का प्रारम्भ असंतोषप्रद रहेगा। इस समय नया वाहन खरीदने से बचें। गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें अन्यथा गृहस्थ में तनाव हो सकता है। दूसरे सप्ताह में भी प्रतिकूल परिणामों से शुरुआत होगी। इस समय बहुत सोच-विचार कर निर्णय लें। प्यार में सफलता मिलेगी। माह मध्य में किसी व्यक्ति की मुलाकात यादगार रहेगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शत्रु से सावधान रहने की जरूरत है। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें रहेंगी। यात्रा कष्टकारी साबित हो सकती है। विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होगी। कहीं से धन प्राप्ति हो सकती है। आखिरी के 2-3 दिनों में बहुत सोच-समझ कर निर्णय लेने की आवश्यकता है। जल्दबाजी के निर्णय छवि बिगाड़ सकते हैं, संतान कहने में रहेगी। आय के स्रोत बढ़ेंगे। आप **अष्टलक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 4, 5, 6, 13, 14, 15, 23, 24, 25

**वृष** -सप्ताह के प्रारम्भ में परिणाम शुभ मिलेंगे। इस समय के लिए निर्णय भविष्य में उत्तम परिणाम देंगे। शत्रुओं का दबाव रहेगा। रोजगार के अवसर मिलेंगे। आपका कोई पुराना वाद-विवाद इस समय हल होगा। विद्यार्थी वर्ग मनचाहा रिजल्ट पा कर खुश रहेंगे। भाई का साथ मिलेगा। महत्वपूर्ण कार्यों को निपटाने में व्यस्त रहेंगे। अचानक कोई अशुभ समाचार चेहरे पर उदासी ला देगा। जल्दबाजी में गलत निर्णय से नुकसान की संभावना है। माह के मध्य में उच्चाधिकारियों से तालमेल अच्छा रहेगा, उत्साह बढ़ेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। कोई भी अनर्गल कार्य न करें, बदनामी हो सकती है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। आखिरी के 5-6 दिनों में स्थितियां स्वत: बदलेंगी, जो कार्य लेंगे पूरा कर सकेंगे। आखिरी तारीख में आवेश में कोई कार्य न करें अन्यथा शत्रु खुशियां मनायेंगे। गलत सोहबत के दोस्तों से दूर रहें। आप **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 6, 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26

**मिथुन** - माह की शुरुआत अच्छी रहेगी। रुकावटें आपके परिश्रम से दूर हो जायेंगी। लॉटरी, सट्टे आदि से दूर रहें। विदेश यात्रा का योग है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। कोई बनी-बनाई योजना विफल हो जायेगी। मन अत्यन्त दुखी होगा। माह के मध्य में उतार-चढ़ाव की घटनाएं घटेगी लाभ के साथ हानि भी उठानी पड़ सकती हैं। प्रेम में सफलता मिलेगी। तीसरे सप्ताह में कोई भी कार्य सोच-विचार कर करें। साझेदारी में धोखा मिल सकता है। आखिरी सप्ताह में प्रेमिका से गलतफहमी बढ़ेगी। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। सफलता के लिए किये गये प्रयास सफल होंगे। इस समय बाजार का रुख देखकर कार्य करें। ज्यादा लालच न करें। **पूर्णत्व दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28, 29

**कर्क** - प्रारम्भ सकारात्मक रहेगा। शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे। पढ़ाई में सफलता मिलेगी। कठिनाइयों को पार कर सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार में उन्नति होगी, विरोधियों की आंखों में खटकेगी। बिना वजह मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। कहीं निकट ही यात्रा का सुअवसर मिलेगा। शुभचिंतकों का सहयोग उत्साहवर्धन करेगा। माह के मध्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। किसी को रुपये उधार न देवें। यह समय परिवर्तन का है, सुधारपूर्ण घटनाएं होंगी। परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा। अधूरे कार्य इस समय पूर्ण होंगे। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आखिरी सप्ताह में मानसिक संतोष रहेगा। शुभचिंतकों की सलाह से ही कोई कार्य प्रारम्भ करें। इस समय शत्रु हावी रहेंगे। फालतू के खर्चों की अधिकता रहेगी। परिश्रम का फल मिलेगा। मनोबल बढ़ेगा। **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 2, 3, 10, 11, 20, 21, 22, 29, 30, 31

**सिंह** - सप्ताह की शुरुआत प्रतिकूल रहेगी। कार्यों में बाधाएं आयेंगी। वाहन सावधानी से चलाएं। किसी और की बातों में आकर फैसला न लें। विरोधी परेशान करेंगे, दूसरा सप्ताह में भी अशांति का वातावरण रहेगा। कोई भी फैसला सोच-समझ कर लें। घर पर अनावश्यक खर्च से परेशानी उठानी पड़ेगी। धीरे-धीरे बदलाव आयेगा। काम सुचारू रूप से चलेंगे। कार्य क्षेत्र में उन्नति के साथ आमदनी बढ़ेगी। सम्मान बढ़ेगा। माह के मध्य में शुभ परिणाम मिलेंगे। अध्ययन की दृष्टि से समय अनुकूल है। यात्रा से बचें। फिर से टेंशन का समय है। राह भटक सकती है, पैसे उधार न दें। आखिर में भाइयों से मतभेद दूर होंगे। भावना प्रेम में बदलेगी। कोई अशुभ समाचार भी सुनने को मिल सकता है। आखिरी तारीख में मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। आप **विघ्नहर्ता गणेश दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 4, 5, 6, 13, 14, 15, 23, 24, 31

**कन्या** - प्रारम्भ संतोषप्रद रहेगा। मेहनत रंग लायेगी, सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे। अचानक कोई मुसीबत गले आ जायेगी। मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सूझबूझ से कार्य करें। परिश्रम से अपना कार्य करें। ज्यादा लालच में न पड़ें। वाहन धीमी गति से चलायें शत्रु हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे जल्दबाजी में निर्णय नुकसान पहुचां सकता

है। दाम्पत्य जीवन में उत्साह पैदा होगा। माह के मध्य में की गई यात्रा लाभदायक होगी। व्यापार बढ़ाने में तरह-तरह के अनुबंध प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों को वांछित सफलता मिलेगी। जिम्मेदार बढ़ने से मानसिक टेंशन होगी अत: स्वास्थ्य का ख्याल रखें, शत्रुओं से सावधान रहें। किसी अफसर से मुलाकात उत्साह और मनोबल बढ़ायेगी। आखिरी सप्ताह का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। किसी कार्य को करेंगे, कामयाबी मिलेगी। पति-पत्नी में मधुरता रहेगी। आखिरी तारीख में किसी चलते-फिरते आदमी से न उलझें। आप **सर्व सुख सौभाग्य दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 6, 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26

**तुला** - सप्ताह की शुरुआत शुभ कार्यों से होगी। परिवार में सभी में प्रेम होगा। ऑफिस में किसी कर्मचारी से झगड़ा हो सकता है। क्रोध पर काबू रखें। फिजूल खर्ची पर रोक लगायें। बुद्धि-विवेक से रुके कार्य निपटाने में समर्थ होंगे। यात्रा का प्रोग्राम अचानक बन सकता है। जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से निभा सकेंगे। भाईयों का सहयोग मिलेगा। कोई विश्वासी व्यक्ति धोखा दे सकता है। महत्वपूर्ण कार्य रुक जायेंगे। किसी से चलते-फिरते टकराहट हो सकती है। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। अदालतों के चक्कर काटने से छुटकारा मिलेगा। विद्यार्थियों को वांछित सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। जीवनसाथी का व्यापार में सहयोग मिलेगा। आखिरी तारीखों में जल्दबाजी में कोई कार्य बिगाड़ लेंगे। कामकाज में मन नहीं लगेगा। आप **चैतन्य दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28, 29

**वृश्चिक** - प्रारम्भ सुख-समृद्धिशाली होगा। जीवन में बदलाव आयेगा। कमीशन एजेंट के कार्य में लाभ के अवसर हैं। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। कार्य के सिलसिले में की गई यात्रा लाभ देगी। किसी मित्र से अनबन मूड खराब करेगी। कोई भी कार्य सोच-विचार कर करें। किसी से अचानक टकराहट होने पर क्रोध पर संयम रखें। अटके रुपये प्राप्त होंगे, मित्रों के साथ अनबन रहेगी। मानसिक चिंता सतायेगी। माह के मध्य में कोई अनहोनी घटना उदासी लायेगी, किसी के बहकावे में न आयें। आपकी सूझबूझ से कार्य हल होंगे। किसी वरिष्ठ व्यक्ति की उपस्थिति में सम्पत्ति का बटवारा हो जायेगा। फालतू बातों पर ध्यान न दें, शत्रुओं से सावधान रहें। बाहरी यात्रा से धन लाभ होगा। आप **अष्ट लक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 2, 3, 10, 11, 12, 20, 21, 22, 30, 31

**धनु** - माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। बनाई गई योजनाएं सफल नहीं होगी, विरोधी रोड़ा अटकायेंगे। कारोबार में नुकसान हो सकता है। भाई की सहायता से बिगड़े कार्य बन सकेंगे। मंजिल तक पहुंचने में सहायता मिलेगी। पुरान वाद-विवाद निपट जायेगा। अपनी मेहनत से व्यापार को ऊंचाई प्रदान कर सकेंगे। नौकरीपेशा लोगों का प्रमोशन होगा। तीसरे सप्ताह में नकारात्मक परिणाम चेहरे पर उदासी लायेंगे। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। अनर्गल कार्यों से दूर रहें, बदनामी हो सकती है। आवेश में आकर कोई कार्य न करें, भविष्य अंधकार में हो जायेगा। शत्रु पक्ष तालियां पीटेंगे। आखिरी दिनों में बदलाव आयेगा, मंजिल पा सकेंगे। दोस्तों का साथ रास्ता दिखायेगा। अचानक आर्थिक लाभ हो सकता है। आप **सर्वबाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 24, 31

**मकर** - प्रारम्भ संतोषकारी है। व्यापार को पुत्र सम्भालने में सक्षम होगा। नोंक-झोंक की स्थिति में संयम से काम लें। कोई झूठा आरोप भी लगा सकता है। फालतू के कार्यों से दूर रहें। वाणी में संयम रखें। कोर्ट केस में निर्णय अनुकूल रहेगा। पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी, विद्यार्थियों को

| | | |
|---|---|---|
| **सर्वार्थ सिद्धि योग** | - | अक्टूबर-1, 2, 9, 11, 23, 28 |
| **रवि योग** | - | अक्टूबर-1, 4, 5, 8, 16, 28 |
| **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** | - | 25.10.22 |

वांछित सफलता मिलेगी। किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी। माह के मध्य के बाद सावधान रहें, कोई साजिश भी कर सकता है, जिससे टेंशन होगा। कानूनी दायरे में फंस सकते हैं, मित्र साथ नहीं देंगे। सतर्क रहें। आखिरी सप्ताह में भाग्य साथ देगा, सम्मान मिलेगा। ऑफिस में अधिकारी वर्ग संतुष्ट रहेंगे। स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। आखिरी तारीखों में थोड़ा ध्यान रखें, परेशानी का समय है, किसी के सामने झुकना पड़ सकता है, कोई साथ नहीं देगा। स्वयं निर्णय ले, किसी के बहकावे में न आयें। **सर्व बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 6, 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26

**कुम्भ** - प्रारम्भ उत्तम रहेगा। भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि होगी। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है। संतान कहने में नहीं रहेगी। समय पक्ष में होने से रुका कार्य पूरा होगा। किसी महत्वपूर्ण कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। आत्मविश्वास बढ़ा रहेगा, माह के मध्य में मिश्रित फलकारी परिणाम रहेगा। जमीन-जायदाद के मामले सुलझा लेंगे। कुछ नई वस्तु की खरीददारी हो सकती है। आपका व्यवहार विनम्र रहेगा। कोई भी कार्य सोच-समझ कर करें। बिना वजह किसी वाद-विवाद में न पड़ें। अपने ही नुकसान पहुंचा सकते हैं। तनाव की स्थिति बन सकती है। जीवनसाथी का व्यापार में साथ मिलेगा। सरकारी कर्मचारी के ट्रांसफर हो सकते हैं। सट्टेबाजी में पैसे न लगायें। आप **नवग्रह मुद्रिका** धारण करें।

**शुभ तिथियाँ** - 4, 5, 6, 13, 14, 15, 23, 24, 31

**मीन** - प्रथम सप्ताह का प्रारम्भ खुशनुमा रहेगा। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप महत्वपूर्ण कार्यों को स्वयं करने का प्रयत्न करें। अचानक धन लाभ हो सकता है। परिवार एवं सम्बन्धियों से मधुर सम्बन्ध रहेंगे। फालतू बातों पर ध्यान न देवें। शत्रु वर्ग से सावधान रहें। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। थोड़ा टेंशन का वातावरण बन सकता है। संतान पक्ष से प्रसन्नता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग अपने परिश्रम से यश अर्जित करेंगे। माह के मध्य के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। किसी के बहकावे में कोई गलत कार्य न करें। अचानक जिम्मेदारी का बोझ थोड़ा परेशानी पैदा करेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग सफलता दिलायेगा। परिवार का सहयोग भी मिलेगा। पैतृक सम्पति को लेकर विवाद हो सकता है। आप इस माह **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

**इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार**

| | | |
|---|---|---|
| 03.10.22 | सोमवार | दुर्गा अष्टमी |
| 05.10.22 | बुधवार | विजय दशमी |
| 06.10.22 | गुरुवार | पापाकुंशा एकादशी |
| 09.10.22 | रविवार | शरद पूर्णिमा |
| 13.10.22 | गुरुवार | करवा चौथ |
| 17.10.22 | सोमवार | अहोई अष्टमी |
| 23.10.22 | रविवार | धन त्रयोदशी/धन्वन्तरी जयन्ती |
| 24.10.22 | सोमवार | नरक चतुर्दशी |
| 24.10.22 | सोमवार | दीपावली |
| 26.10.22 | बुधवार | गोवर्धन पूजा/यम द्वितीया |
| 29.10.22 | शनिवार | सौभाग्य पंचमी |

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

## ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

| वार/दिनांक | श्रेष्ठ समय |
|---|---|
| रविवार (अक्टूबर-2, 9, 16, 23, 30) | दिन 07.36 से 10.00 तक<br>12.24 से 02.48 तक<br>04.24 से 04.30 तक<br>रात 07.36 से 09.12 तक<br>11.36 से 02.00 तक |
| सोमवार (अक्टूबर-3, 10, 17, 24, 31) | दिन 06.00 से 07.30 तक<br>09.00 से 10.48 तक<br>01.12 से 06.00 तक<br>रात 08.24 से 11.36 तक<br>02.00 से 03.36 तक |
| मंगलवार (अक्टूबर-4, 11, 18, 25) | दिन 06.00 से 07.36 तक<br>10.00 से 10.48 तक<br>12.24 से 02.48 तक<br>रात 08.24 से 11.36 तक<br>02.00 से 03.36 तक |
| बुधवार (अक्टूबर-5, 12, 19, 26) | दिन 06.48 से 11.36 तक<br>रात 06.48 से 10.48 तक<br>02.00 से 04.24 तक |
| गुरूवार (अक्टूबर-6, 13, 20, 27) | दिन 06.00 से 06.48 तक<br>10.48 से 12.24 तक<br>03.00 से 06.00 तक<br>रात 10.00 से 12.24 तक |
| शुक्रवार (अक्टूबर-7, 14, 21, 28) | दिन 09.12 से 10.30 तक<br>12.00 से 12.24 तक<br>02.00 से 06.00 तक<br>रात 08.24 से 10.48 तक<br>01.12 से 02.00 तक |
| शनिवार (अक्टूबर-1, 8, 15, 22, 29) | दिन 10.48 से 02.00 तक<br>05.12 से 06.00 तक<br>रात 08.24 से 10.48 तक<br>12.24 से 02.48 तक<br>04.24 से 06.00 तक |

## यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

### अक्टूबर-22

11. हनुमान मन्दिर में हनुमान चालीसा का 1 पाठ आज करें।
12. तुलसी के पौधे के पास घी का दीपक जलायें।
13. सुबह 'ॐ गुरुभ्यो नमः' का 51 बार उच्चारण करके जाएं।
14. आज माँ लक्ष्मी की आरती करके जाएं।
15. प्रातः शनिदेव का ध्यान करते हुये काले उदड़ के कुछ दाने अपने ऊपर से तीन बार घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंक दें।
16. भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
17. परिवार के कल्याण के लिए शिव गौरी के मन्दिर में पुष्प चढ़ायें।
18. आज बजरंग बाण का एक पाठ करके जाएं।
19. सुबह पूजन के बाद 'ॐ श्रीं ॐ' का एक माला जप करके जाएं।
20. आज अपने पहनने के वस्त्रों में पीले रंग को प्राथमिकता दें।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर 16 माला गुरु मंत्र का जप करें।
22. बगलामुखी गुटिका (न्यौ. 150/-) स्थापित कर 'ह्लीं' मंत्र का 108 बार उच्चारण कर गले में धारण करें, शत्रु शांत रहेंगे।
23. आज धन त्योदशी के दिन कोई लक्ष्मी साधना करें।
24. आज दीपावली के दिन पत्रिका में प्रकाशित लक्ष्मी पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
25. आज सूर्य ग्रहण है, किसी भी साधना को अवश्य सम्पन्न करें।
26. गुरु पूजन के बाद 'ह्रीं' मंत्र का 51 बार उच्चारण करके जाएं।
27. किसी पीपल या केले के वृक्ष में 1 लोटा जल अर्पण करें।
28. गाय को रोटी खिलायें।
29. आज 'ॐ गं गणपतये नमः' का 21 बार जप करके जाएं।
30. सूर्य मंत्र का 21 बार जप करके जाएं, 'ॐ ह्रीं घृणिं सूर्य आदित्य नमः'।

### नवम्बर-22

1. भगवान कृष्ण के मन्दिर में भोग लगायें।
2. स्वास्थ्य लाभ के लिए कायाकल्प गुटिका (न्यौछावर. 300/-) धारण करें।
3. आज पक्षियों को दाना डालें।
4. तुलसी के पेड़ के पास दीपक जलायें।
5. आज शनि शांति के लिए शनि मुद्रिका (न्यौछावर 150/-) धारण करें।
6. 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
7. केसर का तिलक लगाकर कार्य हेतु जाएं।
8. आज ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्र ग्रहण के समय पर कोई साधना सम्पन्न करें या मंत्र जप करें।
9. पांच बत्ती का दीपक जलाकर पूजन स्थान में रखें।
10. मन ही मन भगवान गणपति का ध्यान एवं प्रार्थना करके जाएं।

या परा परमेश्वर: • परा शक्ति ही परमेश्वर है

❈ क्या व्यक्ति अपने जीवन में देवी के साक्षात् दर्शन कर सकता है?

❈ क्या महाविद्याएं साधनाओं से सिद्ध होती हैं?

❈ साधना सिद्धि में गुरुकृपा क्यों आवश्यक है?

10 महाविद्या दिवस
02.11.22

आपके जीवन का उद्देश्य है

# महाविद्या साधना में सफलता

# दस महाविद्याएं

तो सद्गुरु शक्ति स्वरूप में ही समाहित है

प्रत्येक साधक अपने जीवन में यही इच्छा रखता है कि उसे

दस महाविद्याओं

(महाकाली, भगवती तारा, षोडशी त्रिपुर सुन्दरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला)

की साधना में सफलता प्राप्त हो और वह जीवन में दैविक शक्ति के सहयोग से भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करे

एक साधक द्वारा अपने अनुभव पर आधारित दस महाविद्याओं के सम्बन्ध में विवेचन–

पहली-पहली बार जब किसी मृग शावक ने संसार में नेत्र खोला और अंगड़ाई लेकर उठा, तो माता मृग ही सम्मुख आई और स्तन पान कराकर उसकी क्षुधा शांत की। संसार में आने पर मां के ही सुखद, स्नेहिल स्पर्श से वह आनन्दित हुआ, धीरे-धीरे उसे बोध होने लगा, कि मां के रहते उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। इस तरह जीवन में निर्भय और मुक्त होते हुए कुलांचे भरता हुआ हरिण शावक बचपन की खुशियों में खो गया।

मनुष्य का मूल स्वभाव ही है, शिशुवत् रहना। प्यार से कोई उसको बेटा कह देता है, तो कितना भी बड़ा व्यक्ति क्यों न हो, मन एक बार पुलकित हो ही जाता है। इसके पीछे छुपी होती है, व्यक्ति के अन्दर वात्सल्य और प्रेम को पा लेने की, और उसमें अपने आपको सुरक्षित कर लेने की भावना। मां के ममतामयी आंचल के तले शिशु अपने आपको निश्चिन्त महसूस करता है। उसको कोई कर्त्तव्य बोध तो होता नहीं है, तरह-तरह की शैतानियां करके भी वह मां की गोद में दुबक कर एकदम से निश्चिन्त हो जाता है, क्योंकि वह जानता है, कि रक्षक के रूप में मां उसके साथ खड़ी हैं।

कुछ ऐसी ही स्थिति होती है साधक या शिष्य की भी। शिष्य उस विराट सत्ता, जिसे ईश्वर या गुरु कहा गया है को भी मातृ रूप में देखने का प्रयास करता है। गुरु तत्व या ब्रह्म का तो कोई रूप होता है नहीं, जिसने जिस रूप में देखा उसे उसी प्रकार का अनुभव हुआ। साधक के अन्दर भी एक शिशु छुपा होता है, जिससे वह विराट सत्ता को मातृ रूप में देखने को आतुर होता है। उस विराट शक्ति को मातृ स्वरूप में देखा गया, तो जगदम्बा का स्वरूप समक्ष आया और महाविद्याओं का नाम आया। समस्त चराचर जिस गुरु तत्व से गतिमान है, उसी गुरु तत्व की शक्तियां ही तो हैं ये दस महाविद्याएं, जिन्हें काली, बगला, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, कमला, मातंगी आदि के नाम से जाना जाता है।

जीवन में गुरु के महत्व से मैं विशेष रूप से परिचित तो नहीं था, परन्तु उस परम शक्ति के अस्तित्व का मुझे एहसास अवश्य होता था। मैं उस ईश्वर को मां के स्वरूप में ही देखना पसन्द करता था, ऐसा लगता था जैसे इस संसार को बनाने वाली परम सत्ता मातृ रूप में हर पल मेरी रक्षा अदृश्य रूप से करती रहती है। यही कारण था, कि देवी स्तुति और महाविद्याओं के क्षेत्र में मेरा रुझान अधिक था।

जंगलों और वनों में भटकते-भटकते कई वर्ष बीत चुके थे, साधनाओं के क्षेत्र में एक स्तर भी प्राप्त किया था, परन्तु मैंने सुन रखा था, कि साधनात्मक एवं आध्यात्मिक जीवन का अन्तिम बिन्दु सिद्धाश्रम पहुंचना होता है। परन्तु सिद्धाश्रम पहुंचना इतना सरल नहीं है, यह भी मुझे ज्ञात था। हिमालय में स्थित इस दिव्य पुनीत तपोस्थली से ही समस्त ब्रह्माण्ड की गतिविधियों का सूक्ष्म रूप से संचालन होता है, सिद्धाश्रम संस्पर्शित किसी योगी की कृपा हो जाए, तब सिद्धाश्रम प्रवेश की संभावनाएं बनती हैं, और सिद्धाश्रम प्रवेश के लिए कई महाविद्या साधनाएं तो सिद्ध होनी ही चाहिए।

तभी से मैं इस धुन में था, कि किन्हीं ऐसे महात्मा का दर्शन हो, जो महाविद्याओं के क्षेत्र में सिद्धहस्त हों। संन्यास जीवन के बहाव में मैं काशी भी पहुंचा और गंगा के उस पार तट पर भी कुछ दिन रहा। वहां मेरी मुलाकात एक सौम्य साधु से हुई, जो कि शरीर से बिल्कुल दुबले-पतले थे, परन्तु जिनके चेहरे पर एक अपूर्व तेज चमक रहा था। तट के समीप अन्य कुटिया भी थीं जिनमें कुछ संन्यासी, तपस्वी रहते थे, परन्तु इस साधु से मैं भी कुछ अधिक आकर्षित सा हो गया था, जो दिन भर कुटिया के अन्दर ही रहते थे। केवल प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में गंगा स्नान के लिए ही बाहर आते थे, क्या खाते थे और क्या पीते थे कुछ पता नहीं था, क्योंकि कुटिया तो अन्दर से एकदम खाली ही थी। एक दिन मैं बहुत हिम्मत जुटा कर कुटिया के भीतर पहुंचा, तो वे पद्मासन में समाधिस्थ थे, उनके चेहरे पर असीम शांति झलक रही थी, पिछले कई दिनों से मैं उन पर नजर रखे था, किन्तु फिर भी मुझे उनका नाम ज्ञात न हो सका था। दो घण्टे तक मैं वहीं उनके पास ही बैठा रहा।

आंख खोलते ही उन्होंने मेरी ओर दृष्टि की, और बोले-'आओ बेटा मैं तो तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था' वे इस तरह बोल रहे थे, जैसे मुझसे चिर-परिचित हो जबकि मैं उनसे पहली बार मिल रहा था। बेटा शब्द उन्होंने कहा था और यह सुनकर मैं यंत्रवत्

मन्दिर में काले पत्थर की एक तीन फुट की मूर्ति के अलावा और कुछ भी नहीं था। मूर्ति पर इतनी अधिक धूल जमी हुई थी, जिससे पहिचानना मुश्किल हो रहा था, कि मूर्ति किसकी है।
गर्द को साफ करने के बाद मैंने गौर किया, तो मूर्ति काली की थी, एक हाथ में मुण्ड और दूसरे हाथ में खप्पर-शव पर आरूढ भगवती काली ही थी वे। एकदम से मुझे कुछ दिन पूर्व श्री चैतन्यानन्द जी के साथ बिताए क्षणों का स्मरण हो आया और मैंने काली साधना करने का मानस बना लिया।

सा उठकर उनके चरणों की ओर झुक गया। उन्होंने कहा, 'पगले तू तो मेरा भाई है, शायद तुझे ज्ञात नहीं...' और फिर उन्होंने बताया, कि पूर्व जन्म में हम दोनों एक ही गुरु के शिष्य रहे हैं, और काफी समय तक साथ रहे हैं। एक सुखद रहस्य का उद्घाटन हो रहा था मेरे सामने, मन में एक सुखद अनुभूति हो रही थी, कि मेरे भी कोई गुरु हैं... अभी तक तो मैं यों ही भटकता फिर रहा था, कोई पथ स्पष्ट नहीं था। आज 'पूर्व जन्म के गुरु' ये शब्द कान में जाते ही मन हिलोरें लेने लगा था और मैं, एक अजीब खुमारी में डूब गया।

कुछ दिन और उन साधु महाराज के साथ रहा, जिनका नाम चैतन्यानन्द था और वे काली के उपासक थे। उन्होंने काली तंत्र के क्षेत्र में अनेक आयाम स्थापित किए थे। यह मेरे लिए बड़े हर्ष की बात थी क्योंकि महाविद्या साधनाएं सिद्ध करने के लिए मैं कब से प्रयासरत था, परन्तु उचित मार्गदर्शन के अभाव में अभी कुछ ठोस हासिल नहीं कर पाया था।

चैतन्यानन्द जी ने बड़ी आत्मीयता से काली से सम्बन्धित गोपनीय रहस्य स्पष्ट किए और बताया कि मां काली किस तरह मातृरूप में हर पल उनकी रक्षा करती रहती हैं।

कुछ दिन उनके साथ और रहकर मैं गढ़वाल क्षेत्र के वन-प्रान्तरों में चला गया, वहां के सुरम्य प्राकृतिक दृश्यों के मध्य मैं उसी प्रकार शांत हो गया जैसे शिशु अपनी माता के पास पहुंचकर शांत हो जाता है। पहाड़ी वृक्षों के घने झुरमुटों को पार करने पर आगे एक जलाशय था, जिसके पास एक प्राचीन मन्दिर था। मन्दिर के पत्थर बरसाती पानी और मौसम के प्रतिकूल प्रभाव के कारण काले पड़ गए थे।

मन्दिर में काले पत्थर की एक तीन फुट की मूर्ति के अलावा और कुछ भी नहीं था। मूर्ति पर इतनी अधिक धूल जमी हुई थी, जिससे पहिचानना मुश्किल हो रहा था, कि मूर्ति किसकी है। गर्द को साफ करने के बाद मैंने गौर किया, तो मूर्ति काली की थी, एक हाथ में मुण्ड और दूसरे हाथ में खप्पर-शव पर आरूढ भगवती काली ही थी वे। एकदम से मुझे कुछ दिन पूर्व श्री चैतन्यानन्द जी के साथ बिताए क्षणों का स्मरण हो आया और मैंने काली साधना करने का मानस बना लिया।

...दो माह से ऊपर हो गया था और इन दो महीनों में चार बार असफलता मुझे प्राप्त हो चुकी थी और इस बार मैंने सोच लिया था, कि या तो साधना सफल होगी और नहीं तो अब मैं यहां से प्रस्थान कर जाऊंगा। आज साधना का अन्तिम दिवस था और मैं हताश था, मन में कभी चैतन्यानन्द जी के प्रति आक्रोश आ रहा था, कि पता नहीं उनकी विधि प्रामाणिक है भी या नहीं और कभी स्वयं पर क्रोध आ रहा था, कि किस धून में मैंने इस उपक्रम को करने का निश्चय किया था। अन्तिम आहुति तक भी मन में कुछ आशा थी, कि शायद कुछ घटित हो जाए लेकिन इस बार भी पहले जैसा ही हुआ। निराश होकर, मैं मन्दिर के बाहर चला गया और तारों को निहारता रहा।

मनो-मस्तिष्क में चैतन्यानन्द जी के कहे वाक्य भी कौंध रहे थे, कि 'तुम्हारे गुरु...' और यदि वे गुरु हैं, और जन्म-जन्म के गुरु हैं, तो क्यों नहीं सम्मुख आ रहे हैं और मार्गदर्शन कर रहे हैं, मैं मन ही मन बड़बड़ा रहा था। जिस प्रकार भूख लगने पर बालक शोर मचाता है, और मां कभी-कभी मजा लेने के लिए उसकी ओर ध्यान नहीं देती तो बालक क्रोधित हो जाता है, उसी प्रकार मुझे भीक्रोध आ रहा था। मुझे क्रोध न तो चैतन्यानन्द जी पर आ रहा था, और न ही देवी काली पर बल्कि मुझे क्रोध आ रहा था अपने पूर्व जन्म के गुरु पर... जो मुझे निर्देश नहीं दे रहे थे।

रात्रि के उस गहन पहर में जहां चारों ओर नि:स्तब्धता छाई थी, हवा बिल्कुल रुकी हुई थी, शान्ति इतनी अधिक थी, कि दूर से झिंगुरों की आवाज भी स्पष्ट सुनाई दे रही थी। परन्तु मेरे अन्त: में जो तूफान मचा हुआ था, उससे मैं बिल्कुल उद्वेलित हो गया था, क्रोध और खींझ के मिले-जुले आवेश में आकर मैं उस काली की मूर्ति को जलाशय में फेंक देने को उद्धत हुआ। मूर्ति जैसे ही जल में गिरी, एक तीव्र प्रकाश सा

**मूर्ति जैसे ही जल में गिरी, एक तीव्र प्रकाश सा हुआ, जैसे सैकड़ों बम एक साथ फट पड़े हों, उस प्रकाश में से एक नारी बिम्ब बाहर निकला, हूबहू वही काली की उस मूर्ति का साकार रूप था, हाथ में खप्पर व मुण्ड, गले में मुण्ड माला धारण किये मां काली सौम्य मुख मुद्रा में मेरे सामने करीब पचास फुट की दूरी पर जलाशय के मध्य, जल सतह से कुछ ऊपर हवा में स्थिर थी। विस्फोटों की श्रृंखला चलती रही और क्रमश: एक के बाद एक दसों देवियां सम्मुख उपस्थित होती गयी, उन सभी के वरद हस्त आशीर्वाद मुद्रा में उठे हुए थे।**

हुआ, जैसे सैकड़ों बम एक साथ फट पड़े हों, उस प्रकाश में से एक नारी बिम्ब बाहर निकला, हूबहू वही काली की उस मूर्ति का साकार रूप था, हाथ में खप्पर व मुण्ड, गले में मुण्ड माला धारण किये मां काली सौम्य मुख मुद्रा में मेरे सामने करीब पचास फुट की दूरी पर जलाशय के मध्य, जल सतह से कुछ ऊपर हवा में स्थिर थी। विस्फोटों की श्रृंखला चलती रही और क्रमश: एक के बाद एक दसों देवियां सम्मुख उपस्थित होती गयी, उन सभी के वरद हस्त आशीर्वाद मुद्रा में उठे हुए थे। यह अलौकिक दृश्य देखकर विस्मय से मेरी आंखें फटी जा रही थी।

पिछले दो माह से मैं ध्यान लगाकर कोई बिम्ब सामने लाने की कोशिश कर रहा था, परन्तु ध्यान में स्थिरता नहीं आ पाती थी और आज संयोग था, कि जब मैं खीझ कर मूर्ति को जल में फेंक चुका था, तब वह आलौकिक दृश्य मेरे सामने उपस्थित हो गया। कहां एक महाकाली की साधना के लिए मैं उद्धत हुआ और कहां दसों महाविद्याएं मुझे प्रत्यक्ष दर्शन दे रही थीं। गुरुदेव पर आया क्रोध (शिशुवत) अब उनके प्रति प्रेम और समर्पण में परिवर्तित हो चुका था, अश्रु मेरे नेत्रों से धारा प्रवाह बह निकले, अब मन में बस यही इच्छा शेष रह गई थी, कि मेरे गुरुदेव कैसे होंगे, कैसा होगा उनका स्वरूप और बस रुदन ही करता रहा मैं, एक शिशु की भांति।

जलाशय में पुन: एक विस्फोट हुआ, जिससे मेरा ध्यान उधर गया, अन्यथा मैं तो गुरुदेव के ख्यालों में महाविद्याओं को एकदम भूल ही गया था। एक-एक कर दसों देवियां उस प्रकाश पुंज में ही विलीन हो गयीं, तब पुंज एक पुरुषाकृति में परिवर्तित हो गया-दिप-दिप करते नेत्र, उन्नत ललाट, विशाल अनावृत्त वक्षस्थल, सुदृढ़ बाहु, सिर पर घनी जटाएं और ऊंचा गौर वर्णीय शरीर मानो पुरुषत्व या अन्तिम स्वरूप धारण कर कोई योगी इस जलाशय की सतह पर उतर आया हो।

उन्हें देखकर मेरे अन्दर एक विद्युत तरंग सी दौड़ गई, मुझे जैसे अन्दर से कोई कह रहा हो, कि यही तेरे गुरु हैं, जन्म-जन्म से गुरुदेव, सिद्धाश्रम के प्राणाधार परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी, जिनके दर्शन को देवता भी तरसते हैं। शायद मेरे मन की बात को वे समझ चुके थे और मुस्कुराते हुए जलराशि पर सामान्य रूप से चलते हुए किनारे पर आ गए। बिना एक क्षण गंवाए मैंने साष्टांग मुद्रा में उन्हें प्रणाम किया और लिपट कर उनके चरणों में फफक कर रोने लगा।

अभी तक न उन्होंने मुझमें कुछ कहा था और न मैंने कुछ कहा था, ऐसा लग रहा था जैसे जन्मों-जन्मों से जो मेरे गुरु रहे हैं, मां-बाप और पालनहार रहे हैं, आज मुझे मिल गए हैं और अब मैं उन्हें छोड़ना नहीं चाहता था। तभी पूज्य गुरुदेव की हथेली का मुझे पीठ पर स्पर्श हुआ, वे बड़े प्यार से मेरी पीठ सहलाते रहे। उनका वात्सल्य भाव पूरी तरह मेरे ऊपर बरस रहा था।

पुचकारते हुए उन्होंने मुझे उठाया और कहा, पगले! क्यों इतना विचलित हो रहा है, तुझे महाविद्या सिद्ध करनी थी न, बोल अब तो प्रसन्न है न?

प्रारम्भ में मैं इस ईश्वरी सत्ता को मातृ रूप में स्मरण करता था, अप्रत्यक्ष रूप से निकट अनुभव करता था, उन्हीं का स्नेहिल स्पर्श आज पूज्यपाद गुरुदेव के रूप में मुझे प्राप्त हो रहा था। मैं समझ चुका था, कि समस्त महाविद्याएं इन्हीं में समाहित हैं और ये दृश्य तो कुछ क्षणों पूर्व मैं देख चुका था, कि कैसे एक-एक कर दसों देवियां गुरुदेव के भव्य शरीर में अदृश्य हो गईं।

मेरे नेत्रों से अश्रु धारा प्रवाहित होती ही जा रही थी। गुरुदेव ने संयत होकर पद्मासन में बैठने का आदेश दिया नेत्रों के अर्द्ध निमीलित कर मैं बैठ गया, दो क्षण उपरान्त पूज्य गुरुदेव के अंगुष्ठ का स्पर्श मुझे मस्तक पर अनुभव हुआ। शरीर मुझे एकदम हल्का सा लगने लगा और मैं बिल्कुल ध्यानस्थ हो गया।

जब मेरी समाधि टूटी तो सूर्य नारायण उदित होने जा रहे थे। मैं पुलकित हो रहा था, रात्रि की बीती घटनाओं को स्मरण कर। समस्त महाविद्याओं के पुंजीभूत परमहंस निखिलेश्वरानन्द जी को गुरुदेव रूप में प्राप्त कर मैं धन्य-धन्य हो गया था।

**ब्रह्माण्ड स्वरूपोऽयं निखिल: निखिलेश्वर:।**
**तेनैव समनुप्रीता: दशविद्या सुकीर्तिता।।**

# दस महाविद्या साधना

इस साधना को किसी भी गुरुवार, किसी भी महाविद्या जयंती से अथवा नवरात्रि पर्व में रात्रि के समय प्रारम्भ किया जा सकता है। यह रात्रि के समय ही सम्पन्न की जाने वाली साधना है। यदि रात्रि में इसे सम्पन्न न करें, तो इसे ब्रह्म मुहूर्त में सूर्योदय के पूर्व भी सम्पन्न किया जा सकता हैं

पूर्व की ओर मुख कर बैठें। सामने चौकी पर गुरु चित्र स्थापित करें, अगरबत्ती, धूप-दीप जलाकर अपनी दाईओर रखें। साधना हेतु **'विजय सिद्धि माला'**, **'दस महाविद्या यंत्र'** एवं **'गुरु गुटिका'** प्राप्त कर ले।। गुरु चित्र का पूजन करें।

दोनों हाथ जोड़कर पूज्य गुरुदेव का ध्यान करें–

**प्रात भर्जामि तं मंगल सर्व मंगलं,**
**सृष्टि स्थितौ परम कारण मूल रूपं।**
**संसार बन्धन विमोचन हेतु भूतं,**
**श्री मद्गुरुं च निखिलेश्वर देवदेवम्।।**

### न्यास

निम्न मंत्र पढ़ते हुए दाहिने हाथ से अंगों का स्पर्श करें–

**ॐ अं आं कं खं गं घं ङं इं ईं हृदयाय नम:**
**ॐ परम उं ऊं चं छं जं झं त्रं ऋं शिरसे स्वाहा।**
**ॐ तत्वाय टं ठं डं ढं णं लृं लॄं शिखायै वषट्**
**ॐ नारायणाय एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्**
**ॐ गुरुभ्यो आं पं फं बं भं मं ओं नेत्र नत्राय वौषट्**
**ॐ नम: अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अ: अस्त्राय फट्**

### पूजन

**श्रीमद् गुरुं निखिलेश्वरम् आवाहयामि पूजयामि नम:।**
**पुष्पासनं दद्यात् पाद्यं, अर्घ्यं, स्नानं समर्पयामि नम:।**
**तिलकं समर्पयामि नम:**
**धूपं, दीपं, नैवेद्यं, च समर्पयामि नम:**

सर्वप्रथम गुरु आवाहन कर गुरु चित्र के नीचे पुष्प आसन दें जल अर्पण करें तथा अगरबत्ती दीपक स्थापित कर नैवेद्य अर्पित करें।

फिर एक माला गुरु मंत्र का जप सम्पन्न करें। तत्पश्चात् गुरु चित्र के सामने किसी प्लेट पर **'दस महाविद्या यंत्र'** को जो कि दिव्य मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित हो स्थाापित करें–

निम्न मंत्र बोलते हुए सभी दिशाओं में अक्षत फेंकें–

**ॐ गुरुभ्यो महाकाली मां पूर्वतो पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो भगवती तारा आग्नेये मां पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो षोडशी दक्षिणे मां पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो भैरवी नैऋत्ये मां पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो भुवनेश्वरी पश्चिमे मां पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो छिन्नमस्ता वायव्ये मां पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो मातंगी उत्तरे मां पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो धूमावती ऐशान्ये मां पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो बगलामुखी ऊर्ध्वे मां पातु।**
**ॐ गुरुभ्यो कमलात्मिका भूमौ मां पातु।**

फिर यंत्र को शुद्ध जल से स्नान करावें, तिलक, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प से पूजन करें, फिर अक्षत को कुंकुम में मिलाकर निम्न मंत्र को बोलते हुए यंत्र पर चढ़ावें।

**ॐ महाकाल्यै नम: – महाकालीं स्थापयामि नम:**
**ॐ तारायै नम: – तारां स्थापयामि नम:**
**ॐ षोडश्यै नम: – षोडशीं स्थापयामि नम:**
**ॐ त्रिपुर भैरव्ये नम: – भैरवीं स्थापयामि नम:**
**ॐ भुवनेश्वर्यै नम: – भुवनेश्वरीं स्थापयामि नम:**
**ॐ छिन्नशिरायै नम: – छिन्नमस्तकां स्थापयामि नम:**
**ॐ मातंग्यै नम: – मातंगीं स्थापयामि नम:**
**ॐ धूमावत्यै नम: – धूमावतीं स्थापयामि नम:**
**ॐ बगलायै नम: – बगलां स्थापयामि नम:**
**ॐ कमलायै नम: – कमलां स्थापयामि नम:**

इसमें गुरु गुटिका को यंत्र के बायीं ओर चावल की ढेरी बनाकर स्थापित करें, फिर पंचोपचार पूजन करें, फिर दोनों हाथ में पुष्प लेकर यंत्र पर निम्न मंत्र बोलकर चढ़ावें।

**माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कलामालिनी,**
**मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।**
**शक्ति: शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,**
**ह्रींकारी त्रिपुरा परात्परमयी माता कुमारीत्यसि।।**

फिर **'विजय सिद्धि माला'** से निम्न मंत्र का 7 माला जप नित्य 11 दिन तक सम्पन्न करें–

### मंत्र

**।। ॐ निं ह्लीं क्रीं ह्रीं गुरुभ्यो श्रीं ऐं स्त्रीं नम:।।**

11 दिन बाद यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें, गुटिका को लाल कपड़े में बांध कर पूजा स्थान में रखें तथा माला को धारण कर लें। छ: माह बाद गुटिका व माला को भी जल में विसर्जित कर दें। छ: माह की अवधि में नित्य मात्र 21 बार इस साधना के मंत्र का उच्चारण कर लिया करें।

इस साधना को सम्पन्न करते समय कई प्रकार के बिम्ब नेत्रों के समक्ष दिखाई देते हैं, इस स्थिति में विचलित होने की आवश्यकता नहीं है, गुरु सायुज्य महाविद्या साधना मातृस्वरूपा साधना है और जिस प्रकार मां अपने बालक का हर प्रकार से ध्यान रखती है, उसी प्रकार उस साधना में गुरु अपने शिष्य का हर प्रकार से ध्यान रखते हैं।

**साधना सामग्री- 900/-**

*अप्सराओं के दो वर्ग हैं, एक वर्ग में तो वे अप्सराएँ आती हैं, जिनकी साधना पुरुष करते हैं, और उन्हें प्रसन्न कर एक मित्र रूप में अपने अनुकूल बना कर उनसे धन, द्रव्य, यश सौभाग्य एवं सुख प्राप्त करते हैं।*

**दूसरे प्रकार की 'सुरति प्रिया अप्सराएं' होती हैं, जो स्वयं मृत्यु लोक के प्राणियों से संसर्ग सम्पर्क, साहचर्य चाहती हैं। वे खुद इसके लिए प्रयत्नशील होती हैं, कोई साधक थोड़ी-सी भी साधना करे तो उसे शीघ्र अनुकूलता प्रदान करती है**

मृगाक्षी नेत्रा अप्सरा ऐसी ही सुरति प्रिया अप्सरा है, जिसकी सही तरीके से यदि साधना भी सम्पन्न की जाय तो साधना में सिद्धि मिल जाती है और अप्सरा सिद्ध हो जाती है।

# मृगाक्षी नेत्रा

## अप्सरा प्रयोग

**अप्सरा सिद्धि करना किसी भी दृष्टि से अमान्य और अनैतिक नहीं है, उच्च कोटि के योगियों, संन्यासियों, ऋषियों और देवताओं तक ने इन अप्सराओं और किन्नरियों की साधना की है,**
**यों तो मन्त्र महोदधि आदि अन्य तांत्रिक ग्रंथों में 108 विभिन्न अप्सराओं की प्रामाणिक साधनाएं दी हुई हैं और उनमें से कई अप्सराओं की साधनाएँ साधकों ने सिद्ध की है और उसका लाभ उठाया है।**

**पर हमें 'सुरति प्रिया' वर्ग की अप्सरा साधना का प्रामाणिक विवरण प्राप्त नहीं हो पा रहा था, इस बार संयोग से सोलन शिविर से पहले शिमला के पास एक चैल नाम का स्थान है, जो कि प्रकृति की दृष्टि से अत्यंत रमणीय और प्रसिद्ध स्थान है, जिसे महाराजा पटियाला ने बसाया था।**

जब हम चैल के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, तभी हमारी वहां पर एक गृहस्थ संन्यासी से भेंट हो गई, **'गृहस्थ संन्यासी'** शब्द मैं इसलिए प्रयोग कर रहा हूँ, कि वे सही अर्थों में तो हिमाचल में रहने वाले गृहस्थ ही हैं, जिनके एक पत्नी और तीन संतान है, परन्तु यदि मूल रूप से देखा जाय तो वे संन्यासी हैं, उनका सारा जीवन तांत्रिक साधनाओं में ही व्यतीत हुआ और तन्त्र के क्षेत्र में वे अद्वितीय सिद्ध योगी हैं, उनका नाम सौन्दर्यानन्द जी है।

हमारी जिज्ञासा बढ़ी, हमने इनका नाम तो पहले भी सुन रखा था और हमें यह ज्ञात था, कि अप्सरा साधनाओं में ये सिद्धहस्त आचार्य हैं तथा इन्होंने अनेक अप्सराओं की साधनाएँ सम्पन्न की हैं, हमारी जिज्ञासा यह थी कि यदि हमें इनके द्वारा सुरति प्रिया अप्सरा साधना की जानकारी और साधना रहस्य ज्ञात हो जाय तो यह काफी महत्वपूर्ण कार्य होगा।

मैंने उनसे इस सम्बन्ध में निवेदन किया, तो उन्होंने कहा मैं एक जगह टिक कर बैठता नहीं, गृहस्थ अवश्य हूं परन्तु नहीं के बराबर गृहस्थ हूँ।

फिर चर्चा गुरुदेव के बारे में चली तो उनके साथ व्यतीत किए हुए दिन याद हो आये, उन्होंने बताया कि मैं लगभग एक वर्ष से भी ज्यादा उनके साथ रोहतांग के पास रहा था और उनसे काफी कुछ साधनाएं मुझे प्राप्त हुई थी।

**पर इसके बाद मेरा रुझान अप्सरा साधना की ओर बढ़ गया और मैंने अपने जीवन में यह निश्चय किया कि सभी साधनाओं को परख लूं और सभी साधनाएँ संपन्न कर लूं और मुझे इसमें पूरी कामयाबी मिली, कई अप्सराओं को मैंने सिद्ध किया है, यद्यपि उन सब की क्रिया, उन सब को सिद्ध करने**

**का तरीका अपने आप में अलग है और गोपनीय है, यदि 'मंत्र महार्णव' आदि ग्रन्थों में प्रकाशित साधनाओं के आधार पर इन्हें सिद्ध किया जाय तो सफलता नहीं मिल पाती।**

मैंने परिश्रम कर कई संन्यासियों से और इस क्षेत्र के श्रेष्ठ योगियों से मिल कर इन साधनओं को सीखा है, सिद्ध किया है, उन्हें प्रत्यक्ष किया है।

**अप्सरा साधना सिद्ध करने से व्यक्ति निश्चिन्त और प्रसन्न चित्त बना रहता है, उसे अपने जीवन में मानसिक तनाव व्याप्त नहीं होता, अप्सरा के माध्यम से उसे द्रव्य, वस्त्र एवं अन्य भौतिक पदार्थ उपलब्ध होते रहते हैं, यही नहीं अपितु पूर्णरूपेण सिद्ध करने पर अप्सरा साधक के पूर्णतः वशवर्ती हो जाती है और साधक जो भी आज्ञा देता है, उस आज्ञा का वह तत्परता के साथ पालन करती है।**

जब हमने सुरति प्रिया अप्सरा साधना रहस्य के बारे में जिज्ञासा प्रकट की, तो वे एक क्षण के लिए चौंके, पर जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि हम गुरुदेव के दीक्षित शिष्य हैं, तो उन्होंने **'मृगाक्षी अप्सरा साधना रहस्य'** स्पष्ट कर दिया, जो कि अभी तक सर्वथा गोपनीय रहा है, मृगाक्षी का तात्पर्य मृग के समान भोली और सुन्दर आँखों वाली अप्सरा से है, जो सुन्दर, आकर्षक, मनोहर, चिरयौवनवती और प्रसन्नतचित्त अप्सरा है, जो निरन्तर साधक का हित चिन्तन करती रहती है, जिसके शरीर से

**मृगाक्षी का तात्पर्य मृग के समान भोली और सुन्दर आँखों वाली अप्सरा से है, जो सुन्दर, आकर्षक, मनोहर, चिरयौवनवती और प्रसन्नतचित्त अप्सरा है, जो निरन्तर साधक का हित चिन्तन करती रहती है, जिसके शरीर से निरन्तर पद्म गंध प्रवाहित होती रहती है और जो एक बार सिद्ध होने पर जीवनभर साधक के वश में बनी रहती है।**

निरन्तर पद्म गंध प्रवाहित होती रहती है और जो एक बार सिद्ध होने पर जीवनभर साधक के वश में बनी रहती है।

स्वामीजी ने हमें इससे संबंधित तांत्रिक प्रयोग स्पष्ट किया था, जो कि वास्तव में ही अचूक और महत्वपूर्ण है।

## मृगाक्षी अप्सरा साधना रहस्य

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक अत्यन्त सुन्दर सुसज्जित वस्त्र पहिन कर साधना स्थल पर बैठें, इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्र पहिने जा सकते हैं, जो सुन्दर हो, आकर्षक हो, साथ ही साथ अपने कपड़ों पर गुलाब का इत्र लगावें और कान में भी गुलाब के इत्र का फौहा लगा दें।

फिर सामने गुलाब की दो मालाएं रखें और उसमें से एक माला साधना के समय स्वयं धारण कर लें।

इसके बाद एक थाली लें, जो कि लोहे की या स्टील की न हो, फिर उस थाली में निम्न मृगाक्षी अप्सरा यंत्र का निर्माण चांदी के तार से या चांदी की सलाका से या केसर से अंकित करें।

### मृगाक्षी अप्सरा यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| मृ | २ | ३ | न |
| गा | ७ | | |
| क्षी | ५ | ९ | मः |

फिर इस पात्र में पहले से ही सिद्ध किया हुआ, दिव्य तेजस्वी मृगाक्षी अप्सरा महायन्त्र को स्थापित करें, जो कि पूर्ण मंत्र सिद्ध प्राण चैतन्य और सिद्ध हो, इस यन्त्र के चार कोनों पर चार बिन्दियां लगावें और पात्र के चारों ओर चार घी के दीपक लगावें, दीपक में जो घी डाला जाय, उसमें थोड़ा-थोड़ा गुलाब का इत्र भी मिला दें, फिर पात्र के सामने पांचवां बड़ा-सा दीपक घी का लगावें और अगरबत्ती प्रज्वलित करें, तथा इस मन्त्र सिद्ध तेजस्वी **'मृगाक्षी महायन्त्र'** पर 21 गुलाब के पुष्प निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें।

**मन्त्र**

*।। ॐ मृगाक्षी अप्सरायै वश्यं कुरु कुरु फट् ।।*

जब 21 गुलाब के पुष्प चढ़ा चुके तब प्रामाणिक और सही स्फटिक माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें।

**गोपनीय मृगाक्षी महामन्त्र**

*।। ॐ श्रृं श्रैं मृगाक्षी अप्सरायै सिद्धं वश्यं श्रैं श्रृं फट्।।*

जब तीसरे दिन मंत्र जप पूर्ण हो जाय, तब वह **स्फटिक माला** भी अपने गले में धारण कर लें और आंख बंद करके शांत चित्त भाव से बैठा रहे, उस समय सूक्ष्म रूप से उसकी उपस्थिति का अहसास होता है (ध्यान रहे साधना करते समय कमरे में साधक के अलावा कोई अन्य प्राणी न हो)। कई साधकों को उनके आध्यात्मिक स्तर के अनुसार प्रथम बार में ही प्रत्यक्षीकरण भी हो सकता है तब उससे वचन ले ले, तभी साधना पूर्णरूपेण सिद्ध मानी जाती है।

सूक्ष्मता से उपस्थिति का अहसास होने के बाद जब कभी हम रात्रि में सोने से पूर्व अप्सरा मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करके अपना कोई प्रश्न रखते हैं तो अप्सरा हमें स्वप्न के माध्यम से उत्तर देती है और हमें आत्मिक रूप से उत्साह का आनंद की अनुभूति होने लगती है। इस साधना में तेजस्वी मृगाक्षी अप्सरा महायंत्र का सर्वाधिक महत्व है।

वास्तव में ही यह अद्भुत अचरज भरी **'सुरति प्रिया मृगाक्षी अप्सरा'** का प्रयोग पाठकों के लिए सौभाग्यदायक सिद्ध होगा, ऐसा हमें विश्वास है।

(यह साधना 'मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान' पत्रिका के पुराने अंक से प्रकाशित की जा रही है)

**साधना सामग्री-550/-**

# शरीर स्वस्थ रखना हम सभी का कर्त्तव्य है

## स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है

### शरीर के प्रत्येक अंग को सुड़ौल बनाना है और मन से हर समय जवान रहना है तो अपनाइये

# योग

### और भगाइये शारीरिक मानसिक रोग

इस आसन का आकार उष्ट्र अर्थात् ऊंट की तरह होता है इसीलिए इसे उष्ट्रासन कहते हैं। सर्वप्रथम वज्रासन में बैठ जाएं, इसके पश्चात् घुटनों के बल सीधे खड़े हो जाएं और फिर पाँवों की अंगुलियों को भूमि से स्पर्श कराते हुए ऐड़ियाँ ऊपर की ओर कर लें फिर पीछे झुकते हुए दाहिने पैर की ऐड़ी को दाहिने हाथ एवं बायें पैर की एड़ी को बायें हाथ से पकड़ लें। पीछे झुकते समय गर्दन भी पीछे की ओर पूरी तरह झुका लें एवं दृष्टि को ऊपर की तरफ केंद्रित करें। इस स्थिति में गर्दन नीचे पैरों की तरह झूलती रहेगी। इसी स्थिति को उष्ट्रासन कहते हैं।

लगभग 10 से 15 सेकेण्ड तक इस स्थिति में रहें फिर धीरे-धीरे सामान्य अवस्था में वापस आ जाएं।

**लाभ**

इस आसन के अभ्यास से कंधे पुष्ट व मजबूत होते हैं। फेफड़ों की हड्डियां व मेरूदण्ड लचकीला बन जाता है, जिन व्यक्तियों की हड्डियां कठोर हों इस आसन का अभ्यास धीरे-धीरे करना चाहिए जिससे कि हड्डियों में लोच आने लगती है। यह आसन बचपन से ही अगर किया जाए तो वह व्यक्ति बुढ़ापे में भी सदा चुस्त व फुर्तीला बना रहता है। शरीर में काम करने की क्षमता बढ़ती है व बुढ़ापे में भी जवान बना रहता हैं इसी प्रकार अगर बूढ़ा व्यक्ति भी इस आसन का अभ्यास करें तो धीरे-धीरे उसके शरीर में लचीलापन आ जाता है और शरीर में चुस्ती व स्फूर्ति बनी रहती है तथा और व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक चल-फिर व काम कर सकता है। कमर पतली व सीना चौड़ा होता है। कंधे, हाथ, कोहनियों, घुटनों व जंघाओं में बल आता है। जिन व्यक्तियों की बाहें टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं उनको इसका अभ्यास अवश्य करना चाहिए। कमर, गर्दन का दर्द दूर होता है और कमर को बल मिलता है। स्थूल पेट वालों को इसके अभ्यास करने से बड़ा पेट कम हो जाता है।

यह आसन श्वास नलिका एवं फेफड़ों के लिए अत्यधिक लाभदायक है। इस आसन का अभ्यास करने से श्वास संबंधित तकलीफें दूर हो जाती हैं एवं रात्रि में खर्राटें आने जैसी समस्या का निवारण होता है वह आसन कंधों की कठोरता को दूर करता है। इस आसन को करने से असक्त कंधे एवं कूबड़ संबंधित समस्याएं खत्म होती है। रीढ़ की हड्डी का दर्द एवं रीढ़ की हड्डी में लगी चोट को ठीक करने के लिए यह आसन बहुत ही उपयुक्त है। इस आसन का अभ्यास प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। परन्तु अल्सर व हर्नियां के रोगी को इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए।

## नवस्फूर्ति, नवचेतना एवं सौन्दर्य प्राप्ति के लिए

# उष्ट्रासन

# आयुर्वेद सुधा

# मूंग दाल
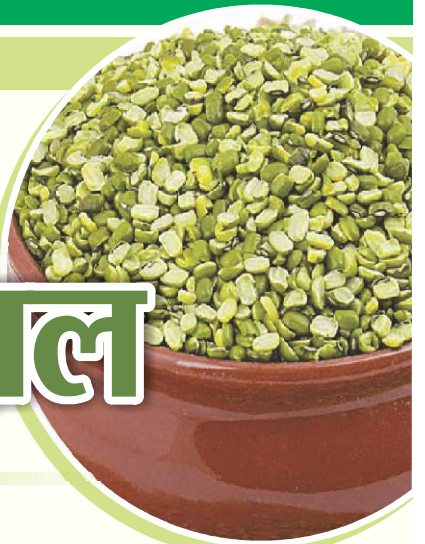
नाम–संस्कृत-मृद्ग, सूपश्रेष्ठ, भक्तिपद, हयानंद, सुफल इत्यादि। हिन्दी-मूंग। बंगला-मुंग, बुलट, खेरूया। मराठी-मूंग। गुजराती-मग। पंजाब-मूंग।

वर्णन–मूंग की दाल सारे भारतवर्ष में आमतौर से खाई जाती है। इसको सभी जानते हैं। इसका पौधा शुरू में क्षुप के रूप में पैदा होता है और बड़ा होने पर लता के रूप में बदल जाता है। रंग के भेद से मूंग की कई जातियाँ होती हैं। जैसे–काले, हरे, पीले इत्यादि।

गुण, दोष और प्रभाव–आयुर्वेदिक मत–भावप्रकाश के मतानुसार मूंग रूखा, हलका, मलरोधक, कफपित्त-नाशक, शीतल, स्वादिष्ट, किंचित् वातकारक, नेत्रों को हितकारी और ज्वर को दूर करने वाला होता है। सब प्रकार के मूंगों में हरा मूंग उत्तम होता है। क्योंकि यह पचने में बहुत हलका होता है।

यह मंदाग्नि को दूर करता है, स्वर को सुधारता है और मूत्र रोगों में लाभ पहुँचाता है। यह एक उत्तम पथ्य है।

यूनानी मत–यूनानी मत से मूंग स्वादिष्ट, पौष्टिक, आँतों का संकोचन करने वाला, खून को बढ़ाने वाला तथा ज्वर में लाभदायक होता है। आँख के रोग, नाक के रोग, मस्तकशूल, गले की सूजन, ब्रोंकाइटीज, गुर्दे के रोग, पित्तविकार और रक्त-सम्बन्धी रोगों में यह लाभ पहुँचाता है।

मूंग या मूंग की दाल औषधि की अपेक्षा पथ्य के रूप में ही विशेष उपयोग की जाती है। ज्वर के अन्दर एक उत्तम पथ्य के रूप में इसका उपयोग किया जाता है।

मूंग में मांसवर्द्धक द्रव्य 23 प्रतिशत, आटा 54 प्रतिशत, तेल 2 प्रतिशत और राख 4 प्रतिशत रहती है। इसमें फास्फोरिक एसिड भी पाया जाता है। जीवन रक्षा के लिये उपयोगी विटामिन (ए), विटामिन (बी), लोहा, केल्सियम और फास्फोरस मूंग के अन्दर बहुत काफी मात्रा में पाये जाते हैं। इसलिये पथ्य के रूप में यह एक उत्तम वस्तु है। लेकिन यह ख्याल रखना चाहिये कि ये सब तत्त्व इसके छिलके वाली दाल में ही पाये जाते हैं। छिलका निकाल डालने पर इसके बहुत से तत्त्व नष्ट हो जाते हैं।

ज्वर–ज्वर में मूंग की दाल देना उत्तम पथ्य है। यह छिलके सहित काम में लेनी चाहिए। ज्वर होने पर मूंग की दाल में सूखे आँवले डाल कर पकायें और नित्य सुबह-शाम दो बार खायें। इससे ज्वर ठीक होगा, दस्त साफ आयेगा। मूंग आँखों के लिए हितकारी है।

शक्तिवर्धक–1. लम्बे समय तक बीमार रहने के बाद ठीक होने पर नित्य मूंग की दाल खाने से शक्ति बढ़ती है। 2. दुर्बल रोगियों को जिन्हें अन्न देना मना हो, साबुत मूंग पानी में उबाल कर पानी छाल लें और इस पानी में नमक, काली मिर्च स्वाद के अनुसार डाल कर हींग से छौंक लें और थोड़ा-थोड़ा बार-बार उन्हें पिलायें यह स्वादिष्ट, सुपाच्य और निर्दोष अन्न का पेय है जो शक्ति भी देता है। 3. मूंग के लड्डू खाने से शक्ति बढ़ती है।

कब्ज़–चावल-मूंग की खिचड़ी खाने से कब्ज़ दूर होता है। दो भाग मूंग की दाल एक भाग चावल की खिचड़ी बनायें। नमक डाल सकते हैं। फिर घी डाल कर खायें। इससे कब्ज़ दूर होगा और दस्त साफ आएगा।

जलना–मूंग पानी में पीसकर जले हुए स्थान पर लेप करें।

स्वास्थ्य की दृष्टि से मूंग की दाल सबसे पौष्टिक होती है। यदि इसे अंकुरित करके सुबह टमाटर, खीरा, हरे पत्ते की सलाद के साथ ली जाये तो बहुत ही लाभकारी है। भरपूर प्रोटीन एवं फाइबर मिलता है। इसमें आप चना, मूंगफली आदि भी मिला करके अंकुरित कर सकते हैं। इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और शरीर में विषाक्त तत्त्वों में कमी आती है। कब्जियत दूर होती है और पेट सम्बन्धी समस्या नहीं होती।

उपयोग–नासूर–हरे मूंग को मुँह में चबाकर नासूर में लगाने से नासूर मिट जाती है।

दूध का जमाव–मूंग और सांठी चावलों को पीसकर गरम करके स्तनों पर लेप करने से दूध का जमाव बिखरता है।

पित्त ज्वर–मूंग और मुलेठी का यूष बनाकर पिलाने से पित्त ज्वर शान्त होता है।

अतिसार–सिके हुये मूंग और चावलों के खीलों का क्वाथ बनाकर उसमें शहद और शक्कर डालकर पीने से अतिसार मिटता है।

मूंगपाक–मूंग की दाल को पानी में गलाकर उसका छिलका निकालकर उसको सिल पर बारीक पीस लेना चाहिये। फिर उसको समान भाग गाय के शुद्ध घी में डालकर हल्की आँच में सेकना चाहिए। जब उसमें खुशबू आने लगे तब उसको उतारकर उसमें दुगुनी मात्रा शक्कर की चासनी बनाकर मिला लेनी चाहिये और साथ ही बादाम, पिश्ते, इलायची, केशर, खोपरा और वंशलोचन भी उसमें मिलाकर लड्डू बाँध लेना चाहिये। इन लड्डुओं को पाचन शक्ति के अनुसार उचित मात्रा में गरम दूध के साथ खाने से वीर्य बढ़ता है और काम-शक्ति, स्मरण शक्ति तथा मनुष्य की जीवनी शक्ति सतेज हो जाती है।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)
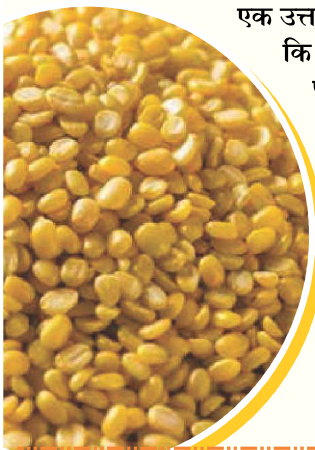
# Tara Mahavidya Sadhana

# WEALTH AND RICHES

Just as the Goddess Mother Mahakali is worshipped in Bengal, similary in the outer parts of Bihar and Bengal the Goddess Mahavidya Tara is worshipped with great devotion and faith.

According to one description that appears in scriptures Tara is but another from of Kali.

Goddess Bhagwati Tara assimilates within her form the refulgence of the sun. It is said nothing is impossible for a true devotee of Tara and if pleased the kind Goddess make the Sadhak very rich by providing him opportunities by virtue of which he can amass wealth.

Many great Sadhaks have experienced the grace of the Goddess. I myself have met a Sadhak who no sooner expresses his desire receives the desired amount of money from some source or another. But a true Sadhak never misuses his power and puts the acquired wealth to the best possible use.

The text Brahm-yamal Tantra highly praises Tara Sadhana. According to it the Sadhak becomes free from all types of fears and the Goddess Lakshmi herself graces his house. The Sadhak becomes powerful like Lord Bheirav and no task in the world remains impossible for him.

Among the great Sadhaks of Tara is Rishi Vashishtth. He once tried the Tara Sadhana through the Vedic system but failed. Hence he cursed the Mantra and the Sadhana became ineffective.

The original Mantra of Tara is Hreem Treem Hoom. But later Lord Brahma in order to neutralize the effect of the curse changed it to Ayeim Om Hreem Streem Hoom Phat.

The following Sadhana of Tara is a very special ritual through which the Sadhak is able to assimilate the powers of the Goddess in his own form. For this a special verse is first chanted which energises the body and also supplicates to the divine Goddess to present herself in subtle or physical form to bless the Sadhak.

For the Sadhana take a bath and wear fresh clothes. On a wooden seat before yourself place **Tara Yantra.** Next to **the Yantra** also place an energised pictures of Mahavidya Tara. Next chant thus with the palms joined together and the eyes fixed on the **picture of Goddess Tara.**

Pratyaa-leedd-padaappitaanghi-shavvahrid-ghor-aatahaasaa-para, Kharvaa Neelvishaal-pingal-jataajuteik-naageir-yutaa. Khadagendi-varakartari-kharpar-bhujaa Hoomkaar-beejod-bhavaa, Jaadyannyasya Kapaalarktu Jagataam Hantyugra-taaraa Swayam.

Next offer vermilion, rice grains and flowers on the Yantra and light a ghee lamp. Thereafter chant 21 rounds of the following Mantra with **coral rosary** for three days.

**Ayeim Om Hreem Streem Hoom Phat.**

After Sadhana place the Yantra and rosary in your safe where you keep your valuables.

Sadhana Articles : 500/-

# Dhanvantri Sadhana

## No More Diseases!

With so many problems there in the society and with the environment getting more and more polluted each day it is nothing surprising that man is today afflicted by so many ailments both mental and physical. What more a majority of these ailments do not have any permanent cure. Modern Medicine sure can suppress the problem for some time but later the symptoms return. Also continuous use of medicines leads to new physical problems and adverse reactions.

If we look into the past we would find that the people then were more healthy. They lived to a ripe old age full of vigor and vim. But today hardly has one crossed the age of 45 then one starts to feel tired and energyless. By the age of 60 a person is drained of all energy and enthusiasm. After that life just becomes a long wait for death.

Youth today means just the period from 20 to 30. On the other hand our ancestors used to live to an age of 100 and that too with enthusiasm and verve. What then has gone wrong today? Were there no ailments then.?

This is not so. Ailments sure were there but they had a different method of curing them. They did not just depend on medicine rather they used the power of Mantras to get rid of even the seemingly incurable diseases. Two sons of Lord Krishna were afflicted by leprosy and the Lord cured them through Mantras.

This wonderful system of cure is as potent as it was then. All one needs is the faith and determination to try the same. Science may not have faith in Mantras but it is a fact that Yogis have metaphorphosed old age into resplendent youth through the power of Mantras. One such rare and secret Sadhana is the **Dhanvantri Siddhi Prayog.**

Through this amazing ritual one can get rid of any disease or ailment. ***Dhanvantri*** was a great Yogi and Ayurved expert in the ancient times. He was able to cure even so called irremediable ailments through it. One who tries this Sadhana ever remains full of energy and diseases cannot invade his physique.

This three day Sadhana should be started on Ekadashi (eleventh day of bright fortnight of lunar calendar). Have food only once daily in these 3 days. early morning have a bath and wear fresh clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth. On it place a ***Dhanvantri Yantra***. Light a ghee lamp and offer flowers and vermilion on the Yantra. Pray to the Guru for success in the Sadhana. On left of the Yantra place **Ashminaa** on a mound of rice grain dyed red with vermilion. Then join both palms and chant thus.

***Satyam Cha Yen Niratam Rogam***
***Vidhootam, Anveshitam Cha Savidhim***
***Aarogya-masya. Gooddam Nigoddam***
***Oushadhya-roopam. Dhanvantreem Cha***
***Satatam Prannamaami Nityam.***

Then with a **Dhanvantri rosary** chant 31 rounds of following Mantra.

***Om Ram Rudraay Rog-naashaay***
***Dhanvantaryei Phat***

After 3 days put the Yantra, Ashminaa and rosary in a clay pot with some rice grains and then drop the pot in a pond in a pond or river.

***Sadhana Articles — 600/-***

## 8 अक्टूबर 2022

### सद्गुरु निखिलेश्वरानन्द कृपायुक्त

# सहस्त्राक्षी लक्ष्मी साधना शिविर

**शिविर स्थल :**

अन्नपूर्णा मन्दिर, लदरूहीं, **चौंतड़ा**, जिला-मण्डी (हि.प्र.)

**आयोजक हिमाचल प्रदेश सि.सा. परिवार**-आर.एस. मिन्हास-8894245685, संजीव कुमार-8894513703, अजय कुमार-9816120454, बलराम काकु-9805580784, विनीत कुमार-8017008690, विकास सूद-9816066485, रमेश चन्द्र, अजय कुमार, अजय धरवाल, गोविंद राम, त्यागी, रोहित, पुरुषोत्तम, महेश बस्सी, खेमचन्द, वीना देवी, इला ठाकुर, नीना पटियाल, **काँगड़ा**-देव गौतम-8894075015, वृन्दा गौतम, सुनील नाग, ओंकार राणा, सुनन्दा, संजय सूद, कुशला देवी, अशोक कुमार, राजू, संध्या, केसर गुरंग, जुल्फीराम, ओमप्रकाश शर्मा, जीतलाल कालिया, सुभाष चन्द्र शर्मा, नरेश शर्मा, दिनेश निखिल, **हमीरपुर**-निर्मला देवी, राजेन्द्र शर्मा, सुनील भाटिया, प्रवीण धीमान, **जाहू**-सागरदत्त, प्रभदयाल, चमन, अशोक कुमार, **सुन्दरनगर**- जयदेव वर्मा-9816314760, वंशीराम ठाकुर, नीलम, **शिमला**- चमनलाल कौण्डल, सुरेन्द्र कंवर, टी.एस. चौहान, तुलसीराम कौण्डल

## 9 अक्टूबर 2022

# तारा महाविद्या साधना शिविर

**शिविर स्थल :** होटल M4U (एम फॉर यू), हमीरपुर रोड, नजदीक बस स्टैण्ड, **घुमारवीं (जिला बिलासपुर-हि.प्र.)**

**आयोजक घुमारवीं**-ज्ञानचन्द रतन-9418090783, धर्मदेव शर्मा -9805820830, राजेश कुमार-8219200398, संजय शर्मा एडवोकेट-9218502781, हेमलता कौण्डल-9816048648, प्रदीप गुप्ता-9816047662, गोवर्धन-9816093510, हेमराज-9418673731, प्रेम सागर-9418115670, नरेन्द्र- 82195 47388, डॉ. सुरेश ठाकुर-8988142740, पिंकी- 9817068928, प्रकाश राणा-8580903884, सुषमा- 98051 39373, बीना-9418528102, जगदीश ठाकुर- 7018265076, यशवन्त राणा-8218259028, कमलेश ठाकुर-8219597325, बलदेव भाटिया-9817194811, जयपाल शर्मा-9418075136, शुका राम-9736298911, तिलक राज-8219834869, रविन्द्र कुमार-9816307688, ललित कुमार-9643676057, स्नेह लता-8278849848, उत्तम-98171 90815, कश्मीर सिंह-9816125858, सागर-9459318584, यसुमति- 9418520478, रामकुमार-9816862834, अश्विनी शुक्ला-9888530833, सुरेन्द्र शुक्ला-7018176331, राजू सेन -98829 66086, सिरी राम-9816491011, डॉ. सुमन-94182 57738, सन्तोष-9816160261, सुभाष नड्डा-9817171928, जगदीश गदी-9816764766, मनशा राम-8894880584, अमरनाथ शर्मा-9817083130, संजू बाबा-9418005236, सुरेन्द्र-98170 44770, अश्विनी कुमार-9817724090, चमन-9805876001, विजय-9817055316, रजनी-96254 74643, अरविन्द कुमार-9418050544, जगदीश (मरहोल) -9816592904, सुन्दर-97361 44322, रामस्वरूप- 9418460221, **बरठीं**- प्रकाशो-9418084207, **तलाई**-डॉ. राजेश-9625478910, जेजवीं-9816693447, गोपाल -9805986985, रामलाल- 9816817466, विश्वनाथ -9816574250, **बिलासपुर**- जीवनलता-9418046965, राजेश भारद्वाज-7018418938, धर्मपाल- 9418450251, अंकुश- 97362 57462, **कन्दरौर**-चैन लाल- 9805650078, सुरेश चन्देल-70185 35326, सदा राम- 9816243101, **हमीरपुर**- राजेन्द्र शर्मा-9418134039, कुलदीप -9459012418, डॉ. गगन-9418125421, प्यारसिंह-96253 04976, **मण्डी**-डॉ. भुवन-9817041416, **सुन्दर नगर**-रविन्द्र नाथ-94187 26430, जयदेव शर्मा-9816314760, **सरकाघाट**-रोशनलाल-9459590877, जगदीश शर्मा- 70186 30982, **शिमला**-तुलसी राम कौण्डल- 9418694858, सी.एल. कौण्डल-9418040560, अशोक शर्मा- 94599 60098, **नगरोटा सूरियां**-ओम प्रकाश-9418250674, अमरजीत -9418350285

## 15 अक्टूबर 2022

# 10 महाविद्या साधना शिविर

**शिविर स्थल :** मंगल रिसोर्ट, बरगदवाँ चौराहा, खेतान हॉस्पीटल के सामने, सुनौली रोड, **गोरखपुर (उ.प्र.)**

**मुख्य आयोजक**-इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, के.के. शुक्ला, (गोरखपुर) 737661853, सेतभान जी (गोरखपुर) 87368 64333, अजय जयसवाल (वाराणसी)-9335643294, डॉ. एस.पी. चौरासिया (लाटघाट)-9450734919, डॉ. राज द्विवेदी (गोरखपुर) -9140524182, अमरनाथ जी (गोरखपुर)-91405 24182, योगी रमेश नाथ जी (गोरखपुर) 9517084233, **आयोजक गोरखपुर**-बद्री नारायण श्रीवास्तव, प्रभात कुमार, राम नारायण पठवा, दुर्गा सिंह, राम प्रकाश पाण्डेय रवि प्रकाश, डॉ. चन्द्र प्रकाश जी, विवेकानन्द त्रिपाठी, महेन्द्र प्रताप सिंह, सुरेश गुप्ता, अवधेश प्रसाद सिंह, कौशल्या देवी, खुशबू गुप्ता, दीप नारायण शुक्ला, गिरी जी, मोदन बाल जी, रामाशेष जी, सुग्रीव चन्द्र जी, उपेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, सम्पूर्णनन्द त्रिपाठी, मिलन जी, गुठान निसाद, शकुन्तला देवी, रमेश मौर्या, सत्यदेवी, कान्तानाथ जी, सुधीर जी, रमई जी, रामहरी जी, रविन्द्र जी, किशन कुमार, रामलाल जी, व्रिजेश कुमार, अशोक गुप्ता, रविन्द्र कुमार, एतवार नाथ, देवेन्द्र नाथ मिश्रा, अलख, सुग्रीव कुनोजिया, प्रेम प्रकाश, संजय निसाद, महेश गुप्ता, सुनील पासवान, गुठुल प्रसाद, ओरी शर्मा। **संत कबीर नगर ( खलीलाबाद )**-जनार्दन सिंह, रूधन प्रसाद चौरासिया, ऋषिकेश राय, ललख निरंजन, चन्द्रभान राय, डॉ. गिरी राय, गंगा प्रसाद, बैजनाथ वर्मा, रामाशीष चौरासिया। **लाटघाट**-व्यास मिश्रा, दुर्गा प्रसाद मौर्या, विंध्यवासनी राय,

हेमन्त दुब्बे, सुजी राय, दया शंकर शुक्ला, श्रीमती निर्मला चौरासिया, राम केवल सिंह, विजय शंकर यादव, दिनेश सिंह, डॉ. अनिरूद्ध सिंह, डॉ. रत्नेश पाण्डेय, डॉ. शिवम यादव, दिनेश चौरासिया, मूनीष चन्द्र मिश्रा, विजय वर्णवाल, योगेन्द्र पटेल, डॉ. रामकिसुन सिंह, कमलेश राय, डॉ. श्री कृष्ण मौर्या, मोती मौर्या, रामसिंह मौर्या, बिनोद कुमार, सत्य प्रकाश सिंह, उपेन्द्र पटेल, अनिस दुबे, उपेन्द्र मौर्या। **दोहरीघाट बड़हलगंज** – राजकुमार राय, अजय राय, आनन्द तिवारी, नित्यानन्द मिश्रा, दया शंकर तिवारी, डॉ. राजीव पाण्डेय, वीरेन्द्र शाही, श्री कृष्ण यादव, राम गोविन्द यादव, संतोश गुप्ता, शिवांकर तिवारी। **रौनापार** – अभय नारायण सिंह पटेल, रवि शंकर यादव, ओम प्रकाश गोड़, जय बहादुर सिंह, अनिल यादव, सीता राम यादव, उमेश गुप्ता, शंकर गुप्ता, रामरूप यादव, वि.के. शर्मा, मनोज श्रीवास्तव। **आजमगढ़** – विंध्याचल पाण्डेय, घनश्याम तिवारी, संजय पाण्डेय, रवि उपाध्याय, पूजा यादव, जितेन्द्र यादव, सौरभ उपाध्याय, मकरन्द साहनी, आशा चौहान, राजेश गुप्ता, जितेन्द्र मौर्या, नन्दु यादव, दुख हरण यादव (सदर आजमगढ़)। **बलिया**– डॉ. शशांक राय, सरोज जी, विंन्ध्याचल चौहान, विजय प्रजापती, जर्नादन यादव, राम कृपाल चौहान। **बस्ती सोनहा**– सुरेश चन्द्र, **अम्बेडकर नगर**– चन्द्रभान यादव, **बस्ती**–दिनेश चन्द्र पाण्डेय, ओमकार सिंह, ब्रिजेश सिंह। **कुशीनगर** – ओम प्रकाश पाण्डेय, रत्ना राज लक्ष्मी पाण्डेय, धर्मेन्द्र गुप्ता, वैद्यनाथ वर्मा, **जहांगीरगंज**– इन्द्रजीत सिंह, महिपत उपाध्याय, विनोद गुप्ता, **रामनगर**–अशोक शुक्ला, (मैनेजर साहब), अच्छे लाल यादव, राम कर्ण प्रजापति, अरूण कुमार त्रिपाठी, सुरेश कुमार गुप्ता, ओमकार पाण्डेय। **दर्शननगर**– डॉ. जगदीश सिंह, जगदीश सिंह, लालजी मौर्या, **महाराजगंज**–डॉ. रोहित प्रजापति, डॉ. रवि प्रताप प्रजापति, छोटु प्रजापति, अरुण प्रजापति, प्रमोद शर्मा, संध्या शर्मा, नीलेश प्रजापति, **मउ**–अशोक कुमार गोंड, **मउघोसी**–रामभजन चौहान, सुरेश चौहान, विजय सिंह चौहान, कमलेश सोनकर, पारस सोनकर। **गाजीपुर**– महेन्द्र सिंह, चन्द्र मोहन शुक्ला, शम्भू नाथ, दीपू, गोण्डा, नरेन्द्र कुमार, **आ.सि.सा. परिवार–देवरिया सुनौली के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन। आ.सि.सा. परिवार नेपाल, बुटवल के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन।**

## 16 अक्टूबर 2022

## बगलामुखी साधना शिविर

**शिविर स्थल :** गुरु जी मैरिज लॉन, निकट रेलवे क्रॉसिंग, ,

**राजारामगंज, बछरावां (रायबरेली)**

**मुख्य आयोजक–बछरावां**–अखिलेश वर्मा–9450742182, दिनेश वर्मा–9125436511, राजेश कुमार वर्मा–91254 01575, डॉ. विजय वर्मा–8299635941, शिवानी गुप्ता, उमेश वर्मा, अजय वर्मा, जितेन्द्र कुमार, सतीश गुप्ता, अभिषेक बाजपेई, बलराम सिंह बघेल, बेचालाल, महेश प्रसाद, केदार वर्मा, देव नारायण, सरवन कुमार, राहुल गुप्ता, ओ.पी. मास्टर, मानवेन्द्र सिंह, अजीत, सत्रोहन वर्मा, अजय भैरमपुर, वन्दना वर्मा, दिव्या सैनी, आशीष, शिवनारायण, श्रीग्रुप, राजा, नीशू, शनि, गुड्डू, अजयसिंह (गुरुजी मैरिज लॉन), लवकुश, अनुराग, दिलीप, मुन्ना, राजू, दिपेन्द्र पटेल, अनूप शर्मा, विष्णु, गोविंद, निम्मी शुक्ला, मनोरमा पाण्डे, केदार, आशीर्ष गोलू, अशोक पाल, **महाराजगंज**–संजय गुप्ता, सतीश प्रजापति, राजेश प्रजापति, रामकिशोर धुन्नी यादव, गणेश मिश्रा, मनोज सिंह, नन्दु विश्वकर्मा, ज्ञानेन्द्रसिंह, रामसुमिरन यादव, वंश बहादुर यादव, **रायबरेली**–मोहनलाल वर्मा, पुत्तु निखिल, ऊषा वर्मा, **लखनऊ** –अजय सिंह, संग्राम सिंह, सतीश टंडन, राकेश चन्द्र वर्मा, जयंत मिश्रा, डॉ. प्रवीन सिंह, **कानपुर**–महेन्द्र यादव, रामनिवास पाल, शैलेन्द्र सिंह, हरिनाम सिंह यादव, **बाराबंकी**–संदीप, राजन, किरनलता, विनीता वर्मा, महेश चन्द्र, रामहर्ष, अखिलेश वर्मा, **प्रतापगढ़**–सोहन वर्मा

## 17 अक्टूबर 2022

## माँ बागेश्वरी साधना शिविर

**शिविर स्थल :**

मैजेस्टिक पार्टी पैलेस, वडा पुलिस ऑफिस के पीछे, डी.एस.पी. रोड, फुल टेक्रा, **नेपालगंज (नेपाल)**

**मुख्य आयोजक**–कमला बिष्ट–9848183897, गिरेन्द्र शाही–9848046943, सुरेश न्यौपाने–9848035825, राधा शाह–98224 17747, पवित्रा थापा, अजीता पछाइ, डॉ. आशीष शुक्ला, कृष्ण बहादुर शाह, तीला भण्डारी, सुधा शाही, नवराज बी.सी., नरेश श्रेष्ठ, सरिता महरा, सीमा गौतम, लीला ज्ञवाली, ससीला शाह, भीम तिमील्सेना, नरकान्त जोशी, बुधराम चौधरी, तारा देवी ओली, तिलका के.सी., निर्मला बिष्ट, सूरज शुक्ला, धनु शाही, लक्ष्मण चौधरी, सीता उपाध्याय, शान्ता चन्द, तेक बहादुर थापा, बिन्दु सेन, माधव घिमिरे, उर्मीला गौतम, रवि श्रेष्ठ, जानुका बराल, **राजविराज**–घनश्याम दास श्रीमाली, पुनीता श्रीमाली, **निखिल शिष्य ग्रुप, काठमाण्डू**–अविनाश गुप्ता, रितेश कार्की, सुभाष कार्की, मेलिना बुढाठोकी, सम्झना श्रेष्ठ, कृष्ण श्रेष्ठ, **तुलसीपुर दांग**–विष्णु श्रेष्ठ, **बुटवल**–ज्ञानेश्वर वजिमय, महेन्द्र शर्मा, **लखनऊ**– अजय कुमार सिंह, नीलम सिंह, सतीश टण्डन, पंकज दुबे, डी.के. सिंह, जयन्त मिश्रा, सन्तोष सिंह (अनु), प्रदीप शुक्ला, **लखीमपुर खीरी**– चन्द्रकुमार रस्तोगी, बाबा सूरज दास,दास

## 30 अक्टूबर 2022

# स्वर्णाकर्षण भैरव साधना शिविर

**शिविर स्थल :**

सक्खर पैलेस, 153 अमितेश नगर, आईडीए स्कीम नं. 59, चोईथराम सब्जी मण्डी से पास, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

**आयोजक : सिद्धाश्रम साधक परिवार इन्दौर :** 9893333337, 9826686200, 9826067072, 8889116148, 9770647707, 9827747000, 9926751207, 9893440762, 9669655496, 9713002121, 7509472494, 9669666708, 8889226327, 9826033100, 9575386437

## 13 नवम्बर 2022

सर्वोन्नति प्रदायक

# सूर्यनारायण साधना शिविर

**शिविर स्थल :** नामधारी गार्डेन सीसमो होटल, कल्पना एसकोयर, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

आयोजक मण्डल - इन्द्रजीत राय - 8210257911, 9199409003, चैतन्य गुंजन योगी जी (भुवनेश्वर)-8144904640

## 7-8 नवम्बर 2022

# संन्यास दिवस महोत्सव साधना शिविर

**शिविर स्थल :**

इंडोर स्टेडियम पार्किंग ग्राउण्ड, बुढ़ातालाब, रायपुर (छ.ग.)

**आयोजक मण्डल छत्तीसगढ़**–जी.आर. घाटगे–9669901379, महेश देवांगन–9424128098, लकेश्वर चन्द्रा–9827492838, सेवा राम वर्मा–9977928379, संजय शर्मा–9111342100, दिनेश फुटान–8959140004, एन.के. कंवर–9644334011, दुष्यंत पटेल– 7089168600, लेखराम सेन–9826957606, हितेश ध्रुव–9826541021, सहदेव साहू–9893637680, प्रतापसिंह प्रधान–7566555111, डॉ. महेश्वरनाथ योगी–9993316290, जनक यादव–7987086097, टीका राम वर्मा–6261180440, महेन्द्र वर्मा–9406403210, दिलीप देवांगन–7000354515, राधेश्याम साहू–9131863005, समेलाल चौहान–7805906027, अजय पटेल–8839655810, पिताम्बर ध्रुव–9993242093, सियाराम बरेठ–9755836240, अजय साहू–9009579631, रामस्वरूप नागवंशी– 76975 81977, ज्ञानेश तुमरेकी–99071 02649, अशोक साहू– 9753292562, **जिला रायपुर**–चन्द्रप्रकाश स्वर्णकार– 9770218087, बृजमोहन साहू–7974012769, रविन्द्र कन्होले– 6261865178, पवन साहू–98271 82257, मारकण्डेय शर्मा, विजय यादव, दशरथ यादव–8959763666, मेहतरु यादव, बलदाउ सिन्हा, मीना देवदास, ममता सोनी, सविता प्रजापति, मुकेश छुरे, सुरेश निषाद, रामवतार निषाद, नंदकुमार यादव, टाकेश्वर साहू, भानमती वर्मा, देवान राम साहू, कमलेश चन्द्रवंशी, दुर्गा वर्मा, ज्ञानिक निखिल, उमाकांत साहू, राजेश सोनी, टीकाराम यादव, रवि साहू, वागेश चन्द्रा, दुर्गेन्द्र निषाद, अदिति नवरंग, ढालसिंह ध्रुव, विनोद यादव, रामकुमार वर्मा, गिरवर साहू, मूलचंद साहू, उत्तम साहू, ऋषि निषद, बी. श्रीनिवास, नानक साहू, जगदेव ध्रुव, संजू सोनकर, अश्विनी यादव, हेमलाल सोनकर, आनंद शुक्ला, प्रतिभा लहरी, लिलेश कुमार, आर्यन पटेल, निखिल वर्मा, चेतन निषाद, सुरेश साहू, गौकरण सिंह, संदीप प्रजापति, हरेन्द्र प्रजापति, पुनितेश्वर देवांगन, ज्ञानिक निषाद, दुर्गेश निषाद, टीकम यादव, भृगु यादव, लालजी यादव, सत्यवान महंत, रानी धीवर, उषा वर्मा, दुर्गा वर्मा, हितेश सेन, दिनेश साहू, गणेश हरपाल, कल्याणसिंह उइके, छलिया राम साहनी, गजेन्द्र सोनवानी, यशोदा यदु, **सेजबहार**–गोवर्धन यादव–9754596913, **सिलतरा**–धनीराम साहू, राकेश वर्मा, प्रेमलाल निर्मलकर, बंशीलाल साहू, विकास चन्द्रा, वंदना लहरी, यशोदा साहू, ईश्वर साहू, तिलक यादव, ढेलूराम वर्मा, नारद साहू, दिलीप यदु, रामशरण गिरी, **तिल्दा–नेवरा**–शैलेन्द्र वर्मा–97542 91554, शत्रुहन लाल वर्मा–9406405611, संतोष राव लाहने, राधिका वर्मा, पवन वर्मा, पल्लवी वर्मा, जागेश्वर पटेल, मालती वर्मा, मीना वर्मा, गौरव वर्मा, दीपक वर्मा, सोनम वर्मा, **छपोरा**–शत्रुहन वर्मा, **सिलयारी**–गज्जू वर्मा, **बलौदा बाजार**–लेखराम चन्द्राकर– 9926114722, अग्रहित धीवर– 9754664556, देवचरण केवट–8435112361, अग्रहित धीवर– 9754664556, दिनेश ठाकुर, उमेश्वरी चन्द्राकर, रामकुमार पटेल, मुरारी साहू, दिलीप साहू, उत्तम फेकर, केशव पटेल, टीकाराम वर्मा, पुरुषोत्तम यादव, जनक राम देवांगन, संजय वर्मा, देवनारायण वर्मा, बद्रीप्रसाद साहू, रथराम साहू, दामोदर प्रसाद तिवारी, बोधीराम आदित्य, लखनलाल सिदार, गिरधारी साहू, हुलास साहू, द्रोणाचार्य कन्नौजे, सियाराम पटेल, राजेन्द्र पटेल, मनोहर कन्नौजे, भगेलाराम केंवट, **भाटापारा**–पुरुषोत्तम कर्ष–9754251788, लक्ष्मीप्रसाद वर्मा–9009577151, निर्मला कर्ष, **महासमुंद**–खोमन कन्नौजे– 9993377750, रामेश्वर प्रसाद ठाकुर, विष्णु साहू, ओमप्रकाश पटेल, आचार्य देवनारायण, श्रीमती सरस्वती बिरकोनी, फटकन बाई साहू, सोनाराम निषाद, भवानी शंकर, कुंजलाल यादव, दीवारचंद भोई, नरेन्द्र साव, बंधीधर पटेल, डेहरी लाल पटेल, कमलेश साहू, **बसना–गरियाबंद**–शिवमूर्ति सिन्हा–7999343781, संतोष जैन– 7415537926, डॉ. कोमल सिन्हा, डेहर पटेल, केशव साहू, टीकमचंद, चंचल गायकवाड़, **धमतरी**–एन.सी. निराला–9329278047, संजीव तिवारी– 7898009665, सत्यनारायण मीनपाल, दिलीप मीनपाल, सालिक राम साहू, सरस सोनी, उत्तम देवांगन, नारायण देवांगन, अशोक साहू, मगरलोड–विषय लाल साहू–9770126672, गंभीर साहू, डी.आर दीवान–9340605060, टाकेश्वर साहू, जयंती कंवर, **दुर्ग**–विकेश वर्मा–7024791221, डिलेश्वर प्रसाद चन्द्राकर–8305656776, गौरव टंडन–8109849856, प्रेमलाल धनकर, श्रीमती तारा चंद्राकर, वंदना चक्रवर्ती, हरिशचन्द्र यादव, कुलेश्वर यादव, तेजराम देवांगन, डॉली देवदास, जितेन्द्र कुमार, खोमलाल, गिरीश टंडन, कु. लक्ष्मी **भिलाई**–यामिनी निखिल, खेदुराम देवांगन, स्वाती, संजय चंद्रवंशी, **राजनांदगांव**– बेनीराम गजेन्द्र–9407608711, भगवती प्रसाद देवांगन –6264377782, चेतन साहू–7771095317, संतोष देशमुख–9908184712, दिनेश यादव–7389045471, बी.ए. राजू, भावेश देवांगन–8770429644, कुलदीप साहू–87700 53592, दिनेश प्रजापति, नकुल सिन्हा, शारदा तुकरेकी, कांती साहू, चन्द्रकान्त रामटेके, सूर्या साहू, खिलेश्वर साहू, **खैरागढ़**–तेजेश्वर गौतम–9827950765, मुकेश देशमुख–91748 30776, गुप्तेश्वरी गौतम, गोवर्धन वर्मा–7089626903, जितेन्द्र वर्मा–9165993292, गणेश सिन्हा, पुखराम श्रीवास, **अम्बागढ़ चौकी**–गनपत नेताम–9406012157, कार्तिक राम कोमा, नन्दूराम धनेन्द्र, रेणुका महाला, मंगतूराम भरद्वाज, **छुरिया**–डॉ. भूषण आनंद–9399782421, **डोंगरगांव**–राज यदु–9893463106, यादो राम कोठारी, रामनारायण सोनवानी–9827413295, हेमंत साहू– 9179253555, संतोष चक्रधारी, डॉ. जितेन्द्र सिंह–9589445714, अशोक निषाद, **डोंगरगढ़**–कार्तिकराम साहू–7974982400, ज्योति भूधर साहू– 9407625706, **बालोद**–शिवकुमार

मरकाम-9424123804, डॉ. जगजीवन निषाद-9977026040, रमेश निषाद-6265568273, कौशल गजमल्ला- 9826935021, दिलीप साहू, भगवत राम साहू, **जांजगीर चांपा**-संतोष साहू-7999819021, जयचंद पटेल-7725007553, थानसिंह जायसवाल, वेद श्रीवास, रामचरण बरेठ, चित्रकुमार चन्द्रा, माता रानी सिदार, मुकेश टंडन, पदुम लाल निषाद, नरेन्द्र राठिया, गंगासागर कैवर्त, जागेन्द्र निर्मलकर, प्रहलाद कौशिक, रामकुमार राठौर, गुरुशरण चन्द्रा, नोबेल पटेल, **बेमेतरा**-श्री खूबीराम साहू, दिनेश साहू, रामचरण साहू, शत्रुहन साहू, मोती बिरझे, **बिलासपुर**-अनिल यादव- 9753191911, **दंतेवाड़ा**-सुश्री लक्ष्मी थामस, **अम्बिकापुर**-रामवृक्ष रामभगत, परमेश्वर, **कांकेर**-अनिता नागवंशी, राजेश्वरी नागवंशी, सांवली बाई नागवंशी, पंचुराम मण्डावी, टिकन कुमार नेवला, **जगदलपुर**-राधाकृष्ण कुशवाहा, संजीव जायसवाल, **कोरबा**-लक्ष्मी शोरी, **रायगढ़**-सुश्री देविका यादव

## 20 नवम्बर 2022

### माँ कामाख्या कृपायुक्त

## सम्पूर्ण मनोकामनापूर्ति साधना शिविर

### शिविर स्थल : कामाख्या धाम, रानी भवन, भुवनेश्वरी मंदिर रोड, कामाख्या - गुवाहाटी (आसाम)

**( कामाख्या मंदिर के पास )**

**मुख्य आयोजक** - इन्द्रजीत राय - 8210257911, 9199409003, सौरव दास गुप्ता 9932858697 (चितरंजन बंगाल), पवन दत्ता (असाम) 8638137805, अखिल दास (गुवाहाटी) 8638745438, प्रदीप बहराली - 9365116234 (गुवाहाटी), सरत बयान - 9957104992 (गुवाहाटी), नन्देश्वर निखिल गोगई (डिबुरूगढ़) 7002559865, तारा कुमार प्रधान, 9232749470, (गैंगटोक), प्रहलाद निखिल नाथ (माझुली) प्रहलाद मलिक 9678017965, बसंत बोरगोहैन-9954667650 (माकुम)। **आयोजक** - विपिन चन्द्र सैकिया, (लखिनपुर), दिना राय बोरा, योनेश्वर शर्मा, (नामरूप) खनद शैकिया, (रामरूप), ज्योति गोगई (माकुम), प्रलाद नाथ (मंझुली), विक्रम क्षेत्री (कोकराझार), मिंटी सोनेवाल (माकुम) मंजुदास (नहरकटियाँ), भवानी मागोर (आसाम), पदेन बरूमातेरी (होरैपोदर), **सिक्किम**-कमल बहेजल, निर्मल राय, राजेन्द्र क्षेत्री, विपिन प्रधान, जंगबाहदुर क्षेत्री, विशाल राणा, शोभा बहेजल (आसाम)। **आयोजक असाम ( नामरूप )** - देवजीत तमाली, परम बहादुर कोनवार, अरूण बोरगोहैन, धान प्रसाद शर्मा, प्रेम क्षेत्री हरे कृश्ण मुरारी (विराल), संजीत साहु (दालीजाल), भानु (दालीजाल) अजय क्रमकार (बुकाखाट), कैलाश साहु (नगाँव), विकास मगौर (माकुम), दिवाकार पहकान (बोकाखाट), अमर दत्ता (मोरान), नितुल बरगोहि (मोरान), गणेश थापा निशी बासुमतरी (गोसाई गाँव), कैलाश साहु (खेरानी) अ.सि.सा. परिवार। **जलपाईगुड़ी** - उषा क्षेत्री, अलीना क्षेत्री, बुनु थापा, सचीता विश्वा, शुकुलअुं भुटिया, वित्कांत शर्मा, सुनीता उराँव, बौबी विश्वा, शुभ्म दुराल, विपिन प्रधान, अ.सि.सा. परिवार। **श्रीमाली गाँव-गोरू व्यान कालिम्पोंग ( दार्जिलिंग )** - मनी कुमार राय, सुसान राय, विनोद कहालिंग, पवित्र थापा, भारती राय, विनीता राय, चन्द्र राय, कमल युजेल, काशी नाथ राय, नंद कुमार लिंबु, सुमित्रा लिंबु (संमसिग सिक्किम), विश्वजीत राय, सिदार्थ विश्वा।

राजेन्द्र वैष्णव (चितौड़गढ़) राजस्थान 9649350821, डी.के. पाण्डेय (सतना) मध्य प्रदेश, 9752419663, (नागपुर) वासुदेव ठाकरे, नागपुर, अक्षय इंगले सुरेश रवत्री (उज्जैन) रूपल छावड़ा (इंदौर), जगदीश मकवाना (धार मध्य प्रदेश), डॉ. पावार साहब (खलघाट), अजय जयसवाल (वाराणसी), अनुराग द्विवेदी, (बुढार मध्य प्रदेश), श्रीकांत चौधरी (यवतमाल)। शांतिलाल महतो, (धनबाद, झारखण्ड) देवेन्द्र कुमार बरबिगहा (बिहार), आदित्य जी (पुर्णिया बिहार), प्रेम लाल पासवान (मुजफ्फरपुर), बिहार, सतेन्द्र भारती (सिजुआ, झारखण्ड), अ.सि.सा. परिवार चितरंजन (बंगाल) के समस्त गुरू भाई बहन। सुभाष पटेल (बरही, मध्य प्रदेश), राकेश श्रीवास्तव (कटनी, मध्य प्रदेश), कमला विष्ट (नेपालगंज, नेपाल), धनश्याम श्रीमाली एवं पुनीता श्रीमाली (राजविराज, नेपाल), सुरेन्द्र राजवंशी - (विराट नगर, नेपाल), चैतन्य गुंजन योगी जी - (भुवनेश्वर), विरेन्द्र सिंह पुनिया (आगरा, उत्तर प्रदेश), गिरीश शर्मा, (दतिया, मध्य प्रदेश)।

## 27 नवम्बर 2022

### माँ कमलवासिनी

## कमला साधना शिविर

### शिविर स्थल : टी.आर.एफ.इनलॉप मैदान, जमशेदपुर, टाटा नगर (झारखण्ड)

**मुख्य आयोजक** - इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, निरज कुमार श्रीवास्तव-9234395840, मनोज कुमार-9572323810, आभा रानी एवं मोटई कुदादा - 9334276628, (राँची), अनुप चेल- 92344 78456 (बुण्डू), भुवनेश्वर प्रमाणिक-9771333701, (बुण्डू), अरूण मुण्डा-8863866106 (फुसरो), हरेन्द्र महतो-9801284131 (बोकारो थर्मल), सतेन्द्र भारती- 9122587187 (सिजुआ), प्रमोद साव- 9835393422 (गोमिया), विनोद माँझी एवं शांति देवी, (गुमला)। **टाटा नगर** - उमा शंकर सिन्हा, रामकृष्ण जी, सुनील सिंह, संजीव सिंह, निर्मल कुमार, वरूणदेव प्रसाद, प्रेमा दीदी, महेन्द्र लाल, सरिता जी, होरेन मंडल, उपेन्द्र सिंह, कालू सिंह, विश्वनाथ शर्मा, महेश प्रसाद, बिन्दु थापा, श्रीमती जया, अशोक मोहन दास, नाथे, राजीव श्रीवास्तव, भरत भूशन सेठी, कैलाश सिंह, श्रवन गुप्ता, राजू चावला, गुलसन चावला, विकास गुप्ता, पप्पू दुबे, भोला नाथ गुप्ता, संजीव कुमार, सुनील जी, रविन्द्र नाथ सिंह, रूद्र प्रताप सिंह, भरत मुण्डा, कर्ण निशाद, वरूण कुमार, मनोज कुमार, जीतेन्द्र गुप्ता। **घाटशीला** - नन्दलाल भूसाल, बी. एन. पाठक, गुरूवचन सिंह, दलवीर धारीवाल, आनन्द कुमार साव। **सरायकेला खरसांवा** - दीपक कुमार, श्याम शरण गोडसोरा। **चाईबासा** - डॉ. महेन्द्र बीरूली, लक्ष्मी बीरूली, जसमती गाड़ी, डॉ. बिरमु बिरूली, दीपक बिरूली। **बुण्डू** - सन्नत चेल, सपन चेल, विष्णु चरण सिन्हा, चैतन्य महतो, दीपक प्रजापति, रोशन शर्मा, मदनमोहन भगत, महेश साहू, मीणा देवी, अशोक ठाकुर, सत्यनारायण पाठक, अनुप रक्षित, सत्यप्रकाश भगत। **तमाड़** - सुरेश चन्द्र महाते, रमेश सिंह मुण्डा, भुतना बाबा, दिनेश प्रजापति। **अड़की** - प्रधान सिंह मुण्डा, सुखराम सिंह मुण्डा। **बोकारो** - रामाराय होनहागा, मोहन सिंह लामा, अरूण सिंह। **फुसरो** - दिनेश नायडू, मनोज स्वांसी। **धनबाद** - अरूण सिंह, कमलेश पाण्डेय, राम मनोज ठाकुर, ममता देवी। **राँची**- डॉ. आर.के. हाजरा, अमरेन्द्र कुमार सिंह, सी.एस. पाण्डेय, सुनीता बड़ाईक, लक्ष्मी मुर्मू, राम दास मुर्मू, संगीता देवी, अमरेन्द्र पाण्डेय। **गुमला** - राहुल राम, बिरबल भगत, जर्नाधन भगत, रामेश्वर बाघेल, बंधन महतो, अनिल पाण्डेय, बिनु महतो। **दुमका** - संदीप केवट। **बाघमारा** - श्याम किशोर सिंह, अशोक रवानी, संजय कुमार यादव, माधव बिहारी शर्मा। **सिजुआ**- जनेश्वर जी, सुदर्शन सिंह, अनुज कुमार सिन्हा। **बलियापुर धनबाद** - शांति लाल महतो।

## 11 दिसम्बर 2022

# विघ्नहर्ता गणपति साधना शिविर

**शिविर स्थल :**

संताजी सभागृह, बुधवारी बाजार,

क्रीड़ा चौक, **नागपुर (महाराष्ट्र)**

**आयोजक मण्डल नागपुर**-वासुदेव ठाकरे-9764662006, छत्रपालसिंह गौर-9284877283, देवेन्द्र काटेखाये-9075753889, आकाश गुप्ता-9284549716, वतन कोकास 9422114621, किशोर वैद्य-9371710599, चन्द्रकांत दोड-8379080867, शिवा गव्हाने-9325104080, गुलाबसिंह बैस, राजेश सोनुने-9823033719, गणेश भोयर, दुल्लुराज ऊईके-9422615423, नरेन्द्र काटेखाये, प्रेमसिंह बघेल-7798393630, श्रीकांत चौधरी-9822728916, संजयसिंह गहरवाल, उत्तमसिंह गहरवाल, भरतसिंह बैस, अशोक पाण्डे-917562321, श्यामलाल राम, पंकज घाटे-7620862677, विलास खांडरे, सुनिल आखाडे, नरेश गिरी, प्रवीण नागरकर, साईविलास बासनवार, अजय वांढरे, तुमनलाल वर्मा, घनश्याम दमाहे, मधुकर अंतुरकर, उज्ज्वल येरने, दिलीप गुल्हाने, संदीप पोहेकर, खुशाल कोरेकर, दीपक येण्डे, नन्दकिशोर भागवत, राजेश कोम्बे, कैलाश शेबे, रविन्द्र अवचार-9423468059, भास्कर कापडे, शाम दायमा, विष्णु जायले, विनायक देशमुख, चन्द्रकांत डुकरे, गजानन ठाकरे, आकाश बुरले, धीरज वाघाडे, हरीश अनावडे, राजेश बावने, अनिकेत ऊरकुडे, अर्पित कोटमकर, प्रविण झाडे, नेताजी कुनधाडकर, उत्तम पिपरे, पतिराम मडावी, अरविन्द पेद्दीवार, तिलकचन्द कापगते, अमित गुप्ता, रघुनाथ मोटधरे, चन्द्रकांत खंडाईत, डी. के. डोये-9226270872, संजय पिल्लारे, सुरेन्द्र लिल्हारे, कमल फरदे, नरेन्द्र बोम्परे-9406751186, संतोष परिहार, प्रेमकृष्ण गिरी 9673057661

## 17 दिसम्बर 2022

# स्वर्णाकर्षण भैरव साधना शिविर

**शिविर स्थल :** श्री सूरती मोढ़, वनिक वाड़ी, लाल दरवाजा मेन रोड, रेल्वे स्टेशन के पास, **सूरत (गुजरात)**

**आयोजक मण्डल सूरत**-विजय पटेल-9925104035, विवेक कापड़े-7984064374, तरंग पटेल- 9898965511, नीरज पटेल-9664562699, चेतन सिंह-9429411177, दीपेश गांधी -8866124000, नितिन प्रजापति-9726162728, दिव्येश, रेशमवाला-9374716532, धवल प्रजापति-9327396423, मोण्टू प्रजापति-9898075031, विक्की प्रजापति-9879793736, अमित प्रजापति-972656620, भौमिक प्रजापति, अनिल चौधरी, नीलेश पटेल (सायन), दिनेश पटेल (कोसम्बा), बहादुर भाई, रमेश कालरवाला, दिनेश मौर्या, सत्येन्द्र सिंह, सन्तोष भाई, सन्तोष डकुआ, रोहन प्रजापति, सुरेन्द्र चौरसिया, शंकर भाई (बारडोली)-8128304483, निराली पाटिल, प्रभु नारायण मिश्रा, शंकर भाई (बारडोली), बकुल भाई (बारडोली), गिरीश भावसर (बारडोली), अंकित प्रजापति, दिनेश कापड़े, भावेश प्रजापति, भगवानदास पाटनकर, सत्य महाराज

१. किसी को नीचा दिखाने की चाह या चेष्टा न करो, किसी की अवनति या पतन में प्रसन्न न होओ, न किसी की अवनति या पतन चाहो ही। किसी की निन्दा-चुगली, दोष-प्रकाशन न करो।

२. मान-प्रतिष्ठा के लिए त्याग का पाखण्ड मत करो। सच्चा त्याग करो। त्याग में भाव प्रधान है, बाहरी क्रिया नहीं।

३. मौन-साधना करो - परन्तु याद रखो, असली मौन तो मन का है। मन में विषय-चिन्तन बंद हो जाना चाहिए।

४. गिरे हुए, रोगी, प्रलोभन में पड़े हुए, विपत्तिग्रस्त और अपमानित नर-नारियों के साथ कभी दुर्व्यवहार मत करो। उनसे सहानुभूति का बर्ताव करो। उन्हें सच्चा सुखी बनाने की चेष्टा करो।

## 18 दिसम्बर 2022

# लक्ष्मी नारायण साधना शिविर

**शिविर स्थल :** गुरु नानक नेशनल, हाई स्कूल, 22/2 सायन सिंधी कॉलोनी, जैन सोसायटी, निअर गुरुकृपा हॉटल (2 मिनट की दूरी पर), सायन (पूर्व), **मुम्बई**

**आयोजक मण्डल** - तुलसी महतो-9967163865, डॉ. संतलाल पाल-9768076888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार - 9867621153, राहुल पाण्ड्या, डॉ. सतीश-7066098758, रवीन्द्र गायकवाड़-9920680113, रोहित शेट्टी, मनोज झा, राकेश तिवारी, मीना कावटे, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, सुनील उपाध्ये, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहन सैनी, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, एम.बी. रत्नाकर, श्रीनिवास, राम पलट, ज्योति आहूजा, शैलेश जोशी, अनिल कुंभारे, वीना सिंह, राधा पाल, मानव और पीयूष, अजय मंचेकर, गंगा, जिया, सीता और सोनू, सुनील उपाध्ये, सुनील साल्वी, प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, अनय सिंह, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, भावप्रसाद पांडे, सुरेश यादव, अरविंद अरोड़ा, विवेक पवार, ममता

शक्तिपातयुक्त दीक्षा

# कमला महाविद्या दीक्षा

यह आश्चर्य ही है कि कमला महाविद्या के नाम से तो सभी साधक परिचित होते हैं, परन्तु कमला महाविद्या की शक्ति से साधक प्रायः अनभिज्ञ ही हैं, और इसीलिए वे अन्य महाविद्या साधनाएं तो सम्पन्न करते हैं परन्तु कमला साधना की ओर ध्यान नहीं देते। सही अर्थों में कहा जाए तो कमला आदिशक्ति का वह स्वरुप है जो जीवन में अर्थ की अधिष्ठात्री देवी हैं।

दरिद्रता को जड़ से समाप्त कर धन<br>
का अक्षय स्रोत प्रदान करने में<br>
कमला दीक्षा अचूक है।<br>
इसके प्रभाव से व्यापार में चतुर्दिक वृद्धि होती है,<br>
बेरोजगार को रोजगार प्राप्त होता है,<br>
पदोन्नति होती है।

**महालक्ष्मी की साधना तो प्रत्येक व्यक्ति कर ही लेता है,<br>
परन्तु जो वास्तव में तंत्र के जानकार होते हैं,<br>
वे तो कमला दीक्षा लेते हैं।<br>
क्योंकि यह अपने आप में महाविद्या है, शक्ति स्वरूपा है,<br>
जिसके सामने दुर्भाग्य, दरिद्रता टिक ही नहीं सकती।**

**मंत्र**

।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।।

**योजना केवल 12, 13, 15 इन दिनों के लिए है**

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान', जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 September, 2022
Posting Date : 21-22 September, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

# माह : अक्टूबर एवं नवम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

| स्थान गुरुधाम (जोधपुर) | स्थान सिद्धाश्रम (दिल्ली) |
|---|---|
| 12 अक्टूबर | 05-06 अक्टूबर |
| 15 नवम्बर | 05-06 नवम्बर |

प्रेषक -
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2433209, 7960039